www.thearyasamaj.org

स्थापित:१८६७ई

ओ३म्

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

दयानन्दाब्द 192 वेद एवं मानव सृष्टि सम्वत् 1960853117
वर्ष 121 अंक 44 दिनांक : 01 नवम्बर, 2016 कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया

ऋषि-अंक

महर्षि दयानन्द बलिदान विशेषांक

युग प्रवर्तक
वेदोद्धारक
क्रान्तदर्शी
आर्य समाज के संस्थापक
महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती
के निर्वाण पर्व पर

देवेन्द्र पाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

www.thearyasamaj.org

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के यशस्वी प्रधान

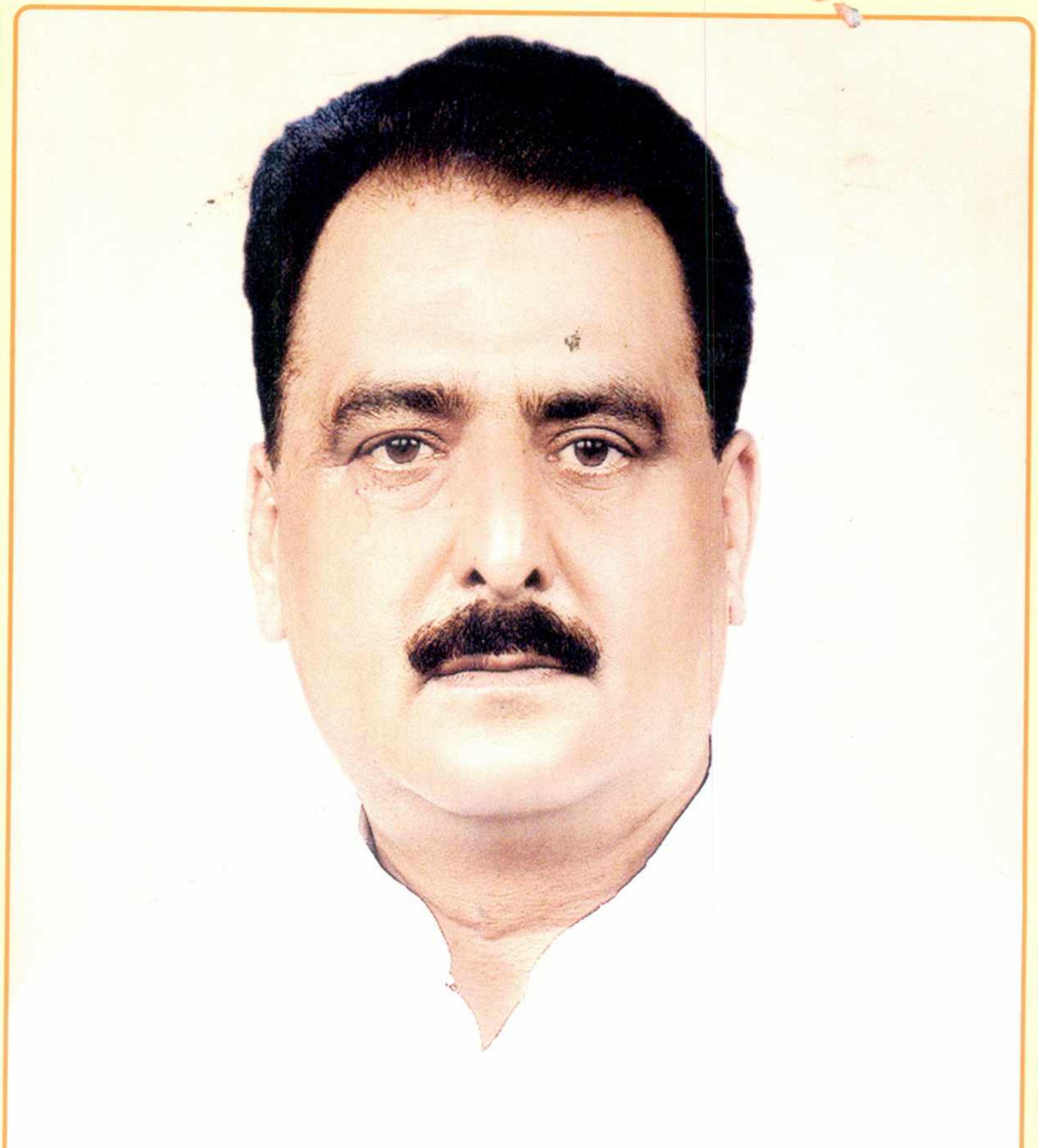

मा. देवेन्द्रपाल वर्मा

के कुशल नेतृत्व में महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों एवं समाज सुधारक कार्यक्रमों का निरन्तर प्रचार प्रसार हो रहा है

– सम्पादक

www.thearyasamaj.org

संस्थापित 1897 ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

कार्यालय : नारायण स्वामी भवन, 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

देवेन्द्रपाल वर्मा
संरक्षक / प्रधान

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री / प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

आर्य शिवशंकर वैश्य
कार्यकारी सम्पादक

पत्रांक.......................

वेदामृतम्

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि, चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां, स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नम्।।

ऋग् २.२१.६

(इन्द्र) हे ऐश्वर्यशाली परमेश्वर ! (अस्मे) हमें (श्रेष्ठानि) श्रेष्ठ (द्रविणानि) धन, (दक्षस्य) दक्षता एवं बल की (चित्तिं) ख्याति, (सुभगत्वम्) सौभाग्य, (रयीणाम्) ऐश्वर्यो की (पोषं) पुष्टि, (तनूनां) शरीरो की (अरिष्टिं) नीरोगता एवं अक्षीणता, (वाचः) वाणी की (स्वाद्मानं) मधुरता और (अह्नां) दिनों की (सुदिनत्वं) सुदिनता (धेहि) प्रदान कर।

हे इन्द्र प्रभु ! तुम अपार ऐश्वर्य के अधिपति हो, मुझे भी ऐश्वर्य प्रदान करो। तुम मुझे प्रचुर धन-सम्पत्ति का राजा बना दो। पर यह प्रार्थना तो अधूरी है, क्या ऐसे उदाहरण संसार में नहीं हैं कि अनेकों व्यक्ति धन पाकर बर्बाद हो गये। अतः सही प्रार्थना मुझे यह करनी चाहिए कि तुम मुझे श्रेष्ठ धन दो। मेरा धन श्रेष्ठ होगा तो वह मुझे पतनोन्मुख नहीं, अपितु उन्नतिशील बनाने में सहायक होगा। किन्तु अकेले धन से मैं जीवन में सफल नहीं हो सकता, धन के साथ दक्षता भी आवश्यक है। बिना दक्षता और बल के न मैं धन की रक्षा कर सकूँगा, न उसका सत्कार्यो में उपयोग ही कर सकूँगा। अतः मुझे दक्षता और बल की ख्याति भी प्रदान करो। तुम मुझे सौभाग्यशाली भी बनाओ, सब ओर से विपदाओं का मारा हुआ, सर्वत्र ठोकरें खाने वाला भाग्यहीन न बनाकर ऐसा बनाओ कि दुर्भाग्य मेरी सम्पदा से ईर्ष्या करे। तुम मुझे ऐश्वर्यो की पुष्टि भी प्रदान करो। मेरा ऐश्वर्य दिन-प्रतिदिन बढ़ता चले। अन्यथा यदि मेरा प्राप्त ऐश्वर्य दिन-दूना बढ़ेगा नहीं तो मैं करोड़ों का भी सम्राट् क्यों न हो जाऊँ, एक दिन फिर दरिद्र हो जाऊँगा। परन्तु बाह्य ऐश्वर्यों के अतिरिक्त एक आन्तरिक ऐश्वर्य भी है, जो ऐश्वर्यो का ऐश्वर्य है।मेरा यह आध्यात्मिक ऐश्वर्य भी वृद्धिशील हो। इसके अतिरिक्त मैं तुमसे शरीर की नीरोगता और अक्षीणता भी माँगता हूँ, क्योंकि यदि मेरा शरीर रोगग्रस्त और दुर्बल रहेगा तो मैं क्या धर्म-कर्म कर सकूँगा और क्या ही विपद्ग्रस्तों की सहायता कर सकूँगा। साथ ही हे मेरे इन्द्र प्रभु ! तुम मुझे 'वाणी की मधुरता' भी दो। वाणी की कटुता ने संसार में बड़े-बड़े अनर्थ उत्पन्न किए हैं, अतः मेरी वाणी को तुम कटुता से बचाओ। मेरी वाणी को तुम प्यारी, सत्यमयी और मिश्री-धुली बना दो। अन्त में एक प्रार्थना यह है कि मुझे 'दिनों की सुदिनता' के दर्शन कराओ। मेरे जीवन का प्रत्येक दिन शिव, सुन्दर आह्लादमय, प्रीतिदायक, सुखवर्धक और उत्साहप्रद हो। मेरे राष्ट्र का प्रत्येक दिन गौरवमय और विजय के उल्लास से परिपूर्ण हो।

आफिस दूरभाष : 0522-2286328 ई-मेल-apsabhaup86@gmail.com

www.thearyasamaj.org

संस्थापित 1886 ई0
पंजीकरण तिथि 5 जनवरी, 1897

ओ३म्

✆ : 0522-2286328

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

श्री नारायण स्वामी भवन, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ-226001
ई-मेल-apsabhaup86@gmail.com

पत्रांक : ....

दिनांक : 26.10.2016

शुभ कामना सन्देश

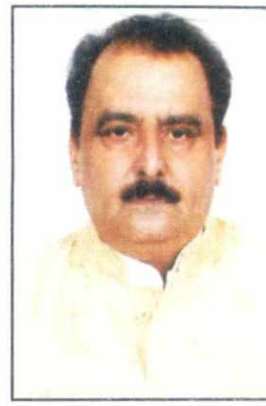

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि दीपावली पर्व पर 'आर्य मित्र' अपना विशेषांक 'ऋषि बलिदान दिवस' के रूप में प्रकाशित कर रहा है। पत्र-पत्रिकायें किसी भी समाज की विशेष रूप से उसके कार्यों की दर्पण होती है और विशेषांक तो विशेष रूप से उस समाज की विशेष घटनाओं से समाज का परिचय करता है। विशेषांक की ग्राह्यता समाज में अधिक होती है इसलिए उसमें प्रकाशित रचनाओं के दूरगामी परिणाम भी होते हैं। इसलिए मैं चाहूँगा कि आर्य मित्र का यह विशेषांक समाज में महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी सुधारों का दर्पण हो, उनके देशहित व समाजहित में हुए बलिदान का साक्षी बनकर समाज को कुरीतियों से दूर करने का माध्यम बने।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस संसार का उपकार करते हुए अपने प्राणों की बलि दे दी। उनका सम्पूर्ण जीवन समाज में धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक सुधारों को समर्पित रहा। वे दूर दृष्टा ऋषि, सन्यासी व देश भक्त थे। स्वाधीनता व स्वदेशी आन्दोलन उन्ही की देन है। समाज में स्त्रियों को समान अधिकार दिलाने व उन्हें शिक्षित करने का आन्दोलन, जाति-पांति विरोधी आन्दोलन, दलित उद्धार आन्दोलन, छुआ-छूत समाप्ति आन्दोलन, सती प्रथा समाप्ति आन्दोलन, बाल-विवाह समाप्ति आन्दोलन, विधवा पुनर्विवाह आन्दोलन, शुद्धि आन्दोलन, हिन्दी आन्दोलन आदि अनेकों आन्दोलनों के माध्यम से समाज में फैली बहुत सी कुरीतियों व बुराईयों को उन्होंने समाप्त कराया। धर्म के नाम पर समाज में हो रहे अत्याचारों, आडम्बरों, पाखण्डों का उन्होंने घोर विरोध किया। समाज में फैली व गहरी जड़ें जमा चुकी, जड़ पूजा व मूर्ति पूजा को उन्होंने वेद विरूद्ध बताया, बताया ही नहीं अपितु वेद मंत्रों से इसे सिद्ध भी किया।

अपने मन्तव्यों को पूरा करने के लिए तथा समाज सुधार के कार्यों को लगातार जारी रखने के लिए उन्होंने एक क्रान्तिकारी व सुधारवादी संगठन 'आर्य समाज' की स्थापना की जिसका उद्देश्य समाज में फैले विभिन्न प्रकार के पाखण्डों, मत-मतान्तरों, कुरीतियों व मूर्ति पूजा जैसे अन्ध विश्वासों को दूर करके समाज के लिए शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करना बताया तथा स्वयं उन्हीं कुरीतियों से लड़ते हुए जब महाराजा जोधपुर को उन्होंने सत्य का मार्ग दिखाया तथा महाराजा ने स्वामी जी की शिक्षा से प्रभावित होकर अपनी अति प्रिय नन्हींजान नामकी वैश्या का त्याग किया तो नन्हीजान स्वामी जी से अत्यधिक नाराज हो गयी तथा उसने षड़यन्त्र करके स्वामी जी के रसोईये से मिलकर स्वामी जी को दूध में पिसा कांच व जहर मिलाकर पिलवा दिया जिससे दीपावली की सन्ध्या के समय मानव जाति को सत्य के प्रकाश से भरने वाला यह सन्यासी शहीद हो गया।

स्वामी जी का बलिदान हम सब के लिए, विशेष रूप से आर्यों के लिए प्रेरणा श्रोत है। हमें उनके बलिदान को बेकार नहीं जाने देना है। उनके समाज सुधार आन्दोलन व समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरूद्ध सतत् संघर्ष शील रहना है। इस विशेषांक में भी हमारे सुधार आन्दोलन व कुरीतियों के विरूद्ध आन्दोलन की झलक दिखाई पड़नी चाहिये, ऐसी मेरी इच्छा है।

मैं आर्य मित्र 'ऋष्यंक' के सफल प्रकाशन पर सम्पादक-आचार्य वेदव्रत अवस्थी, कार्यकारी सम्पादक आर्य शिवशंकर वैश्य व डॉ. भानु प्रकाश आर्य-प्रतिष्ठित सदस्य एवं श्री विमल किशोर आर्य को विशेष सहयोग प्रदान करने के लिए धन्यवाद देता हूँ।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., लखनऊ

www.thearyasamaj.org

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH

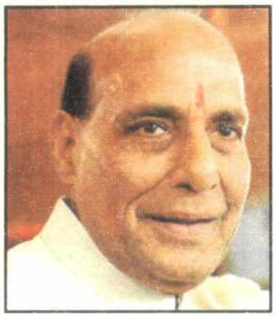

सत्यमेव जयते

गृह मंत्री
भारत
नई दिल्ली-110001
HOME MINISTER
INDIA
NEW DELHI

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ द्वारा अपने मुख पत्र "आर्य मित्र" के 120 वर्ष की पूर्णावधि पर दिनांक 01 नवम्बर, 2016 को "दयानन्द बलिदान दिवस" नामक विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

मैं विशेषांक से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इसके सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ

शुभकामनाओं सहित।

(राजनाथ सिंह)

सेवा में,
देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान / संरक्षक,
आर्यमित्र साप्ताहिक
5 मीराबाई मार्ग,
लखनऊ

Office: Room No. 104, Ministry of Home Affairs, North Block, New Delhi-110 001
Tel.: 23092462, 23094686 Fax : 23092979
E-mail : 38ashokroad@gmail.com

www.thearyasamaj.org

संस्थापित 1886 ई0
पंजीकरण तिथि 5 जनवरी, 1897

ओ३म्

✆ : 0522-2286328

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

श्री नारायण स्वामी भवन, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ-226001
ई-मेल-apsabhaup86@gmail.com

पत्रांक : ....

दिनांक : 28.10.2016

शुभ कामना सन्देश

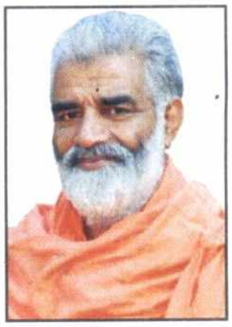

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बलिदान दिवस पर आर्य मित्र का विशेषांक निकल रहा है इस बात में सभी आर्यजनों को विशेष प्रसन्नता हो रही है क्योंकि हमारे मानस पटल पर उनका दिव्य प्रभाव अमिट स्वरूप में प्रतिष्ठित है। दीपावली के पावन पर्व पर उनका स्मरण करना हमारे लिए हर्ष एवं गौरव की बात है क्योंकि उन्होंने अपने दिव्य जीवन रूपी दीपक से हजारों बुझे दीपक प्रज्वलित किये। अज्ञान अन्याय अभाव, आलस्य रूपी शत्रुओं को परास्त करके ज्ञान-न्याय-स्मृति पुरूषार्थ करने का अधिकार प्राप्त कर हम अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के अधिकारी बनें। ईश भक्ति पितृ-मातृ भक्ति, आचार्य भक्ति, देश भक्ति का पाठ पढ़ाकर हमें गुरूडम से दूर किया और प्रभु भक्ति का सच्चा मार्ग दिखाया। हम जड़ पूजा छोड़ कर सच्चे आस्तिक बनने के अधिकारी बनें। आपके द्वारा ही नारी जाति को सम्मान मिला। दलित लोगों को वेद पढ़ने का अधिकार मिला। आज मातृ शक्ति में जागृति, आपके द्वारा प्राप्त हुई। नव जागरूकता का प्रतीक है। गौरक्षा आन्दोलन के प्रणेता हमें जगाते रहे। कुरीतियों के उन्मूलन के लिए आपका सदैव समर्पण रहा।

अतः महर्षि दयानन्द सरस्वती को स्मरण करके उनके प्रति अपनी कृतज्ञता को ज्ञापित करते हैं। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की ओर से साथ ही विशेषांक प्रकाशन के लिए शुभ कामनायें प्रेषित करता हूँ।

-धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.
संचालक-गुरूकुल पूठ, हापुड़

संस्थापित 1886 ई0
पंजीकरण तिथि 5 जनवरी, 1897

ओ३म्

✆ : 0522-2286328

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

श्री नारायण स्वामी भवन, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ-226001
ई-मेल-apsabhaup86@gmail.com

पत्रांक : ....

दिनांक : 27-10-2016

शुभ कामना सन्देश

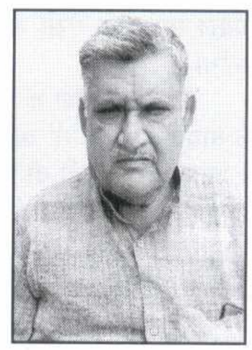

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के 133वें बलिदान दिवस के अवसर पर "आर्य मित्र" साप्ताहिक द्वारा बलिदान विशेषांक के सफल प्रकाश हेतु हार्दिक शुभ कामनाएँ अर्पित करता हूँ

इस ज्योति पर्व (दीपावली) के ही दिन आज की तिथि को सारे संसार को वेद रूपी ज्ञान का प्रकाश देने वाले महर्षि दयानन्द का निर्वाण महत्वपूर्ण है तथा उनकी शिक्षायें अनुकरणीय हैं।

-अरविन्द कुमार
कोषाध्यक्ष
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

www.thearyasamaj.org

सांसद (लोक सभा)
बागपत, उत्तर प्रदेश
पूर्व पुलिस आयुक्त, मुम्बई

सत्यमेव जयते
डॉ. सत्यपाल सिंह
Dr. SATYAPAL SINGH

Member of Parliament (Lok Sabha)
Baghpat, Uttar Pradesh
Ex. Commissioner of Police, Mumbai

Date: 18.10.2016

शुभ संदेश

आधुनिक भारत को सबसे पहले राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाने वाले, विदेशी साम्राज्य के विरूद्ध स्वराज का मंत्र देने वाले, जातिवाद के जहर को खत्म करने, धर्म के नाम पर फैले हुये पाखण्ड, अंधविश्वास व कुरीतियों पर कुठाराघात करने वाले, पिछड़े एवं अछूतों को गले लगाकर उन्हें आर्य बनाने वाले, बालिकाओं की शिक्षा को भी बालक जितना अनिवार्य बताने वाले, विधवाओं के पुनर्विवाह की वकालत करने वाले एवं वेद विद्या के पुनरुद्धारक, वेद शास्त्रों की शिक्षा स्त्री-पुरुष, ऊँच-नीच सभी जाति और मजहबों के लिये हैं- इस घोषणा को वेद प्रतिपादित करने वाले गुजरात की टंकारा की धरती को अपने जन्म से हमेशा के लिये श्रद्धेय एवं ऐतिहासिक बनाने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम इस देश के इतिहास में अप्रतिम है। आधुनिक भारत के इतिहास में वह पहले समाज सुधारक थे जिन्होंने ऋषियों की आर्ष परम्परा को पुनर्जीवित किया, अपने नाम से किसी भी सम्प्रदाय को न चला कर उन्होंने समाज सुधार व विश्व कल्याण के लिये आर्य समाज की स्थापना की। विश्व में आर्य समाज ही केवल मात्र एक ऐसी संस्था है जिसका उद्देश्य संसार का उपकार करना है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना।

वे इस देश के सबसे पहले महापुरुष थे जिन्होंने अपनी मातृ भाषा गुजराती होते हुये तथा संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान होने के बावजूद भी हिन्दी को अपने लेखन और प्रचार की भाषा बनाया। उन्होंने हिन्दी को आर्य भाषा का नाम दिया। अंग्रेजों के काल में शाहपुर व दूसरी दो रियासतों में उसको राज भाषा बनवाया। उन्होंने सबसे पहले लिखा कि आर्य इस देश के मूल निवासी हैं और इस देश का प्राचीनतम नाम आर्यवर्त है। भारत की संस्कृति विश्ववारा है। महर्षि दयानन्द के महान शिष्यों में स्वामी श्रद्धानन्द, महादेव गोविन्द रानाडे, महात्मा ज्योतिबा फूले, पण्डित गुरुदत्त, महात्मा हंसराज, लाला लाजपत राय, पण्डित लेखराम, योगी अरविन्दो घोष, पण्डित नरेन्द्र, स्वामी स्वतंत्रतानन्द, पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक़ उल्लाह खान, सरदार भगत सिंह, प्रभृति हजारों आर्य समाजियों ने इस देश की आज़ादी के आन्दोलन में बढ़ चढ़कर भाग लिया। उन्हीं की प्रेरणा से प्राचीन गुरुकुल परम्परा का स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) में श्रीगणेश किया। उन्हीं के उपदेश से डी०ए०वी० विद्यालय बनाये गये, सैकड़ों लड़कियों के स्कूल खोले गये। पुनः वेद विद्या का प्रचार आरम्भ हुआ। इस देश के प्राचीन गौरव को वेद प्रतिष्ठित विद्या को अपनाकर ही पुनः प्रतिष्ठापित किया जा सकता है।

उस महान वेद विद्वान, स्वतंत्रता का बिगुल फूंकने वाले, पिछड़ों को गले लगाने वाले महापुरुष को जो सम्मान मिलना चाहिये था, वह इस देश में नहीं मिल पाया। अगर महात्मा गांधी इस देश के राष्ट्रपिता हैं तो महर्षि दयानन्द इस देश के राष्ट्र पितामह हैं। हम सभी आर्यो को महर्षि का कर्ज उतारने के लिये, देश के पिछड़ों के सम्मान के लिये, मातृ शक्ति की प्रतिष्ठा के लिये, हजारों क्रांतिकारियों की याद में उस महापुरुष के विचारों को भावी पीढ़ी को मार्गदर्शन देने के लिये विशेष संकल्प लेना चाहिये- महर्षि दयानन्द का बलिदान भी - इस संसार को छोड़ते समय भी अलभ्य क्षमा दान का उदाहरण प्रस्तुत करता है। अगर ऋषि न आये होते - तो शायद अपने को 'हिन्दू' कहने वाले करोड़ों लोग समाज व धर्म के किस रसातल पर पहुँचते, उनकी विरासत व संस्कृति का नाम मिटकर आज संभवतः भारत या हिन्दुस्तान का नाम ही विश्व पटल से मिट जाता।

ओ अंकारा की ज्वलित ज्योति, तू कभी न बुझने पायेगी।
आलोकित है जगती यह तुझसे, सदा प्रेरणा पायेगी।।

भवदीय,

14/10/2016
(डॉ० सत्य पाल सिंह)

सेवा में,
देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान / संरक्षक,
आर्यमित्र साप्ताहिक
5 मीराबाई मार्ग,
लखनऊ

www.thearyasamaj.org

भगवानदीन आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

लखीमपुर-खीरी (उ.प्र., पिन-262 701)

पत्रांक...............   दिनांक 15-10-2016

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यन्त हर्ष है कि 'आर्य मित्र' की स्थापना के १२० वर्ष पूरे होने पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ, महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस पर विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है। सम्पूर्ण भारत वर्ष के लिए यह गौरव की विषयवस्तु होगी।

यह निर्विवाद सत्य है कि आधुनिक भारत के निर्माण में महर्षि दयानन्द व उनके द्वारा प्रवर्तित आर्य समाज की महती भूमिका है। स्वधर्म, स्वभाषा तथा स्वराज्य के पक्षधर स्वामी दयानन्द ने भारतीय समाज को अंधविश्वास कूपमण्डूकता तथा संकीर्ण विचारों से ऊपर उठाया और भारतीय धर्म और संस्कृति की श्रेष्ठता से न केवल उन्हें अवगत कराया वरन पाश्चात्य समाज के सम्मुख उसकी वैज्ञानिकता और श्रेष्ठता को प्रदर्शित किया। उनका नारा था वेदों की ओर लौटो और देखों ज्ञान का विराट आलोक हमारे चारो ओर है- आवश्यकता है उसे समझने की। इतना ही नहीं, प्राचीन ज्ञान का पुनर्प्रकाश करते हुए उन्होंने भारतीयों के खोये हुए विश्वास को पुनर्प्रतिष्ठित करने का गुरुतर कार्य किया। शिक्षा का पुनर्गठन करते हुए समाज के स्वस्थ और संतुलित विकास के लिए स्त्रीशिक्षा को उन्होंने अत्यन्त आवश्यक बताया। उनकी प्रेरणा से न जाने कितनी आर्यकन्या शिक्षा संस्थाएँ खोली गई तथा डी०ए०वी० कालेजों की स्थापना हुई। इन शिक्षण संस्थाओं द्वारा भारत में तेजी के साथ शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया गया। आर्य समाजों ने कुशलतापूर्वक इनका संचालन किया।

महर्षिदयानंद और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने एक वैज्ञानिक, तार्किक व प्रगतिशील भारतीय समाज का स्वप्न देखा था। स्वतंत्रता के पश्चात यह स्वप्न साकार भी हुआ। विकास और सर्वतोमुखी उन्नति के मार्ग पर चलते हुए आर्य समाज और आर्य संस्थाएँ निरंतर अग्रसर हों, परमात्मा से यही प्रार्थना है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाजों व आर्य संस्थाओं को जोड़ने का अभूतपूर्व कार्य करती रही है। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। लखीमपुर आर्य समाज-आपके सद्प्रयास की सराहना करता है तथा अपना सहयोग प्रदान करते हुए विशेषांक के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएँ अर्पित करता है।

सद्भावी

(सुशील कुमार अग्रवाल)
अध्यक्ष-प्रबन्ध समिति
भ०आ०स्ना०महा०, लखीमपुर-खीरी

सेवा में,
देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान / संरक्षक,
आर्यमित्र साप्ताहिक
5 मीराबाई मार्ग,
लखनऊ

www.thearyasamaj.org

सारे संसार को आर्य बनाना हमारा लक्ष्य

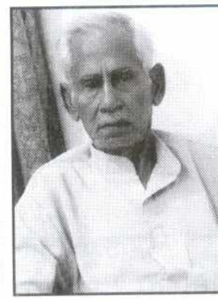

महर्षि दयानन्द सरस्वती का १३३वाँ निर्वाण (बलिदान) दिवस इस वर्ष ३० अक्टूबर, २०१६ कार्तिक अमावस्या सम्वत् २०७३ को है। प्रतिवर्ष सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति के पोषक घरों में कार्तिक कृष्ण अमावस्या को दीपमालिका का उत्सव बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। वर्ष १८८३ को इसी दीपमालिका की संध्या को राष्ट्रनायक महर्षि दयानन्द सरस्वती के नश्वर शरीर की ज्योति बुझ गयी थी परन्तु उस ज्योति ने बुझते बुझते श्री गुरुदत्त विद्यार्थी प्रभृत्ति अनेकों के अन्दर ज्योतिर्मय प्रकाश फैलाया था।

महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव पराधीन भारत में हुआ था। जब मानवता कराह रही थी, अज्ञान अन्धकार, गुरूडम पाखड नारी तिरस्कार उसका शोषण नशेबाजी सारे राष्ट्र को विश्रृंखलित कर रही थी। ऋषि मूल शंकर के नाम से गुजरातके तत्कालीन काठियावाड़ के मौरवी राज्य के टंकारा ग्राम में औदीच्य ब्राह्मण कर्षन जी तिवारी के पुत्र के रूप में जन्म लिया था। सच्चे शिव की प्राप्ति, जीवन मरण के रहस्य को जानने के लिए वे माता पिता, घर द्वार, धन सम्पदा सभी कुछ छोड़कर जंगल-वन, पर्वत पर सच्चे गुरू की खोज में काफी भटके परन्तु जिन खोजा तिन पाइयां की उक्ति के अनुसार अन्ततः मथुरा में प्रज्ञाचक्षु गुरू विरजानन्द दण्डी को उन्होंने पा ही लिया। गुरू विरजा नन्द व्याकरण वेद वेदांग के विद्वान थे, देश की पराधीनता से उद्विग्न थे उनके अन्दर उससे देश को मुक्त कराने के लिए तड़पन थी मूल शंकर पहले ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य फिर सन्यासी दयानन्द बने थे। दयानन्द नाम से ही वे गुरू विरजा नन्द के चरणों में अनुशासित शिष्य के रूप में विद्यार्जन किया वेद का मर्म जाना शिक्षा समाप्ति पर गुरूदक्षिणा के रूप में गुरूदेव ने उनका सारा जीवन राष्ट्र कल्याण के लिए मांग लिया। दयानन्द जी ने उनकी आज्ञा शिरोधार्य की और राष्ट्र कल्याण के यज्ञ में होता बनकर जुट गये।

देश की पराधीनता और देश में फैले नाना पाखण्डों, ढोंग व नारी शोषण आदि पर कठिन प्रहार किया। स्वाधीनता की भावना जन जन में जगाई उनके इस समाज सुधार के कार्य से तथाकथित पण्डितों को अपनी रोजी रोटी जाती नजर आने लगी अतः उन लोगों में ऋषि दयानन्द को विदेशी एजेन्ट कह कर जनता को भटकाना प्रारम्भ किया परन्तु बुद्धिजीवी जन मानस में दयानन्द जी के उज्ज्वल चरित्र और चिन्तन से जागृति आने लगी। उनके कई हितैषी विद्वानों ने उन्हें कहा कि तुम तो इसी जन्म में मोक्ष पा सकते हो क्यों दुनियां के सुधार के नाम पर भटक रहे हो। ऋषि ने उत्तर दिया कि मैं अपने साथ सभी को मोक्ष प्राप्त कराना अपना धर्म बनाकर चल रहा हूँ। अकेला मोक्ष नहीं पाना चाहता, सभी के साथ मोक्ष की प्राप्ति का अभिलाषी हूँ।

उन्होंने समाज सुधार के लिए आर्य समाज की स्थापना की और उसे आन्दोलन नाम दिया। आन्दोलन तीव्रगति से चला समाज ने करवट ली, बुराइयाँ पाखण्ड मिटने लगे। इससे धूर्त पाखण्डी पण्डितों को अपनी रोजी-रोटी पर आंच आती दिखी। फलतः उन लोगों ने उन्हें रास्ते से हटाने के लिए अनेकों बार जहर दिया। कई प्राण घातक आक्रमण किये। परन्तु स्वामी जी ने अपना लक्ष्य नहीं छोड़ा। अन्ततः वर्ष १८८३ की दीपावली की शाम प्राण घातक विष के प्रभाव से उनका नश्वर शरीर छूट ही गया-जाते-जाते उन्होंने गुरू दत्त विद्यार्थी जैसे अनेकों नास्तिकों को आस्तिक बनाया उनकी स्वराज्य की परिकल्पना रंग लायी। स्वराज्य आंदोलन चला जिसमें ८५ प्रतिशत आर्यो ने भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया। देश स्वतंत्र हुआ। अपना संविधान बना जिसमें प्रच्छन्न रूप में महर्षि के सभी सिद्धान्त समाहित हुये।

आजादी के बाद सत्ता जिन हाथों में आयी वे अंग्रेजी शिक्षा से ही निष्णात थे अतः उन्होंने अंग्रेजियत के सहारे राष्ट्र को समुन्नत बनाने का लक्ष्य बना रखा था। आजादी के बाद आर्यो ने शायद अपना लक्ष्य पूरा मान लिया फलतः उनमें देशोत्थान के लक्ष्य से भटकन सी आने लगी। पराधीनता के काल में जो बुराइयां फैली थीं वे नये नये रूप में फैलने लगी।

आज ढोंग पाखण्ड, जाति पांति नारी शोषण का स्वरूप नये रूप में राष्ट्र को विच्छृंखलित कर रहा है। बेटियां खूब डिग्रियां पा रहीं है, ऊंचे ऊंचे पदों पर बैठ रही हैं। परन्तु नैतिकता उत्तरोत्तर घटती जा रही है। आज जन जन में स्वार्थ पूर्ति की आग धधक रही है। जातिवाद को राजनीतिक पार्टियां अपना वोट बैंक बनाने के लिए बढ़ा रही हैं। नशे का सेवन स्वच्छंदता से बढ़ रहा है। वोट बैंक बनाने के लिए सभी राजनीतिक दल मुफ्त में शराब व अन्य नशे बांट कर युवा पीढ़ी को पथ भ्रष्ट बना रहे हैं। नारी को केवल भोग की सामग्री माना जा रहा है। छोटी छोटी बेटियां इसकी शिकार बन रही हैं। उनके साथ सामूहिक व्यभिचार भी हो रहा है, उनकी हत्यायें हो रही हैं। परन्तु सरकारी तन्त्र उसको रोक पाने का कोई मार्ग नहीं तलाश पा रहा है। ऐसे विकराल काल में आर्यो को जागृत होकर समाज को बुराइयों से मुक्त बनाने और स्वस्थ सुखी संपन्न राष्ट्र बनाने के लिए अपने अन्दर आर्यत्व की अग्नि को तीव्रता से जगाकर आर्य समाज आदोलन को तीव्र बनाना होगा। पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को अनिवार्य बनाने के लिए सरकार पर दबाव बनाना होगा।

आइये आज ऋषि निर्वाण पर्व पर हम सभी आर्य महर्षि दयानन्द के स्वप्नो का भारत बनाने का संकल्प लें और 'मनसा वाचा कर्मणा' आर्य बनकर आर्य समाज आन्दोलन को तीव्रगति से चलाने में लग जायें। निश्चय ही हमारे इस संगठित उद्योग से प्रदेश की सभी बुराइयां नष्ट होंगी। जनजन में भ्रातृत्व बढ़ेगा और हमारा राष्ट्र विश्व में सर्वोच्च शिखर पर अपना स्थान संस्थापित करने में समर्थ होगा।

-आचार्य वेदव्रत अवस्थी, सम्पादक

www.thearyasamaj.org

दीपावली विशेषांक
ऋषि-अंक

संस्थापित 1897 ई.

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

कार्यालय : 'नारायण स्वामी भवन', 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

पत्रांक......................   दिनांक 28.10.2016

"गुरुदक्षिणा"

-आर्य शिवशंकर वैश्य, कार्यकारी सम्पादक

महर्षि स्वामी दयानन्द जी की टंकारा से शुरू की गई सच्चे शिव की खोज रूपी यात्रा मथुरा में दण्डी स्वामी गुरू विरजानन्द के चरणों में आकर पूरी हुई। गुरु दक्षिणा के रूप में गुरु ने देश का उपकार, सत्य शास्त्रों का उद्धार, मतों की अविद्या को दूर करना तथा वैदिक धर्म के प्रचार करने की आज्ञा दी। जिसे शिरोधार्य कर पूरा जीवन गुरू के आदेश के पालन में महर्षि देव दयानन्द ने लगा दिया।

महर्षि ने लगभग पूरे भारत का भ्रमण करके बड़ी सूक्ष्मता से उस समय के भारत की पतनावस्था का अध्ययन किया और उसके निदान का भरपूर प्रयास किया। इस पतन ने भारत वासियों को अत्यन्त दीन-हीन बना दिया था। भारत में फैले अन्धविश्वास, कुरीतियों और पाखण्ड में पौराणिकों, पुरोहितों तथा महन्तों आदि का बहुत बड़ा योगदान था। ऋषि ने भारतीय संस्कृति की मूल धारा की गति शीलता व मौलिकता को पहचान कर अपनी आर्यावर्त की संस्कृति के ऊँचे मूल्यों व आदर्शों को पुनः स्थापित करने का सतत प्रयास किया।

प्रज्ञाचक्षु गुरु ने महर्षि दयानन्द को आर्ष ग्रन्थों के सम्बन्ध में काफी ज्ञान दिया था। ग्रन्थों के प्रक्षेपों व समानान्तर साहित्य जो स्वार्थी पुरोहितों आदि के द्वारा रचकर लोगों को भ्रमित कर रखा था उसे समूल उखाड़ फैंकने के लिए ऋषि ने वैदिक साहित्य व युक्तियों का सहारा लिया। उन्होंने सांस्कृतिक कारणों का वैज्ञानिक विवेचन किया। महर्षि ने लोगों के उत्थान के लिए स्वयं के जीवन व मोक्ष को भी महत्व नहीं दिया। उन्होंने गुरु विरजानन्द द्वारा बताये गये मार्ग को स्वीकार कर वेदों की व्याख्या के लिए आर्ष व्याकरण ग्रन्थों निघण्टु, निरुक्ति, अष्टाध्यायी आदि का मन्थन किया। वेद मंत्रों की सुसंगत और सही व्याख्या प्रस्तुत की। उन्होंने गहन अध्ययन के बाद ही वेद व वैदिक साहित्य को प्रमाणिक घोषित किया। इसी में भारतीय संस्कृति के उच्चतम मानक सुरक्षित व संरक्षित हैं।

महर्षि दयानन्द के पूर्व से ही स्त्रियों को बड़ी कठिन परिस्थितयों से गुजरना पड़ा था उन्हें कहीं भी सम्मान नहीं दिया जाता था। सभी पंथों के लोगों ने स्त्री जाति को नीचा समझा चाहे वह ईसाई हो, मुस्लिम हों या पौराणिक सभी मत पन्थों में स्त्री को सम्मान का दर्जा नहीं दिया गया। बल्कि नारी को नरक का द्वार तक कहा गया। पर्दा प्रथा बेमेल विवाह, बाल विवाह आदि का प्रचलन जोर शोर से था। विधवाओं का पुर्न विवाह वर्जित था। पति की असमय मृत्यु हो जाने पर उन्हें जबरदस्ती जलती चिता में ढकेल कर सती होने के लिए मजबूर कर दिया जाता था। स्त्रियों पर अनेकों अत्याचार किये जाते थे। नारी को वेद आदि की शिक्षा से वंचित रखा गया था। ऐसे समय में महर्षि देव दयानन्द ने स्त्री जाति की उन्नति व शिक्षित करने के लिए लोगों को समझाया। माता निर्माता होती है, समाज परिवार के निर्माण की मुख्य आधार मातृ शक्ति ही होती है। यदि माँ शिक्षित नहीं होगी तो योग्य संतान कैसे हो पायेगी।

महर्षि ने यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता के अनुसार घर को स्वर्ग केवल शिक्षित व संस्कारी स्त्री ही बना सकती है, की शिक्षा देकर लोगों को भ्रम जाल से मुक्त किया।

आज नारी जीवन के हर क्षेत्र में बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रही है। देश के विकास में नारी का योगदान पुरूषों से कम नहीं है। इसका सारा श्रेय महर्षि दयानन्द को है। सम्पूर्ण स्त्री जाति महर्षि की रिणी है।

देश की स्वतंत्रता में भी महर्षि का योगदान कम नहीं है। अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने अपने बुरे स्वदेशी राज्य को अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से बढ़कर कहा है। जिसे पढ़कर हजारों क्रांतिवीरों ने आजादी के लिए अपना सर्वस्त त्याग दिया।

भारत के सर्वागीण विकास व स्वतंत्रता के लिए अपने गुरु स्वामी विरजानन्द को दिये वचन के लिए गुरु दक्षिणा के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। वेद प्रचार के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया। अपने शरीर को छोड़ने का समय भी ज्योति पर्व दीपावली को चुना ताकि लोग इस त्यौहार को मनाते हुए ज्योति के महत्व को आत्मसात् करें। ऋषि देव दयानन्द ने तो अपने गुरू स्वामी विरजा नन्द की गुरुदक्षिणा सूद सहित दे दी थी, परन्तु हम सभी आर्य जनों को अपने गुरू महर्षि दयानन्द की दक्षिणा उनके अधूरे कार्यो को पूरा करके, फैल रहे पाखण्ड व अनाचार को जड़ से मिटाने के संकल्प से पूरी हो पायेगी। गुरु की दक्षिणा को चुकाने के हमारी सब की जुम्मेदारी है। हम ऋषि नहीं हो सकते लेकिन साधारण शिष्य (आर्य) तो बन ही सकते हैं।

www.thearyasamaj.org

ऋषि दयानन्द का महाप्रयाण

-डॉ.महावीर मीमांसक 'वेदमार्तण्ड'

ऋषि दयानन्द के जीवन का मूल्यांकन करते हुये जे.टी.एफ. जोडर्न ने अपनी पुस्तक ''दयानन्द हिज लाइफ एण्ड वर्क्स'' में लिखा है कि दयानन्द ने सच्चे शिव (ईश्वर) को जानने और उस की प्राप्ति के उद्देश्य से घर छोड़ा किन्तु वे अपने उद्देश्य से भटक गये और सामाजिक कार्यो में ही अपना जीवन व्यतीत करते हुये अन्त में प्राण त्याग गये।

एक विदेशी विद्वान ने ऋषि के जीवन पर कुछ लिखा, ऋषि के जीवन में उन्हें कुछ ऐसा लगा कि उनके जीवन पर लिखने के लिये अपनी लेखनी उठानी पड़ी, यह तो स्वागत योग्य बात है किन्तु ऋषि के जीवन का मूल्यांकन उन्होंने ऐसी टिप्पणी से किया कि वे अपने उद्देश्य से भटक गये थे यह लिखकर स्वयं जोर्डन साहिब उद्देश्य से भटक गये।

बालक मूलशंकर के शिवरात्रि के अवसर पर शिव के लिये व्रत रखने पर शिव की मूर्ति पर चूहा चढ़ते हुये और मूर्ति पर विष्ठा आदि करते हुये देखकर यह व्रत लिया था कि यह सच्चा शिव नहीं है मैं सच्चे शिव की खोज करके उसके दर्शन करूंगा। दूसरी घटना बालक मूलशंकर के जीवन बाल्यकाल में उनकी बहन की और चाचा की मृत्यु थी जिसे देखकर मूलशंकर ने मृत्यु का रहस्य जानने का व्रत लिया। मूलशंकर ने इन्हीं उद्देश्यों से २२ वर्ष की अवस्था में घर छोड़ा और पचास वर्ष की अवस्था तक इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिये संलग्न रहे।

मूलशंकर ने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये घर छोडने के बाद ब्रह्मचारी चैतन्य बने फिर सन्यास लेकर स्वामी दयानन्द बने। सच्चे शिव की खोज में उन्होंने सब कुछ ढूँढ़ मारा। इसी उद्देश्य से वे जंगलों में भटके, पहाड़ों को छाना, नदियों को पार किया, मठों और आश्रमों में ठिकाना ढूंढ़ा योगियों की शरण में रहकर योगाभ्यास किया, अनेक विद्वानों से अनेक शास्त्र पढ़े, गुरूओं से शिक्षा ली सभी ग्रन्थों को पढ़ डाला। और कुछ नहीं किया जो उन्हें उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये करना चाहिये था।

इतना सब कुछ अपना जीवन लगाने के बाद उन्हें इस उद्देश्य में सफलता मिली। घण्टों समाधि लगाने की अवस्था तक पहुंचे और समाधि में उन्हें सच्चे शिव का अनुभव और साक्षात्कार होने लगा। अन्त में कुछ विद्या और प्राप्त करने के लिये वे गुरू की तलाश में गुरू विरजानन्द जी महाराज के पास मथुरा पहुंचे। बाहर से गुरू की कुटिया का दरवाजा खटखटाया, अंदर से आवाज आई कौन है, दयानन्द ने बाहर से कहा कि यही तो जानने के लिये आया हूँ कि मैं कौन हूँ ?गुरू तो पारखी थे, पहचान गये कि आज सच्चा जिज्ञासु, सच्चा शिष्य आ गया है। दरवाजा खोला और पूछा कि क्या पढ़े हो। दयानन्द ने सभी अनार्ष ग्रन्थ गिनवा दिये। गुरू ने आदेश दिया कि इन अनार्ष ग्रन्थों को यमुना में बहाकर आओ। गुरू विरजानन्द ने शिष्य दयानन्द को आर्ष ग्रन्थों का आगार दिखला दिया। पाणिनि की अष्टध्यायी, पतंजलि ऋषि का महाभाष्य, यस्काचार्य का निरुक्त पढ़ा कर वेद विद्या के रहस्य को समझने की कुंजी दयानन्द को देदी। दयानन्द ने यहा अपना विद्याध्ययन पूरा करके गुरू दक्षिणा दी। दक्षिणा में गुरू के प्रिय लौंग भेंट किये। और गुरू से विदाई का आदेश मांगा। गुरू विरजानन्द ने आदेश दिया कि बेटे। जो सच्चे शिव की प्राप्ति और जो वेद विद्या का ज्ञान तुम ने अपने जीवन का अमूल्य यौवन काल लगाकर प्राप्त किया है। उसका आनन्द तुम अकेले मत लेना। यह असंख्य प्राणी असंख्य आत्माये- समूची जनता अज्ञान के अन्धकार में डूबी हुई दुःख सागर में गोते खा रही है, ईश्वर के नाम पर अनेक मतमतान्तर झूठे ईश्वर का प्रचार और प्रसार स्वार्थी लोग कर रहे है, इन सबके निवारण के लिये अपने जीवन को अर्पित कर दो।

दयानन्द के लिये गुरू का यह आदेश बड़े गम्भीरता से विचार करने का विषय था। दयानन्द ने अन्त में निर्णय किया जिसे सच्चे शिव को मैंने, प्राप्त किया उस को प्राप्त करके मैं अकेला मोक्ष पहुंच गया तो क्या ये अनेक आत्मायें तो अविद्या के अन्धकार में डूबी हुई है, अतः इनको भी अपने साथ मुक्ति दिलाऊंगा।

यह दयानन्द की तीसरा प्रण था जो प्रण उन्होंने अपने पहले दो प्रणपूरा करने के बाद लिया। और यहीं से ऋषि दयानन्द के सामाजिक सुधार कार्यो और धार्मिक अन्धविश्वासों के निवारण और खण्डन का युग प्रारम्भ होता है।

इस प्रण को ऋषि ने लिखित रूप में जनता के समक्ष रखा और इसी के परिणाम स्वरूप उन्होंने ईश्वर के नाम पर जितने भी मत मतान्तर सम्प्रदायों के रूप में संसार में फैले हुऐ थे उन सबका पर्दाफाश करके सच्चे शिव- सच्चे ईश्वर के स्वरूप को जनता जनार्दन के समक्ष उजागर करने के लिये क्रान्ति का बिगुल बजा दिया, पाखण्ड-खण्डनी पताका आकाश में फहरा दी, धर्म के नाम पर भयंकर अन्धकार पूर्ण अन्धविश्वस के जाल में जन-साधारण को जकड़ कर अपनी गद्दी बनाने

और बनाये रखने में लगे हुवे सभी धर्मगुरूओं को सच्चे शिव ईश्वर का सच्चा स्वरूप निर्धारित करने और उसे ही एक मात्र समूची जनता का उपास्य बनाने का आह्वान किया। इसके साथ-साथ अनेक सामाजिक कुरीतियां जोधर्म और परम्परा के नाम पर हजारों वर्षो से प्रचलित थीं उनका खण्डन किया ताकि समाज और व्यक्ति की उन्नति में कोई बाधा न आने पाये। इस नकारात्मक पश्न को जनता के समक्ष रखने से पहले सकारात्मक पक्ष रखा अपने काल जयी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की जिस का प्रथम समुल्लास ईश्वर सच्चे शिव का स्वरूप उजागर करने और उसी का बखान करने के उद्देश्य से लिखा गया। आगे के नौ समुल्लासों में भी जीवन के सकारात्मक पक्ष- कर्त्तव्य पक्ष की व्याख्या की और अन्तिम चार समुल्लासों में धर्म के नाम पर ईश्वर के नाम पर जो पाखण्ड और अंधविश्वासों पर आधारित सम्प्रदाय चल रहे थे जिससे सच्चे शिव का स्वरूप भूल कर मानव शिव या ईश्वर के झूठे स्वरूप में भटक रहा था उसका भण्डा फोड़ किया। यह ऋषि के जीवन का समूचा कार्यकलाप समग्र गति विधियां केवल शिव के स्वरूप का प्रचार-प्रसार करने के लिये ही तो थी। फिर डा. जोर्डन ने कैसे लिख दिया कि दयानन्द अपने उद्देश्य से भटक गया।

किन्तु इन सब गतिविधियों के पीछे ऋषि की भावना समझने की महती आवश्यकता है। जो भावना उन्होंने स्थान स्थान पर अनेक बार भूरिश स्पष्ट अभिव्यक्त की है और वह भावना थी केवल मात्र कल्याण की भावना सच्चे मार्ग का निर्देश करने की भावना, सत्य और असत्य को नीर क्षीर विवेक करके बतलाने की भावना जोर उनकी सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में प्रयुक्त सत्यार्थ शब्द से स्पष्ट हो जाती है। ईश्वर और शिव के सम्बन्ध में खोज करने में अपना जीवन लगाने के पश्चात जो कुछ उन्हें प्राप्त हुआ वह सत्यार्थ प्रकाश में जनता जनार्दन-मानव जाति के समाने रख दिया। ऋषि की यह भावना ऐसी ही थी जैसे कि किसी ने पूर्व दिशा की ओर जाना हो और वह पश्चिम दिशा को ही पूर्व दिशा समझकर चल पड़े किन्तु दूसरा व्यक्ति जो यह जानताहो कि यह व्यक्ति पश्चिम दिशा को पूर्व दिशा समझकर भ्रान्तिवश गलत दिशा में जा रहा है। और वह उस पर कृपा करके उसके हित की भावना से उसे बतला दे कि भाई यह पूर्व दिशा नहीं है जिसकी ओर तुम जा रहे हो पूर्व दिशा इधर है, यही हितकी भावना ऋषि की थी। जैसे विद्यालय में यदि कोई बच्चा दो और दो के जोड़ का उत्तर गलत समझता हो और अध्यापक के पूछने पर व पांच, छः या तीन आदि गलत उत्तर दे तो सही उत्तर जानने वाले अध्यापक का यह कर्तव्य बनता है कि वह उसे सही उत्तर चार बतलाये। यही सही उत्तर सही दिशा बतलाने की हित की भावना ऋषि की थी।

इस भावना को ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश की मुख्य भूमिका और सभी अनुभूमिकाओं में स्पष्ट किया हैं कि मेरी भावना किसी का अपमान करने, या नीचा दिखाने या कष्ट पहुंचाने की नहीं है अपितु सत्य असत्य स्पष्ट बतलाकर मानव जाति का हित और कल्याण करने का उद्देश्य है।

ऋषि की अन्तिम यात्रा-महाप्रयाण-निर्वाण उनके उद्देश्य की प्राप्ति और उसी के लिये जीवन लगाने और उसी में अपना जीवन समाप्त करने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

दीपावली का दिन है विष शरीर से फूट-फूट कर निकल रहा है। महीनों इस असहज पीड़ा से ग्रस्त होते हुये भी उफ तक कभी नहीं की। अब यह शरीर जर्जर हो चुका है, और अधिक अब इस शरीर में नहीं रहना चाहिये। अतः उस प्रत्यक्ष परमात्म द्रष्टा योगी ऋषि ने निर्णय किया कि आज इस शरीर को त्याग कर परम-शिव परमात्मा के अनन्त आनन्द में विलीन होना है। जिस सच्चे शिव का बोध और प्राप्त करने के महाव्रत को लेकर घर छोड़ा था। सायंकाल सूर्यास्त होने को है। सब भक्तों को आदेश दिया मेरे पीछे आजाओं। अजमेर में भिनाय की कोठी, जिस में ऋषि रोग शय्या पर लेटे हुये हैं उसके सब खिड़की दरवाजे खोलने का आदेश दिया। अब एकमात्र शिव में विलीन होने के लिये इस शरीर से महा-प्रमाण करने का अन्तिम क्षण आ गया है। वो अन्तिम महावाक्य जो ऋषि ने बोले और सब लोगों ने सुने, उन में ऋषि के सम्पूर्ण जीवन की साधना का सार उनके जीवन की उपलब्धि का सार और सभी दर्शनशास्त्रों का अन्तिम गहन तत्व अन्तर्निहित है। वे महावाक्य थे - ''ईश्वर तूने अच्छी लीला की , तेरी इच्छा पूर्ण हो, तेरी इच्छा पूर्ण हो।'' इन अन्तिम शब्दों में ऋषि के जीवन की उपलब्धि का सार और उनके जीवन दर्शन का गहन तत्व छुपा हुआ है जो स्वतन्त्र खोज का विषय है। ऋषि जिस सच्चे शिव को जानने का व्रत लेकर घर से निकले थे उसी की खोज और प्राप्ति में सम्पूर्ण जीवन लगा या उसी का बोध समस्त संसार को करवाने के लिये प्रचार प्रसार में अपना जीवन लगाया उसी एकमात्र विश्व की परम महान शक्ति को जीवन में सर्वत्र हाजिर नाजिर समझकर सब कार्य किये, अपने सभी लिखित और वाचिक रूप में उसी को एकमात्र आधार माना, उसी परमशक्ति के सहारे तूफानों और भंयकर आपदाओं से टक्कर ली और अन्त में उसी को प्रत्यक्ष करते हुवे उसी में विलीन हो गये। फिर भी डा० जोरडन ने कैसे लिख दिया कि ''दयानन्द अपने उद्देश्य से भटक गये'' ?

www.thearyasamaj.org

महर्षि बलिदान स्मृति

-डॉ. बी.पी. सागर

महर्षि तेरा, बलिदान जगत को
है कैसे जीना, संदेश दे गया।
सत्य पथी ही, है कहलाता मानव
ऋषि जाते-जाते उपदेश दे गया।।

प्राणी मात्र के हृदय प्रदेश में,
वही दयानन्दी धारा है आज भी जिन्दा,
कथनी करनी को साकार रूप दे,
असमाजिक भावों की सदा ही निन्दा,

जीवन संग्राम है, बस लड़ता रहा,
मानवीय मानवता का सूत्र दे गया।
सत्यपथी ही.........................।।

श्रद्धा और विश्वास, सदा ही पीता,
जग कुरीति की, की सदा ही निन्दा,
सत्य स्वरी, था सच्चा सात्विक,
वह! बलिदानी है आज भी जिन्दा।

अन्तिम शब्द प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो,
जाते जाते मेरा ऋषिवर कह गया।
सत्यपथी ही.........................।।

ऋषिवर तेरे जैसे, प्रभु भक्त ही
धरा के सच्चे बलिदानी कहलाते हैं,
भव्य मृत्यु के द्वारा ऋषि ही,
जीवन जीने का सूत्र, बतलाते हैं।

शरीरान्त का होना अटल है ''सागर''
धन्य है ऋषिवर संदेश दे गया।
सत्यपथी ही.........................।।

-अन्तरंग सदस्य,आ.प्र.सभा उ.प्र.

महर्षि दयानन्द का आग्नेय जीवन

–आचार्य पं० संतोष कुमार वेदालंकार

एकेनापि हि शूरेण पादाक्रान्तं महीतलम्।
क्रियते भास्करेणैव स्फारस्फुरित तेजसा।।

अकेला एक शूरवीर सारी धरती को पादाक्रान्त करके अपने शौर्य का लोहा मनवा लेने को विवश कर देता है जिस प्रकार सूर्य अपनी प्रखर भेदक तेजस्विता से सारे संसार को प्रभामय बना देता है।

घने काले बादल भले ही आकाश की विशालता को चुनौती देने लग जायें लेकिन दिल दहला देने वाली तड़िता को बज्र प्रभा कुछ क्षणों के लिये ही सही बादलों के अंहकार को पिघला कर बरसने के लिये मजबूर कर देती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के आगमन का काल वह काल था जब वेदों का केवल नाम ही शेष बचा था। पराधीन समाज की वैचारिक चेतना अविद्या जन्य कुरीतियों, सड़ी-गली परम्पराओं एवं मानवीय दृष्टिकोण से भी बहुत दूर जा चुकी थी। ऐसा लगता नहीं था कि अविद्या का यह घटाटोप घनजाल छिन्न भिन्न हो सकेगा, लेकिन जिसके प्राण सृष्टि के रचयिता से अनुप्राणित हैं, जिसे ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि पर्यन्त ऋषियों का आत्मबल प्राप्त है। वेदों की ऋचायें जिसकी विलक्षण एवं विचक्षण मेधा के साथ खेलती हैं। जिसका शिवत्व और सौन्दर्य-सत्य के प्रति समर्पण में है। जिसे प्राण नहीं सत्यप्रिय है। समाज की प्रसुप्त चेतना में वही प्रवेश कर सकता है। वही प्रकाश कर सकता है। हठ, दुराग्रह एवं पक्षपात में डूबे हुये - मूढ़ पुरुषों ने ऋषि को क्षुरे की धार पर चलने को विवश कर दिया एक नहीं अनेकों बार विष देकर ऋषि की अमृत धार को चुनौती दी। असम्भव सा ही था क्षुरे की धार पर वेदों की धारा को बहाना, किन्तु यह सम्भव हुआ क्योंकि ''सत्यमेव जयते नानृतम्''।

ऋषि का आविर्भाव समाज में व्याप्त सभी मत-मतान्तरों में ऐसी खलबली मचा गया जैसे केहरी की गर्जना से मृगों के झुण्ड में भगदड़ मच जाती है। धर्म के नाम पर चलने वाली दूकानों में कोहराम मच गया। मन्दिरों के पुजारी बड़ी उलझन में थे कि अब रोजी-रोटी का क्या होगा ?धर्म के नाम पर जो गुप्त रास लीलायें चलती हैं ये बन्द हो जायेगी। एक मन्दिर का पुजारी चिल्ला कर कहता है-

भो ! भो ! सनातन मतानुगता यतध्वं
सर्वत्र विस्तृतिरयं समुपैति मार्गः।
संरोधने विकसेन किल यस्य सर्वा
गुप्त क्रिया विलय मेष्यति पूजकानाम्।।

हे सनातन मत के अनुयायियों! अरे कुछ करो। यह दयानन्द का बताया वेद मार्ग सर्वत्र फैलता ही चला जाता है। यदि यह प्रवाह बढ़ता ही रहा, रोका न गया तो पुजारियों की समस्त गुप्त क्रियाायें विलुप्त हो जायेंगी।

सम्प्रदायों के भवन टिकते हैं आडम्बर और पाखण्ड पर किन्तु ऋषि की वैधर्म्य विध्वंसक गति ही कुछ ऐसी थी कि भवन क्या टिके जब नींव का ही कुछ अता-पता नहीं रहा।

अभेद्य दुर्ग थी काशी नगरी-धर्म के नाम पर किन्तु स्वामी जी के प्रवेश से ही धर्म ध्वजियों में हड़कम्प मच गया। ऋषि का प्रश्न काशी की हवा में तैर रहा था। दिखाओ वेदों में मूर्ति पूजा का विधान कहाँ है? दिखाओ वेदों में मृतक श्राद्ध का विधान कहां है? दिखाओ, वेदों में ईश्वर के अवतारों का विधान कहाँ है?

दुराग्रही पत्थर मार सकता है, हठी सत्य का घोर अपमान कर सकता है किन्तु अपने हठ को सुरक्षित रखता है। स्वार्थी किसी अपराध में संकोच नहीं करता किन्तु न्याय के पथ पर चलने वाला अजेय अविचल, वीर योद्धा की भांति धर्म को फिर भी सुरक्षित बचा ले जाता है। यही कार्य ऋषि दयानंद ने किया।

वेद धर्म का प्रचार करने के लिये ऋषि ने जिस आर्य समाज की स्थापना की उसका आधार केवल सत्य है। प्रारम्भ ही सब सत्य विद्या से होता है। अवितथ कल्याण सत्य से है। सहस्राब्दियों पश्चात सत्य का ऐसा परम साधक, सत्य का यथार्थ एवं निर्भीक वक्ता समाज ने पाया था।

जिनको देह की चिन्ता हो उन्हें चिता से डर लगता है। जिनके जीवन का प्रमुख उदर है वे आत्मोद्वार की चिन्ता नहीं करते। जिन्हें मरने का भय है वे जीवन का उपहार कैसे पा सकते है ?जिन्हें विरोधियों का भय है वे परमात्मा को सखा नहीं बना सकते। दाता वह है जो याचकों की संख्या देकर मुख नहीं मोड़ता उसी प्रकार वीर वह है जो विरोधी शत्रुओं की संख्या से प्रकम्पित नहीं होता बल्कि अदम्य उल्लास से भर जाता है। विधर्मियों की फौज ऋषि में अदम्य उल्लास ही भरती थी। हाथियों के झुण्ड सिंह शावक का साहस नहीं तोड़ सकते।

www.thearyasamaj.org

जन्म और मृत्यु तो विधाता के हाथ है किन्तु अगर जीवन का मूल्य इस बात पर है कि कोई जिया तो किस प्रकार जिया? मृत्यु भी दासी बनकर जिसके पीछे हाथ जोड़कर खड़ी हो कोई उसके शरीर को भले ही विष से भर दे किन्तु उसका आत्म तेज नष्ट नहीं किया जा सकता।

आज हालत यह है कि कुरान की आयतों के अर्थ बदल गये, पुराणों के हजारों श्लोक गायब हो गये, इतना ही नहीं मृत साहित्य का सबसे बड़ा ढेर अकेला पुराणों का है। बाइबिल के बहुत सारे वचन गायब है और खींचतान करके अर्थ भी बदले जा रहे हैं यही हाल अन्य सभी मतों का है। बहुत सारे मतों का तो पता लगाना पड़ेगा कि वे कब थे और कब लुप्त हो गये ?

ऋषि का जादू यह कि मौलाना सनाउल्ला खां अमृत सरी इस्लाम के प्रमुख वक्ता थे। आर्य समाज के विद्वानों से सारे जीवन शास्त्रार्थ करते रहे। यद्यपि उन्होंने स्पष्टतः वैदिक धर्म को स्वीकार नहीं किया किन्तु ऋषि का ही प्रभाव था कि मौलाना हज करने गये किन्तु संगे अस्वद (काला पत्थर) को बोसा लेने (चूमने) से इन्कार कर दिया। मौलवी समुदाय ने बड़ी आपत्ति की। अखबारों में चर्चा छिड़ी किन्तु मौलाना सनाउल्ला टस-से मस न हुये।

सरसैय्यद अहमद खां लिखते हैं- हमारा स्वामी जी से घनिष्ठ सम्बन्ध था। हम उनका आदर करते थे वे ऐसे श्रेष्ठ महापुरुष थे कि अन्य मतावलम्बी भी उनका आदर करते थे। वे ऐसे पुरुष थे जिनके समान इस भारत में कोई नहीं मिल सकता।

यह है ऋषि दयानन्द का आग्नेय जीवन। अशिक्षा और आडम्बरों में डूबे समाज में यह कल्पना नहीं की जा सकती थी कि नारी और शूद्रों को भी कभी किनारा मिल पायेगा। पुराण और कुरान का तिलस्म कभी टूट पायेगा कभी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। सामाजिक जीवन में ऋषि परम्परा का कहीं स्थान होगा कौन सोच सकता था? लेकिन सभी का तिलस्म टूटा है।

आज नारी न देवदासी है और न नरदासी। नारी ईधन नहीं आग है। आज ज्ञान के स्रोत न नारी के लिये बन्द हैं न शूद्र के लिये। आज का सुशिक्षित समाज आडम्बर एवं पाखण्डों के जाल को तोड़कर जीना चाहता है। मन्दिरों के पुजारियों को भी यह सोचना पड़ रहा है कि भगवान के भोग की चिन्ता करें या अपने पेट की। इन प्रतिमाओं को वस्त्र पहिनावे या अपने बच्चों के तन ढकें। ऋषि प्रणीत पंच यज्ञ एवं संस्कार विधि जन सामान्य में स्थान बना चुकी है। सत्यार्थ प्रकाश ने तो ऐसा दर्पण दिखाया है। कि अनेक मत-मतान्तरों ने अपनी शक्ल बदलने का पूरा प्रयास किया है। समाज अब गप्पों से प्रभावित नहीं किया जा सकता कि नवी ने उंगली उठाई और चांद के दो टुकड़े हो गये। कि कुमारी मरियम से पैदा हो कर ईसा खुदा का बेटा हो गया, कि गंगा में डुबकी लगाओ और सारे पाप धुल गये। सामान्य समाज मानता है कि मन्दिर पौराणिक पुजारियों की उदर पूर्ति का साधन हैं वेदों से इसका कोई लेना देना नही हैं यह सब ऋषि के आग्नेय जीवन का ही परिणाम है। आज सारा विश्व इस बात पर राजी है कि वेद मानव जाति की अमूल्य धरोहर है। कदम-कदम पर बिखरे हुये हिन्दू समाज में ईश्वर, धर्म, अभिवादन नाम आदि सभी में बिखराव था। ऋषि ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नाम ओ३म् धर्म का नाम वैदिक धर्म, अभिवादन मात्र एक नमस्ते, हमारा एक ही नाम आर्य है। ऐसा पहले कभी नहीं था। ऋषि की तीसरी विशेषता विचारशीलता है प्रथम विचार फिर कार्य। विचार हीनता तो पशुत्व है मनुष्यत्व नही ऋषि की चौथी और सर्वश्रेष्ठ सफलता वेद की प्रतिष्ठा है। वेद सर्वोपरि स्वतः प्रमाण है शेष वेदानुकूल होने पर ही प्रमाण माने जा सकते है। यह एक आधार भूत सिद्धान्त है।

आर्य समाज ऋषि के देह विसर्जन को ऋषि निर्वाण के रूप में मनाता है। निर्वाण शब्द का एक अर्थ है जिसने पूर्ण को प्राप्त कर लिया। महाकवि कालिदास लिखते हैं लब्ध नेत्रं निर्वाणं जिसने वह दृष्टि पाली जिससे परम आनन्द की अनुभूति होती है। शरीर का विसर्जन चिता की अग्नि में है, आत्मा का अन्तिम विसर्जन अणु का विभु में विलय है। बस इसी का नाम निर्वाण हे।

ऋषिवर कुल दीपः सत्य धर्म प्रदीपः
सकल मनुज शिक्षा क्रान्ति कार्येकदक्षः।
निखिल निगम शंकापंक नाश प्रवीणः
सुमति रूचिर भास्वान् भासयामासभूमिम्।।

ऋषियों के कुल को प्रदीप्त करने वाले, सत्य धर्म के प्रकाशक मानव मात्र की शिक्षा एवं संस्कारों में क्रान्ति पैदा कर देने में दक्ष, समस्त वेद शास्त्रों के शंका रूपी कीचड़ का नाश करने में प्रवीण, बुद्धि रूपी सुन्दर प्रकाश से प्रकाशित सूर्य समान तेजस्वी ऋषि दयानन्द ने इस भूमि को आलोकित किया।

वेद प्रचारक, लखनऊ
मो. ६४५०६६२७२१

महर्षि दयानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

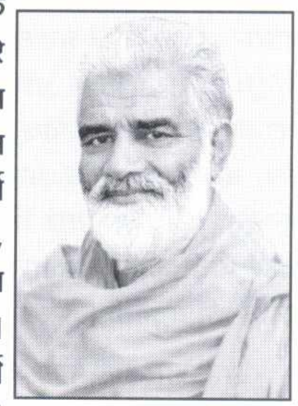

संसार में भारतवर्ष की पुण्य धरा को परमपिता परमात्मा की विशेष अनुकम्पा प्राप्त है कि समय समय पर यहां ऐसी पवित्र आत्माओं ने जन्म लिया है जिनके द्वारा भारतवर्ष की गरिमा पूरे विश्व में स्थापित हुई है। जब देश में सर्वत्र हाहाकार मच रहा था। गौ, विधवा, दलित, दुखिया त्राहि-त्राहि कर रहे थे धर्म कर्म केवल चूल्हे चौके तक सीमित रह गया था वेदों का पठन पाठन समाप्त हो गया था विदेशी लोग वेदों को गड़रिये के गीत तक कहने लगे थे। धार्मिक व्यक्ति कर्म से नहीं अपितु माला तिलक से ही जाने जाते थे। लोग भ्रांति के सागर रूपी भंवर में फंस गये थे, अभिमन्यु जैसे चक्रव्यूह में प्रवेश कर बाहर नहीं निकल पाया उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति धर्माधिकारियों के जाल में फंसकर अपने जीवन में अनेक कष्टों से विनाश लीला देख रहे थे। रक्षक कोई भी दिखाई नही दे रहा था, सभी भक्षक बन गये थे। ऐसे घोर संकट में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने टंकारा की पवित्र धरती पर जन्म लिया। उनके आगमन से मानों काली घटाओं के बादल छिन्न भिन्न हो गये थे। ज्ञान का प्रकाश सत्यार्थ प्रकाश के रूप में सूर्य बनकर आया और अविद्या अंधकार को नष्ट कर दिया। स्वामी जी महाराज के व्यक्तित्व पर जब थोड़ा सा भी चिन्तन किया जाता है तो उनका बहुआयामी व्यक्तित्व दृष्टिगोचर होता है जिसे देखकर प्रत्येक व्यक्ति का मस्तिष्क उनके चरणों में झुक जाता है। उनकी लम्बी लंबी भुजायें, उन्नत वक्षस्थल ओज तेज से परिपूर्ण देदीप्यमान नेत्र, प्रातःकालीन आभा की तरह शरीर धारण किये जिधर भी निकल पड़ते थे लोगों की आंखे उनके दर्शनों के लिए तरसती थी। उनकी चाल मदमस्त हाथी और शार्दूल की तरह थी। जब वे चलते थे लोग दौड़कर उनका साथ निभा पाते थे उनका तेजस्वी वर्चस्वी चेहरा आबालवृद्ध को प्रभावित करता था। ऐसे व्यक्तित्व के धनी के बारे में महर्षि योगी अरविन्द ने लिखा है- ''जब कभी महापुरूषों एवं ऋषियों का इतिहास लिखा जायेगा उस समय महर्षि दयानन्द का नाम हिमालय की चोटी की तरह सबसे ऊपर रहेगा। वे वास्तव में सागर से भी गंभीर और उदात्त भावनाओं में हिमालय से भी ऊँचे थे। संसार के सारे महापुरूषों की विशेषताओं को एक ही स्थान पर संग्रहीत कर मानों ब्रह्मा ने महर्षि दयानन्द का निर्माण किया था क्योंकि एकेश्वरवाद की व्याख्या करते तो लगता था कि मानों जैसे मोहम्मद हजरत खुदा की व्याख्या कर रहे हो तथा जब वे दीन हीन गरीबों के प्रति दयालु होते तो लगता था कि प्रभु ईशू बनकर उनके कष्टों का निवारण कर रहे हैं। वैराग्य अवस्था में माता पिता व घर को छोड़कर जाते समय लग रहा था कि वैराग्य में महात्मा बुद्ध का रूप धारण कर लिया है। वन-वन में घूम कर तपस्या में लीन अवस्था में देखकर लगता था जैसे भगवान राम बनवास का समय व्यतीत कर रहे हैं। आत्मा की अमरता का संदेश देते समय लगता था कि भगवान कृष्ण बनकर गीता का अमर संदेश अर्जुन को सुना रहे हैं। इसी प्रकार वैदिक धर्म रक्षा में तत्पर उनके व्यक्तित्व का देखकर छत्रपति शिवाजी का रूप दिखाई देता था और देश की रक्षा तथा स्वाभिमान वीरता की प्रतिमूर्ति से महाराणा प्रताप की याद दिलाते दिखाई देते थे। गुरू नानक की तरह ग्राम ग्राम घूमकर शान्ति का उपदेश देकर लोगों में धर्म के प्रति भातृत्व की भावना एवं सात्विकता योगसाधना के प्रति भरपूर प्रचार करते थे। उनके जीवन की प्रत्येक विधा किसी न किसी विशेषता से विभूषित कर रही थी इस समय तक के महापुरूषों में ब्र. हनुमान, ब्र. देवव्रत (भीष्म पितामह) किसी न किसी स्वार्थ से ब्र. थे लेकिन गुरूवर देव दयानन्द ने ब्रह्मचर्य का व्रत यदि धारण किया था तो स्वार्थ के लिए नहीं अपितु परोपकार में हमारी पीड़ा को दूर करने के लिए किया था अपने गुरूवर को दी गई प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए किया था। वेदों के विद्वान वक्ता वीर, बहादुर, बलवान, परोपकारी, तपस्वी, सहिष्णु, निर्लोभी, देशभक्त योगी-ईशभक्त दयालु, करूणा के सागर समाज सुधारक, कर्मठ योद्धा, शास्त्रार्थ महारथी, वेदभक्त ब्रह्मचर्य की साक्षात मूर्ति वैदिक धर्म के पुनरुद्धारक, युग प्रवर्तक, ब्रह्मर्षि आर्ष विद्या के प्रबल समर्थक, गुरूवर प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द जी के अनुपम शिष्य महर्षि देव दयानन्द सरस्वती इन सारी विशेषताओं के पुंज थे। हमें भी ऐसे महापुरुष गुरूवर के शिष्य होने पर गर्व होना चाहिए। जिन वेदों को गड़रियों का गीत कहा जाता था आज उन वेदों पर

www.thearyasamaj.org

अनुसंधान करके विश्व के कल्याण के लिए उसका सदुपयोग किया जा रहा है यदि आप उनका कर्तव्य देखना चाहते हैं तो उनके साहित्य और विचार प्रवाह को देखें किसी वर्ग विशेष अथवा देश विशेष के लिए नहीं है। अपितु संसार का उपकार करना मुख्य उद्देश्य बनाकर मानवमात्र क्या प्राणि मात्र को उपकृत किया है तथा प्राणिमात्र के कल्याण की योजना में गोरक्षा पर विशेष ध्यान दिया है ''गो करूणानिधि पुस्तिका'' गो कृष्यादि रक्षिणी सभा से देश का आर्थिक आधार सुदृढ़ करते हुए उनकी विशेषताओं का वर्णन किया है उन्होंने सर्वेक्षण में स्पष्ट किया है कि एक गाय अपने जीवन में दूध से तथा बच्चों द्वारा अन्न पैदा करने से अपनी पीढ़ी द्वारा ४१०४४० लोगों का भरण पोषण कर रही है तथा उसे मारकर खा जाने से मात्र ८० लोगों की उदर पूर्ति होती है। यह विज्ञान स्वामी जी की बुद्धि का ही चमत्कार है इसी प्रकार भेड़, बकरियां, आदि अन्य प्राणियों का संरक्षण करने पर विशेष बल दिया है। पर्यावरण शुद्धि के लिय यज्ञ विज्ञान की संरचना ''पंच महायज्ञ विधि'' के रूप में की है तथा ''संस्कार विधि'' के माध्यम से मूल की भूल को निकालकर आने वाली पीढ़ी को सुसंस्कारित कर मानव से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र, राष्ट्र से विश्व को सभ्य नागरिक बनाने की योजना को स्थापित किया है।

यह मानव निर्माण शाला मानव जाति के ऊपर महान उपकार है। इसी प्रकार राज्य व्यवस्था को सुन्दर बनाने का कार्यक्रम बनाया एवं गुरूकुल शिक्षा के माध्यम से सर्वांगीण विकास की शिक्षा का प्रावधान किया है जिससे खर्चे में उन्नत व्यक्तित्व का विकास हो सके। यह आज की खर्चीली शिक्षा के लिए एक चुनौती है। स्वामी जी के कार्यो की श्रृंखला पिछली शताब्दी से आज तक निरन्तर चल रही है जिसमें नारी शिक्षा, दलित वर्ग भेद भाव की समाप्ति, सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन मुख्य रूप से है आज ग्राम प्रधान से लेकर मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति जैसे गौरवपूर्ण पदों पर महिलाओं का वर्चस्व है यह सब स्वामी जी की योजनाओं का स्वरूप हैं यह प्रभाव मुसलमानों और ईसाईयों में भी है जिसका प्रमाण खालिदा बेगम एवं बेनज़ीर भुट्टो हैं इसी प्रकार दलित वर्ग में उ.प्र. की मुख्यमंत्री रही बहन कु. मायावती जी, लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार तथा श्री चन्द्रभान जी राज्यपाल एवं वी.पी. मौर्या, श्री जगजीवन राम जैसे उच्च पदों पर प्रतिष्ठाप्राप्त लोग महर्षि की कृपा का ही परिणाम है। आज हमारे देश की दुर्दशा स्वार्थी, पदलोलुप, देश द्रोही लोगों के कारण है अन्यथा स्वामी जी का ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' अभी तक साकार हो गया होता।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का शुद्धिचक्र सुदर्शन बनकर नवीन क्रांति कर रहा था और औरंगजेब के पापों को धो रहा था लेकिन वोट के लालची देशद्रोहियों ने उस कार्य में बाधा डालकर देश को तीन भागों में बांट दिया। आज फिर आवश्यकता है उनके अधूरे कार्य को पूरा करने की। स्वामी जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर एक शायर ने बहुत सुन्दर लिखा है-

गिने जाये मुमकिन है सेहरा के जर्रे
समुन्दर के कतरे फलक के सितारे।
दयानन्द स्वामी मगर तेरे एहसान है इतने
न गिनती में आये कभी हमसे सारे।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के विषय में जितना लिखा जाये उतना ही कम है। जितना बोला जाय, सुना जाय उतना ही कम है। आओ आर्य वीरों!, पुत्रों! देश के कर्णधार सेनानी, बुद्धिजीवी वर्ग, आर्यगण, देशभक्तो! धर्म की रक्षा के लिए, वेद की रक्षा के लिए, संस्कृति की व सभ्यता की रक्षा के लिए महर्षि की आत्मा आपको पुकार रही है कि आर्य समाज के कार्य से भारत के भाग्य का द्वार खोल दो और संसार में देश की प्रतिष्ठा को गौरवान्वित करो। इस देश की मिट्टी को बदनामी से बचाओ, इसकी गरिमा को बढ़ाओ। आशा है देश-धर्म की रक्षा के व्रती संकल्प लेकर अपने गुरूवर के स्वप्न को साकार करने के लिए अपने जीवन का सदुपयोग कर सार्थक करेंगे।

संचालक-गुरूकुल पूठ,
गढ़मुक्तेश्वर- हापुड़
मो.९८३७४०२१९२

www.thearyasamaj.org

www.thearyasamaj.org

।। ओ३म ।।

स्थापना वर्ष - 1993

आर्य समाज कोतवाली देहात, जिला-बिजनौर द्वारा संचालित

दयानन्द इण्टर कॉलेज

कोतवाली देहात, बिजनौर

सम्बद्ध- आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ

अशोक कुमार त्यागी
प्रधानाचार्य

सोमदत्त शर्मा
सदस्य

चौ. राजवीर सिंह
सदस्य

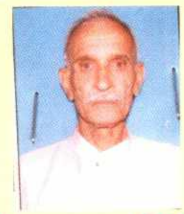

चौ. अमन सिंह
प्रशासक

क्षेत्र का एक मात्र सर्वश्रेष्ठ शिक्षा संस्थान, बिजनौर, उ0प्र0

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

द्वारा संचालित

आर्य वैदिक कन्या इण्टर कालेज

बिजनौर, उत्तर प्रदेश

वैदिक संस्कृति एवं संस्कार-युक्त
शिक्षा का प्रमुख केन्द्र

बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ

श्रीमती लता मेहरोत्रा
प्रधानाचार्या

श्री विजेन्द्र सिंह
प्रबन्धक
मो. 8979143385

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द गौरव गीत

-निरंजन सिंह आर्य, भजनोपदेशक

चमकते सितारे जितने गगन में,
शोभा शशी सम लिए थे ऋषिवर।
पर्वत की चोटी है जितनी धरा पर,
हिमालय की समता किये थे ऋषिवर।।

घटना जो देखी मन्दिर भवन में,
शिव के विषय में सोचा था मन में,
हो नहीं सकता जग का नियन्ता।
जो सक्षम नहीं है ये बोले ऋषिवर।।१।।

माता पिता धन घर बार छोड़ा,
सत्य शिव शंकर से नाता जोड़ा,
अविद्या के प्रस्तर टूटे-ऋषि को
मिले मथुरा में विरजानन्द गुरुवर।।२।।

वेद पढ़े सच्चा शिव पहचाना,
निराकार निर्भय शक्तिमान जाना,
अनन्त अजन्मा अनुपम अनादि।
अजर अमर अज भू सर्वेश्वर।।३।।

दया से था पूर्ण दयानन्द का मन,
विष देने वाले को किया धन अर्पण,
अमृत पिलाया जग को ''निरञ्जन''।
पिये विष के प्याले स्वयं ऋषिवर।।४।।

-ग्राम-बछलौता, पोस्ट-बाबूगढ़
जनपद हापुड़ उ.प्र.

www.thearyasamaj.org

१८५७ का स्वतंत्रता आन्दोलन और महर्षि दयानन्द सरस्वती

–विद्यावाचस्पति वेदपाल वर्मा शास्त्री

लन्दन दैनिक टाइम्स का संवाददाता सरवेलिंग टाइन शिरौल जब भारत आया, वह अपनी पुस्तक ''अनरेस्ट इन इण्डिया'' के पृष्ठ १६२-६३ पर लिखता है- ''दयानन्द की शिक्षाओं का सारा झुकाव हिन्दुत्व के सुधार की अपेक्षा विदेशी प्रभाव के प्रति सक्रिय विरोध की ओर अधिक है।''

अमेरिका के विख्यात योगी एण्ड्रोडेविड जैक्सन ने अपनी पुस्तक ''होर्मोनिका'' में अपने विचार प्रकट किये हैं कि ''मुझे एक सार्वभौम अग्निपुंज दिखाई दे रहा है जो ईश्वर-पुत्र दयानन्द सरस्वती द्वारा आर्यसमाज भाव भट्टी में सुलगाया गया है। उसे बुझाने के लिये अदूरदर्शी मूर्ति-पूजक हिन्दुओं के साथ मुसलमान और ईसाई भी दौड़े-किन्तु वह किसी के बुझाये न बुझा बल्कि और अधिक प्रचण्ड होता गया।

१८ जून १८५८ ई० में महारानी लक्ष्मीबाई का अपनी कुटी में अन्तिम संस्कार समर्थ गुरू गंगादास ने सन्त सेना का नेतृत्व करते हुए ग्वालियर में अंग्रेजी फौज से भयंकर युद्ध किया जिसमें ७५३ सन्त सैनिकों का बलिदान हुआ। इस युद्ध में महारानी लक्ष्मीबाई और सन्तों का हत्यारा जनरल ह्युरोज गम्भीर रूप से घायल हुआ। (हिमदीप-राधापुरी-हापुड़ से सुरक्षित स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रपत्रों के आधार पर उद्धृत फरवरी २००८ में क्रान्तिधरा के अमर गायक प्रो० राधेश्याम चौहान, बसन्त विहार-मेरठ)।

१८८१ की जनगणना में अंग्रेजों ने अल्पसंख्यकों को उभारा, क्योंकि वे महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज से भयभीत थे। महारानी विक्टोरिया ने डलहौजी से कहा दयानन्द कोई महत्त्वपूर्ण संगठन खड़ा करने वाला है। वह संगठन आर्यसमाज है। दयानन्द घूम-घूम कर स्वराज्य स्थापना की चर्चा कर रहे हैं। इसलिये अल्पसंख्यकों को इनसे तोड़ना चाहिये। इससे यह संगठन कमजोर पड़ जायेगा। भारत में अंग्रेजी शासन के खिलाफ बहुत बड़ी बगावत शुरू होने वाली है। सिक्खों को भी इनसे अलग कर देना चाहिये। रिजर्वेशन (आरक्षण) देकर हिन्दु जाति को बांट दो, जिससे भविष्य में हिन्दुजाति कभी संगठित न हो सके। (इंग्लैण्ड के इण्डिया हाउस से प्राप्त एल.आई.यू. की रिर्पोट के आधार पर - क्रान्तिधरा के प्रखर प्रवक्ता राजीव दीक्षित २६-७-२००७ मंगलवार मेरठ)।

जब मैं दयानन्द की निर्भीक कार्यशैली की तरफ देखता हूँ-तो अनायास मेरा ह्रदय कह उठता है ''दयानन्द'' तू सचमुच ज्योति का पुंज है। परमात्मा की कृति का अनुपम योद्धा और राष्ट्रनिर्माता है तू। देश जागरण और निर्माण में तेरा अनन्य प्रभाव है।

(पी.एस.योगी, पूर्वचीफ इंजिनियर उ०प्र०, ऋषिबोधांक - २०-२-१६६१, पृष्ठ-६५)

लौह पुरुष सरदार पटेल ने महर्षि के प्रति अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा - ''महर्षि दयानन्द सरस्वती के राष्ट्र-प्रेम, उनके क्रान्तिकारी ह्रदय, उनकी हिम्मत, उनके ब्रह्मचर्यपूर्ण जीवन का मैं सदा उपासक रहा हूँ। समाज की बुराइयों- कुरीतियों के विरूद्ध उनका क्रान्ति उद्‌घोष भारत की आत्मा है।'' (गृहमंत्री भारत सरकार, दिस० १६४७)।

महात्मा गांधी कहते हैं- ''कौपीनधारी, अखण्डब्रह्मचारी, अप्रतिम तेजस्वी दयानन्द ने भारत का कोना-कोना छान मारा। उससे देश की दासता और समाज की दुर्दशा का नग्न चित्र उनके सामने उपस्थित हो गया। महर्षि ने सोचा- ऋषियों का देश मुरझा रहा है। इस प्रकार एक दिन हिन्दु-जाति का नाम तक मिट जायेगा। स्वराज्य शंख का ऐसा उद्‌घोषक, परम देशहितैषी अन्य व्यक्ति मिलना दुर्लभ है। ब्रिटिश राज्य को उखाड़ने में जनता के साथ सीधा सम्पर्क रखने का मार्ग महर्षि ने ही खोज निकाला है। मैं इसी मार्ग का यात्री हूँ। (सम्पादकीयं ऋषि बोधांक- १ मार्च १६६२, पृष्ठ-१७)

५ अक्टुबर १८५५ में गढ़मुक्तेश्वर के मेले से दूर महर्षि के दीक्षा गुरू स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में क्रान्ति आन्दोलन की एक सभा हुई थी- जिसमें २५०० साधु महात्मा उपस्थित थे। (सर्वखाप पंचायत शोरों के प्रपत्रों के आधार पर)।

१८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम के अगुवा संयोजक चार वेद के अग्रणी विद्वान संन्यासी थे। जिनमें प्रथम हिमालयवासी १६० वर्षीय स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती, द्वितीय इन्हीं के शिष्य १२६ वर्षीय स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती, तृतीय इन्हीं के शिष्य ७६ वर्षीय दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी मथुरा, चतुर्थ इन्हीं के बलिष्ठ शिष्य ३३ वर्षीय स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज थे, जिन्होंने गुप्त रूप से सारे देश में घूम-घूम कर साधु और योद्धाओं का संयोजन किया।

दिल्ली में गुप्तरूप से ठहरे महर्षि से नाना साहब, लक्ष्मीबाई, तांत्या टोपे मिले। महर्षि ने कहा यदि क्रान्ति आन्दोलन

का सही समय पर प्रयोग हुआ तो देश स्वतंत्र हो जायेगा।

आंसू भरे नेत्रों से महारानी ने ओजपूर्ण भाषा में महर्षि से आशीर्वाद मांगा। कहा- भले ही मैं लड़ते-लड़ते स्वदेश हित बलिदान हो जाऊँ। महर्षि ने कहा - देवी ! शरीर नाशवान् है, स्वदेशहित में वे मरते नहीं, अमर हो जाते हैं। अतः तलवार उठाओ- फिरंगियों से युद्ध करो।

महर्षि ने तभी ११०२/- गोविन्दराय वाले, ११०१/- महारानी लक्ष्मीबाई वाले तथा ६३३/- रूपये जनसाधारण से मिले, कुल २८३५/- रू० नाना साहब को देते हुए कहा - ''जनसाधारण का नेतृत्व करना और आग लेकर खेलना, दोनों ही खतरनाक हैं। मामूली सी भूल से ही सत्यानाश हो सकता है। अतः सम्भलकर चलो। स्वयं पूर्ण शक्ति से साधु संगठन का काम आरम्भ कर दिया।'' (जाटवीरों का इतिहास कैप्टन दिलीप सिंह अहलावत-पृष्ठ-६०५)

दिल्ली के मासिक पत्र ''मधुरलोक'' मार्च १६७१ तथा लखनऊ से प्रकाशित ''आर्यमित्र'' मार्च १६७६ में भी इसका प्रकाशन हुआ।

महर्षि की क्रान्ति से रूष्ट होकर अंग्रेजों ने राजस्थानी राजाओं, ब्राह्मणों से मिलकर भयंकर षड्यंत्र से महर्षि को कालकूट विष दूध में उन्हीं के रसोइये से पिलवा दिया। चिकित्सा भी नहीं होने दी। डा० का शीघ्र तबादला कर दिया। जिससे महर्षि दयानन्द जीवित न रहने पाये।

भारत सरकार ने आजादी आन्दोलन के सन्दर्भो की प्राप्ति के लिये कुछ शीर्ष वैज्ञानिकों को इंग्लैण्ड भेजा था। उनमें एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक राजीव दीक्षित भी थे। राजीव दीक्षित के मैंने तीन प्रवचन- एक विक्टोरिया पार्क जून २००५ में मेरठ में सुना था। जहाँ ५-६ हजार श्रोता उपस्थित थे। २ घंटे लगातार तालियों की गड़गड़ाहट के बीच रात्रि के ११ बजे तक जन समुदाय हथेली बजाता हुआ प्रवचन सुनता रहा।

द्वितीय प्रवचन ११ मार्च २००७ में आर्ष गुरूकुल बड्लूर, कामारेडी, आन्ध्र प्रदेश में सुना था। सभा के बाद हमारा परस्पर विचारविमर्श भी हुआ था। गुरूकुल के अधिष्ठाता स्वामी वेद प्रकाश मीमांसक भी हमारे बीच में थे। दीक्षित जी ने देश की आजादी में महर्षि दयानन्द सरस्वती के योगदान की भारी प्रशंसा की थी।

तृतीय प्रवचन २६ मई २००७ में मंगलवार की शाम मंगलपाण्डे चौक- मेरठ में रात्रि के ११-३० तक सुना, जिसे मैंने तत्काल लिपि बद्ध कर लिया था। जिसे आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हुँ। तीनों जगह के प्रवचनों का विषय था। '' १८५७ का क्रान्ति आन्दोलन और महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज''।

(१८५७ की क्रान्ति आन्दोलन के प्रखर प्रवक्ता राजीव दीक्षित-वर्धा महाराष्ट्र)

दीक्षित कहते हैं मैंने ३-४ वर्ष अपने भारतीय अधिकारी साथियों के साथ इंग्लैण्ड के इण्डिया हाउस और पुरातत्व संग्रहालय में १८५७ के स्वाधीनता आन्दोलन के प्रपत्र देखे हैं लार्ड मैकाले अपने पिता को पत्र लिखता है कि ''हमें भारत की संस्कृति-शिक्षा-सभ्यता और अर्थव्यवस्था का नाश करना है- जिससे भारत के लोग अपना असली इतिहास नहीं जान सकेंगे। उनमें आत्म गौरव समाप्त हो जावेगा।''

अंग्रेजों ने भारत के इतिहास में गलत-सलत जोड़कर उसे पूरा विकृत कर दिया है। सारे इतिहास में भारत की प्रजा का जिक्र नहीं मिलता। जबकि भारत की प्रजा का इतिहास राजाओं से ज्यादा गौरवशाली रहा है।

सर टामसरो १६२८ में भारत आया था। जिसने गाँव दर गाँव, घर-घर घूमकर पता चलाया था। गांवों की बड़ी सुन्दर व्यवस्था थी। उस समय देश में ७ लाख, ३२००० हजार गांव थे। जनता में फैसला कर्म के आधार पर नहीं, धर्म के आधार पर होता था। एक गांव का नायक सरपंच, १०० गावों का नायक सामन्त, १००० हजार गाँवों का नायक राजा, १०,००० हजार गावों का नायक महाराजा, १ लाख गांवों का नायक सम्राट, ७ लाख गांवों का नायक चक्रवर्ती सम्राट् होता था। कानून नीचे से बनते थे, भारत का यह गणतंत्र था।

''अंग्रेजों ने कानून ऊपर से शुरू कर दिये। प्रजा का अपमान किया। दीक्षित कहते है- १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के पांच मुख्य केन्द्र थे- मेरठ, दिल्ली, झांसी, कानपुर, बिठूर। बिठूर तांत्या का गांव था। वहां अंग्रेजो ने तीन वर्ष में ४५००० हजार सैनिक मौत के घाट उतार दिये। तांत्या को भी धोखे से मरवा दिया। ८ अप्रैल १८५७ को कलकत्ते में मंगलपाण्डे को फांसी दे दी।

महर्षि स्वामी दयानन्द का मेरठ की क्रान्ति धरा से बहुत गहरा सम्बन्ध था। मेरठ महर्षि की क्रान्ति-भूमि है। यहीं से उत्तर प्रदेश में महर्षि ने स्वाधीनता आन्दोलन का घूम-घूम कर जनता में श्री गणेश किया। १० मई, १८५७ को मेरठ में स्वाधनीता क्रान्ति का जन्म दयानन्द की ही देन थी। महर्षि इस मेरठ क्रान्ति नींव के पत्थर थे। ऐसा विद्वान् वीर संन्यासी मिलना दूभर है।

दीक्षित कहते हैं- ''लन्दन की लाइब्रेरी में मैंने स्वयं देखा और पढ़ा है कि एल.आई.यू. की भारत में, भारतीयों और महर्षि पर गहरी नजर थी। एल.आई.यू. ही लन्दन में प्रतिदिन क्रान्ति की कार्यवाही भेजता था। एक साधु किस गांव में - कहां-कहां जाता था, ये सब रिपोर्ट यहां लाइब्रेरी में मौजूद हैं। दादा भाई नौरोजी भी अंग्रेजों के चापलूस भक्त थे। स्वामी जी से मिलकर बाद में उनके विचार बदले।''

१८५५ से लेकर १६४५ तक के प्रपत्र मैंने देखे हैं। अंग्रेज स्वामी जी के पीछे-पीछे लगे रहते थे। स्वामी जी गांव-गांव, नगर-नगर, डगर-डगर में धर्म की रक्षा तथा राष्ट्र-रक्षा का उपदेश देते थे। अंग्रेजों ने बोर्ड बना रखा था कि स्वामी जी को कैसे बान्धकर रखा जाये। स्वामी जी संस्कृत भाषा में बोलते थे, जिस भाषा को वे समझते नहीं थे। लन्दन में संस्कृत के विद्वान से अर्थ पूछा करते थे कि यह साधु संस्कृत भाषा में क्या कहता है।

महर्षि स्वामी दयानन्द के जीवन का १८५७ से १८६० तक ३ वर्ष का इतिहास नहीं मिलता। यह एल.आई.यू. की रिपोर्ट पर आधारित है। अपने अभिलेखों से पूर्व महर्षि ने हजारों बार स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया है।

अंग्रेज वीर भगतसिंह का भी पता चलाते रहते थे। लन्दन में उन-उन गांवों की फहरिश्त है जहां-जहां महर्षि जाते थे। इन ३-४ वर्षों में महर्षि ने क्रान्ति की अलख ज्वाला जगाई है।

सिन्धिया ने अंग्रेजों से सन्धि करके महारानी लक्ष्मीबाई को मरवा दिया था। आज ये ही सिन्धिया भारत सरकार में मंत्री बने रहते हैं। रानी से अंग्रेजों की तीन लड़ाई हुई हैं- तीनों में अंग्रेज हारे। यह एक लौह नारी थी। निःस्वार्थ और दृढ़ थी। रानी ने माना था- संघर्ष मैंने महर्षि से सीखा है। कर्नाटक की चिनम्मा रानी में भी स्वामी जी के सुने विचारों की दृढ़ता थी। महर्षि की दृढ़ता का नाम सुना था। महर्षि को देखा नहीं था। ये भी वीरता की साम्राज्ञी थी।

स्वामी जी के (छ लाख, ३२००० हजार) क्रान्तिवीर सैनिक थे। दीक्षित कहते हैं- जफर को किसी ने उस समय नेता नहीं माना। वह बूढ़ा था स्वयंमरा बैठा था। महारानी ने जफर को अपना नेता नहीं माना। जफ़र ने कोई क्रान्ति नहीं की थी, वह बेहद बूढ़ा भिखारी था।

१८८१ की जन गणना में अल्पसंख्यकों का जिक्र अंग्रेजों ने चलाया था। उन्हें महर्षि दयानन्द का भारी भय था। वे महर्षि के आर्य समाज से भयभीत थे। वे किसी भी तरह महर्षि के इस संगठन को कमजोर करना चाहते थे।

आरक्षण की शुरूआत भी अंग्रेजों की बांटों नीति का सूत्रपात है। दीक्षित कहते हैं- उन्होंने सिक्खों को हिन्दुओं से अलग रहने की कुचेष्टा की थी। सिक्ख हिन्दुओं से मिल जाती है। अंग्रेज सरकार सिक्खों को अलग अधिकार देकर उन्हें ऊँचा उठाना चाहती है। सिक्खों को चाहिये वे हिन्दुओं से अलग होकर सरकार से अपने अधिकारों की मांग करें।'' अन्यथा सिक्खों को सदा हानियां पहुंचती रहेंगी। ''आज के नेता इसी आरक्षण में देश को बरबाद कर रहे हैं।''

विक्टोरिया ने डलहौजी से कहा - दयानन्द कोई महत्वपूर्ण संगठन बनाने वाला है- वह आर्य समाज है। महर्षि ने स्वराज्य की बात कही है। इसीलिये हमने अल्पसंख्यकों को इनसे तोड़ा है। विक्टोरिया ने १८६४ में आर्य समाज को कमजोर करना तय कर लिया था। नहीं तो बहुत बड़ी बगावत शुरू होने वाली है। निरंकारी- जैन- बौद्ध सब आर्यसमाज के साथ हैं। अतः इस संगठन को तोड़ों। हिन्दू समाज बटकर कमजोर होगा।

दीक्षित कहते हैं - समय है - आर्य समाज को पहल कर देनी चाहिये, तभी भारत का युद्ध असली इतिहास सामने आयेगा। इसी इतिहास से भारत के युवक भारत के भविष्य का निर्माण करेंगे। अंग्रेजों ने आर्यसमाज से डरकर, आरक्षण और अल्पसंख्यकों का बटवारा कर भारत को अपनी आन्तरिक लड़ाई में फंसा दिया है। देश का भविष्य खतरे में खेल रहा है। इससे बचने का एक ही मार्ग है, लन्दन के प्रपत्रों के आधार पर अपना असली इतिहास लिखना। भारत के प्रपत्र वहां इतने हैं जिनसे कम से कम २५०० इतिहास पुस्तकें लिखा जा सकती हैं।

www.thearyasamaj.org

लन्दन के प्रपत्रों के आधार पर दीक्षित ने बताया- दिल्ली यमुना पर लौहपुल के पास जो ''पोस्ट आफिस'' था- वह क्रान्तिकारियों का अड्डा था और मेरठ की क्रान्ति धरा का संचालक केवल अकेला महर्षि दयानन्द था जो दिल्ली में यहीं ठहरता था।

दीक्षित ने ढाई घटें के अपने प्रवचन में यह भी कहा था - ''आप लोग यदि मेरे लन्दन आवागमन का थोड़ा प्रबन्ध कर दें - तो लन्दन से शेष सब प्रपत्र आपको लाकर दूंगा।

इस सभा की अध्यक्षता स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, कुलपति प्रभात आश्रम, भोलाझाल, (मेरठ) रहे थे। मैं स्वामी जी के बराबर बैठा - दीक्षित जी के प्रवचन को लिपिबद्ध कर रहा था। तभी स्वामी जी ने कहा - ''आप जब लन्दन जाओ तो मुझे सूचित करना - आपके कार्यक्रम में सहायक रहूँगा।''

महर्षि की इस क्रान्ति में - श्यामजी कृष्ण वर्मा, वीरसावरकर, देवतास्वरूप भाई परमानन्द, रामप्रसाद बिस्मिल, शहीदे भगतसिंह, पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी स्वतंत्रानन्द, महात्मा हंसराज, चन्द्रशेखर आजाद, गणेश शंकर विद्यार्थी, आदि प्रखर राष्ट्र भक्त महर्षि के शिष्यों ने महर्षि की प्रेरणा से स्वाधनीता आन्दोलन में अद्भुत भूमिका निभाई है।

झेलम जनपद में जन्म प्राप्त कविवर चमनलाल आर्य महर्षि के पीछे-पीछे आगे-आगे गीतगाकर कहते रहते थे-

गिने जायं मुमकिन हैं सहारा के जर्रे,
समुन्दर के कतरे-फलक के सितारे।
मगर तेरे अहसां-दयानन्द स्वामी,
हैं कैसे मुमकिन गिने जायें सारे।।

(चमन लाल आर्य ''आर्य जगत'' महर्षि बोधांक - १०-२-१९९१-पृष्ठ-५५)

सहयुक्त सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ
मो. ९९२७५७५७७७

शुभकामना

महर्षि दयानन्द सरस्वती के १३३वें बलिदान दिवस के पुण्य अवसर पर आर्य मित्र द्वारा ''बलिदान विशेषांक'' प्रकाशित करने पर शुभ कामनायें प्रेषित करता हूँ।

दीपावली पर्व महर्षि दयानन्द का स्मृति पर्व है। ऋषि के द्वारा किये गये उपकारों, विशेषताओं और महत्व को प्रकट करने की पुण्य तिथि के अवसर पर यह विशेषांक कृतज्ञता का प्रतीक स्वरूप है।

–सियाराम वर्मा
मुद्रक/प्रकाशक
आर्य मित्र साप्ताहिक
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

www.thearyasamaj.org

उत्तर प्रदेश मे शराब बन्दी आन्दोलन

(एक आकलन)

चौधरी रणवीर सिंह
प्रतिष्ठित सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0

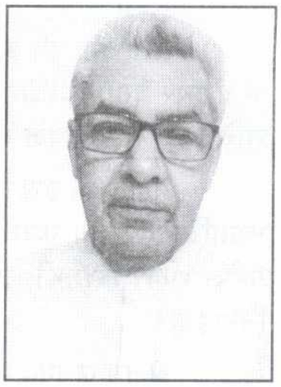

उत्तर प्रदेश ऋषियों महर्षियों की तपोभूमि रही है। इस पावन भूमि पर मर्यादा पुरूर्षोत्तम श्रीराम योगेश्वर श्री कृष्ण जैसे महापुरूषों न जन्म लिया है। दयानन्द सरस्वती जैसे महर्षियों ने इसे अपनी कर्मभूमि बनाया है यह प्रदेश भारतवर्ष के जनमानस की बल बुद्धि पराक्रम चरित्र व नैतिकता का केन्द्र रहा है। इस प्रदेश में पैदा हुये चौधरी चरण सिंह जैसे आर्य नेता राजनीति में चरित्र व ईमानदारी का आदर्श स्थापित करके गये है। परन्तु आज जब पूरी दुनिया विकास की दौड़ में अपनी पूरी ताकत लगाये है तब यह प्रदेश दौड़ में तो हिस्सा ले रहा है परन्तु विकास की नहीं अपितु शराब पीने की दौड़ में सबसे आगे निकलने का प्रयास कर रहा है। इस देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी कहते थे कि शराब पापों की जननी है। ऋग्वेद कहता है सुरा और जुऐ से व्यक्ति अधर्म में प्रवृत्त होता है। अथर्ववेद कहता है कि मांस शराब और जुआ ये तीनों वर्जित हैं। शतपथ के अनुसार सुरा विष है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार मद्य, गांजा भांग अफीम आदि बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ हैं। उनका सेवन कभी न करें। मनु के अनुसार शराब का सेवन पिशाच व राक्षसों के लिये ही उचित हो सकता है। इस प्रकार भारतवर्ष की वैदिक संस्कृति ने ऋषियों ने, राजनेताओं ने शराब सेवन का हमेशा निषेध किया है। क्योंकि शराब से भृष्टाचार, अनाचार दुराचार व्यभिचार जन्म लेते है। शराब व्यक्ति का समाज का, प्रदेश का या देश का चरित्र नष्ट कर देती है। बल, बुद्धि, पराक्रम सब कुछ समाप्त हो जाता है। आज हमारा प्रदेश इसी दिशा में अग्रसर हो रहा है। शराबी पति के भय से कांपती असहाय महिला , अनाथ बच्चे पढ़ाई बीच मे ही छोड़कर घर बैठी लड़कियां किसानों की बिकती जमीनें तथा उजड़ते परिवारों को देखकर सहज ही आज इस बुराई की समाज में गहरी होती जड़ों को महसूस किया जा सकता है। उत्तर प्रदेश का कल अत्यधिक असुरक्षित होता प्रतीत हो रहा हे।

यह सभी जानते है कि आर्य समाज सुधार आन्दोलन का नाम है। स्वामी दयानन्द ने समाज में फैली बहुत सी कुरीतियों से समाज को मुक्त कराया तथा आने वाली पीढ़ी को संदेश दिया कि समाज सुधार कार्यक्रम कभी भी बन्द नहीं होने चाहिये। ऐसी स्थिति में जब उत्तर प्रदेश में समाज में सबसे बड़ी बुराई के रूप में शराब अपनी जड़ जमा रही है तब आर्य समाज का दायित्व हो जाता है कि समाज को इस बुराई से मुक्ति दिलाये।

वैसे तो भारतवर्ष के संविधान के भाग–4 की धारा 47 में लिखा गया है कि राज्य अपनी जनता के पोषक भोजन और जीवन स्तर को ऊंचा करने तथा सार्वजनिक सुधार को अपने प्राथमिक कर्तव्यो में मानेगा और विषेशतया मादक पेयों और स्वास्थ्य के लिये हानिकारक नशीली वस्तुओं के औषधीय प्रयोजन के अतिरिक्त उपभोग का प्रतिशेध करेगा। अभिप्राय यह है कि शासन की शत्–प्रतिशत कोशिश व जवाबदेही होनी चाहिये कि लोगों का स्वास्थ्य उनके रहन सहन का स्तर ऊंचा हो और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये अविलम्ब शराब आदि पेयों पर रोक लगा दी जाये। परन्तु सरकार का दृष्टिकोण जन सामान्य के स्वास्थ्य को सुधारना या उनके जीवन स्तर को ऊंचा करना न होकर कुछ और हो गया है। जिससे सरकार वहीं कार्य करती है जिन्हें वह अपने हित में, अपनी वोट प्राप्ति हित में उचित समझती है। शराबबन्दी में सरकार अपना आर्थिक व राजनैतिक घाटा महसूस करती है। इसलिये संवैधानिक व्यवस्था के बाद भी उसे लागू नहीं कर रही है। स्वामी दयानन्द ने भी जिन समाज सुधार के आन्दोलनों को चलाया उनकों लागू करने के विधान भी सरकार ने तब बनाये जब मजबूर हो गई। अब फिर वही समय आ गया है। इसी स्थिति को भांपते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने इस प्रदेश की महिलाओं के आंसू पोछने के लिए, उजड़ते घरों को पुनः बसाने के लिये, बच्चे को उनका भविष्य लौटाने के लिये प्रदेश में बल बुद्धि पराक्रम की वापसी के लिये, पूरे प्रदेश में शराबबंदी के लिये आन्दोलन चलाने का निर्णय लिया। जिसे उन्होंने 11 जून 2016 को महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला में आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों की बैठक में घोषित किया। सभी पदाधिकारियों ने श्री वर्मा जी की घोषणा का स्वागत किया तथा

निर्णय लिया कि समस्त उत्तर प्रदेश में शराबबन्दी के लिये जबरदस्त आन्दोलन चलाया जाये।

रामगढ़ तल्ला की बैठक के बाद श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने शराब बंदी आन्दोलन हेतु जनजागरण अभियान प्रारम्भ कर दिया है तथा मेरठ, मुज़फ्फरनगर शामली गाजियाबाद बागपत बुलन्दशहर हापुड़ बिजनौर, मुरादाबाद, लखनऊ, कानपुर आदि जनपदों में सभायें व प्रेसवार्तायें की। अन्य संगठनों से भी सहयोग की अपील की। सम्पूर्ण आर्य जनता का जबरदस्त समर्थन उन्हें मिला। शराबबन्दी आन्दोलन के कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के दिये दिनांक 28 जुलाई 2016 को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा की बैठक हुयी। अन्तरंग सभा की बैठक को संबोधित करते हुये सभा प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने कहा कि शराबरूपी दानव धीरे–धीरे समस्त प्रदेश को अपनी गिरफ्त में ले रहा है। प्रदेश की आधी जनता शराब से त्रस्त है, महिलायें शराबी पुरूषों की हिंसा का रोज–राज शिकार हो रही है, युवा अपना चरित्र व बल खोता जा रहा है, लड़कियां शराबियों के भय के कारण अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ रही है, आंकड़े बताते है कि उत्तर प्रदेश में शराब पीकर सबसे ज्यादा अपराध होते है, जो शासन के लिये चुनौती बने हुये है। जिन प्रदेशों में शराबबन्दी है। वहां अपराधों का प्रतिशत काफी कम है। चुनाव में शराब अराजकता फैलाती है। शराब से किसान तबाह हो रहे है। उनकी जमीनें बिक रही है। वर्मा जी ने आवाहन किया कि प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग का अनुसरण करते हुये शराबबन्दी के इस अभियान में अपनी आहुति दें। यह आन्दोलन प्रत्येक आर्य समाजी के मन से लेकर गांव कस्बा, शहर नगर प्रदेश स्तर तक प्रभावी ढ़ंग से चलना चाहिये। प्रदेश की सभी आर्य समाजों की भागीदारी होनी चाहिये। आन्दोलन इतना प्रभाव शाली होना चाहिये कि सरकार शराबबन्दी करने को मजबूर हो जाये। इसी के साथ श्री वर्मा जी ने सरकार को भी चेतावनी देते हुये कहा कि यदि सरकार इस ओर ध्यान नहीं देगी तो परिणाम भुगतना पड़ेगा। सरकार इस विषय पर हमेशा राजस्व की भारी हानि होने का रोना रोती है। जबकि जितना राजस्व शराब से प्राप्त होता है उससे ज्यादा धन की हानि तो शराब पीकर मरने वालो के परिवार के नुकसान की भरपाई करने में शराब पीकर वाहन चलाने से होने वाली दुर्घटनाओं की भरपाई करने में शराबियों द्वारा रेप आदि की जो वीभत्स घटनायें होती है उनकी लीपा–पोती करने आदि में हो रही है शराब द्वारा किय गये घृणित कृत्य बलात्कार आदि की भरपाई तो सरकार शराब का पूरा राजस्व लगाकर भी नहीं कर सकती। चन्द लोगों के लाभ के लिये पूरे प्रदेश को तबाह करने का उपक्रम सरकार तुरन्त बन्द करें। आबकारी विभाग तथा मद्य निषेध विभाग बनाकर एक मुंह से दो विपरीत बाते कहकर लोगों को गुमराह करना बन्द करें। श्री वर्मा जी ने यह भी बताया कि माननीय मुख्यमंत्री महोदय को आर्य समाज ने लिखित पत्र भेज दिया है। कि वे प्रदेश की जनता के हित को ध्यान में रखकर शराबबन्दी की घोषणा कर दे अन्यथा आर्य समाज शांतिपूर्ण आन्दोलन करने को मजबूर होगा। सभा उप प्रधान डा0 धीरज सिंह सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरा नन्द आदि आर्य नेताओं ने भी शराबबन्दी आन्दोलन को समाज हित में सर्वोपरि बताते हुये इसे जोरदार तरीके से चलाने का आवाहन किया। अन्तरंग सभा ने गहन मंथन व चिंतन के बाद सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि क्रमबद्ध तरीके से आन्दोलन चलाया जाये।शराबबन्दी आन्दोलन के लिये एक कोष का गठन जाये, सभी जनपदों में बैठकें की जाये, क्षेत्रीय जनपदीय व मंडलीय स्तर पर कमेटियां बनाई जायें, मुख्यमंत्री को संबोधित पोस्टकार्ड लिखे व लिखवाये जाये, जिसमें प्रदेश की संपूर्ण जनता को भागीदार बनाया जाय, गाजियाबाद से लखनऊ तक शराबबन्दी हेतु जन जाग्रति यात्रा निकाली जाये, तहसील व जिला स्तर पर हवन करते हुये उपजिलाधिकारी/ जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन दिये जाये, 9 सितम्बर 2016 को लखनऊ में विशाल धरना व प्रदर्शन करके मुख्यमंत्री को सीधे ज्ञापन दिया जाये, सभी जनपद मुख्यालयों पर प्रेसवार्तायें की जायें समाज के सभी वर्गो संगठनों को इसमें जोड़ा जाये।

अन्तरंग सभा की बैठक के के बाद सभी कार्यकर्ताओं नेअपने अपने जनपदों में प्रेसवार्ता के माध्यम से इस आन्दोलन की रूपरेखा को जनता तक पहुंचाया तथा जनता से अपील की कि आर्य समाज शराबबन्दी के इस आन्दोलन में सभी का सहयोग चाहता है। जनता का भरपूर सहयोग मिलना प्रारम्भ हुआ। भारी मात्रा मे गांव कस्बों व शहरों से पोस्टकार्ड मुख्यमंत्री कार्यालय पहुंचने प्रारम्भ हो गये। प्रेस में प्राथमिकता कर आर्य समाज के इस आन्दोलन का समाचार प्रकाशित होने लगा। प्रशासन का सहयोग व समर्थन भी लगातार हमारे इस आन्दोलन को मिला। मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन जब जिलाधिकारी महोदय को दिया गया और ज्ञापन देने से पहने ईश प्रार्थना

www.thearyasamaj.org

की गई तो जिलाधिकारी की प्रतिक्रिया उनका भाव विभोर होना तथा आन्दोलन के साथ अपनी सहभागिता घोषित करना अनूठा उदाहरण रहा। शराबबन्दी जागृति यात्रा में एक गांव में दो शराबी यात्रा के बीच में आकर शराबबन्दी का आर्य समाज का बैनर पढ़कर उस बैनर को अपने आप पकड़ लेते हैं ऊंचा उठाते हुये शराबबन्दी का नारा लगाते है तथा पूरे आन्दोलन मे साथ चलते है। लगातार लोगों का सहयोग व समर्थन आखिर तक मिलता रहा कई लोगों ने इस आन्दोलन के बीच मे शराब छोड़कर आन्दोलन को अपना पूर्ण समर्थन दिया। इस प्रकार की अनेकों घटनायें गांव–गांव देखने को मिली, महिलाओं के आंसू देखने को मिले जो हाथ जोड़कर निवेदन करती मिली 'साहब शराब जरूर बन्द करवा देना, मेरा जीवन नरक हो गया है, बच्चे बर्बाद हो गये है, घर उजड़ गया है। मैं समझता हूं कि यह बातें केवल मेरे जनपद में ही नहीं अपितु सभी जनपदों में आर्य कार्यकर्ताओं को सुनने व देखने को मिली होंगी। जनता, प्रेस व प्रशासन का पूर्ण सहयोग व समर्थन इस आन्दोलन को मिला। इस मोटे अक्षरों में आन्दोलन ने आर्य समाज की पहचान बदल दी–

09 सितम्बर 2016 को लखनऊ सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा के नेतृत्व में भारी संख्या में आर्य जगत के सन्यासियों गुरूकुल के ब्रहमचारियों एवं ब्रहमचारिणियों तथा सामान्य आर्यजनों का पहुंचना तथा इस आन्दोलन के प्रति अपना समर्पण प्रदर्शित करना एक अद्‌भुत व अनूठा नजारा रहा। पूर्ण शराबबन्दी हेतु माननीय मुख्यमंत्री को ज्ञापन दिया गया। जिसे धरना स्थल पर लेने उनके प्रतिनिधि पहुंचे तथा मुख्यमंत्री से आर्य नेताओं की शीघ्र भेंट कराने को आश्वासन देकर ज्ञापन लेकर गये।

इस प्रकार से प्रदेश में पूर्ण शराबबन्दी आन्दोलन का यह पहला चरण पूर्ण सफलता के साथ संपन्न हो गया। माननीय मुख्यमंत्री को ज्ञापन दे दिया गया। मुख्यमंत्री ने शीघ्र वार्ता कर समाधान का आश्वासन दिया है। आर्य समाज का आन्दोलन समाज सुधारक आन्दोलन है। मुख्यमंत्री स्वयं कहते हैं कि वे शराब पीने के पूर्णतया विरोधी हैं और चाहते है कि लोग शराब न पियें। शराब से समाज मे बुराईयों का जन्म होता है। परन्तु वे इसे बन्द करने मे हिचकिचा रहे है। कारण केवल राजनैतिक है। परन्तु जब आर्य समाज ने शराबबन्दी का बीड़ा उठा ही लिया है तब सरकार को सोचना पड़ेगा तथा अपनी बुद्धिमत्ता से वरना मजूबरी में शराब तो बन्द करनी ही पड़ेगी। यह जितना जल्दी हो जाये उतना ही जनता व सरकार दोनों के लिये सुखद होगा। अन्यथा की स्थिति में आर्य समाज को अपने आन्दोलन को दूसरे चरण में ले जाना होगा जो निश्चित रूप से सरकार की सेहत के लिये अच्छा नहीं होगा। प्रदेश के दो करोड़ आर्यजनों ने निश्चित कर लिया है कि प्रदेश में वही सरकार बनेगी जो पूर्ण शराबबन्दी लागू करेगी। शराब पिलाकर पथ भ्रष्ट करने वाली सरकार अब उत्तर प्रदेश में नहीं रहेगी।

मो. 9415566322

मेरी अंतः करण से यही कामना है कि भारतवर्ष के एक अन्त से दूसरे अन्त तक आर्यसमाज स्थापित हो। और, देश में व्यापी हुई कुरीतियां उन्मूलित हो जाए।

मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं कि तीन काल में सबकी एकसा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना या मत–मतान्तर चलाने का लेश मात्र भी अभिप्राय नहीं किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

श्रद्धांजलि 'भानु' है सच्ची

-डॉ. भानु प्रकाश आर्य

''दिवाली'' आज फिर आई, तिथि है तीस अक्टूबर।
यही वह दिवस है जिस दिन, विदा हमसे हुआ ''ऋषिवर''।।१।।

''दयानन्द'' नाम को जिसने, न त्यागा अन्त तक पलभर।
पिलाया, जहर था जिसने, भगाया, उसको धन देकर।।२।।

दुःखी थे, लोग दुनियाँ में, न पाते चैन थे क्षण भर।
ज्ञान वेदों का दे उनको, किया आनन्द से सरोवर।।३।।

''दलित'', ''नारी'' अशिक्षित थे, जुल्म ढाते थे सब उनपर।
किया शिक्षित उन्हें ''ऋषि'' ने, अनेकों गुरुकुल खुलवाकर।।४।।

था ढंका बजता पोपों का, भटकते थे, सभी दर-दर।
मिटा पाखण्ड, सच्चे ईश को, पहुंचा दिया घर-घर।।५।।

''सत्य'' क्या है यह समझाया, ''ग्रन्थ'' की एक रचना कर।
नाम ''सत्यार्थ प्रकाश'' उसका, जो है, गागर में एक सागर।।६।।

करी स्थापना ऋषि ने, सभी ''श्रेष्ठों'' (आर्यो) को संग लेकर।
दिया नाम ''आर्य समाज'' उसको, चलाया, नियम दस रचकर।।७।।

''श्रद्धांजलि'' ''भानु'' है सच्ची, यह उसके प्रति जो है ऋषिवर।
करें, एक ''ओ३म्'' की भक्ति, चलें नित वेद के पथ पर ।।८।।

प्रतिष्ठित सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.
मो. ६४१५१५८५७१

यदि हम आर्य लोग वेदोक्त धर्म के विषय में प्राति–पूर्वक पक्षपात को छोड़ कर विचार करें तो सब प्रकार का कल्याण ही है यही मेरी इच्छा है।

मांस का खाना तो दूर रहा, मैं तो उसके देखने मात्र से ही रोगी हो जाता हूं। मेरे योग्य तो केवल फलादि है। यदि आप मेरा न्योता करना ही चाहते हैं तो अन्न और फल आदि वस्तु भिजवा दीजिए।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

स्वामी दयानन्द जी के शैक्षिक विचार

डॉ० अन्नपूर्णा गुप्ता
एसो० प्रोफेसर मनोविज्ञान

स्वामी दयानन्द के अनुसार शिक्षा का अर्थ- प्राचीन वैदिक परम्परा के अनुसार विद्या प्राप्त करना है। दयानन्द जी शिक्षा को प्रक्रिया नही वरन् विषय वस्तु मानते है उनके अनुसार शिक्षा ज्ञान के समकक्ष है यह ज्ञान जिससे ब्रह्म, जीवात्मा और पदार्थो के वास्तविक रूप का बोध होता है। मनुष्य का लौकिक एवं पारलौकिक दृष्टि से शुभ एवं कल्याण होता है। स्वामी दयानन्द जी के अनुसार शिक्षा जिससे विद्या सभ्यता, धर्मात्मा, जितेन्द्रियता आदि की बढ़ोतरी हो, और अविद्यादि दोष दूर हो उसे शिक्षा मानते है। स्वामी जी के अनुसार शिक्षा शारीरिक विकास, चरित्र एवं नैतिकता का विकास, समाज सुधार की योग्यता के विकास के साथ-साथ मानसिक विकास भी करना है और इसके लिये स्वाध्याय करना, प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा ज्ञानार्जन करना, तर्क और व्यावहारिकता के आधार पर सत्य को स्वीकार करना आवश्यक है। स्वामी दयानन्द जी ने प्रत्येक अवस्था की शिक्षा को महत्वपूर्ण माना। उनके विचार में जीवन के प्रथम पांच वर्ष में माता द्वारा दी जाने वाली शिक्षा महत्वपूर्ण है जिस पर पूरा मनोविश्लेषणवादी सम्प्रदान (फ्रायड, एडलर युंग) अत्यधिक बल देता है। पांच से आठ वर्ष की अवस्था पिता की शिक्षा को महत्व प्रदान करता है आठ वर्ष से ग्यारह वर्ष तक गुरूकुल शिक्षा और बारह से पन्द्रह वर्ष की आयु में मनुस्मृति, बाल्मीकि रामायण आदि धार्मिक ग्रन्थ को पढ़ने का सुझाव दिया, पन्द्रह से इक्कीस वर्ष तक वेद अध्ययन पर बल दिया और अध्यापन के समय स्वरोच्चारण शब्द अर्थ, सम्बन्ध आदि पर विशेष बल दिया उपयोगी विषय के रूप में उन्होंने सैन्य शिक्षा, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, कानून, गायन, शिल्प कला, विज्ञान, भूगोल आदि के अध्ययन पर बल दिया।

स्वामी दयानन्द जी ने यह स्वीकार किया कि शिक्षक को चरित्रवान व विद्वान होना चाहिये और विद्यार्थी के साथ उसका व्यवहार पिता तुल्य होना चाहिये साथ ही विद्यार्थी को भी परिश्रमी, सभ्य, स्वस्थ, धर्मपालक, चरित्रवान संययित, आज्ञापालन करने वाला, सामान्य जीवन वाला होना चाहिये।

शिष्य को गुरू के चरणों में बैठकर शिक्षा प्राप्त करना चाहिये जिज्ञासु शिष्य ही गुरू से ज्ञान प्राप्त कर सकता है। स्वामी दयानन्द जी स्वानुशासन को विशेष महत्व प्रदान करते थे। उन्होंने शिक्षा के विविध पक्षों पर भी अपने विचार प्रदान किये।

(अ) जन शिक्षा - स्वामी जी के अनुसार जन का अर्थ है, चारों वर्णो के व्यक्ति स्त्री पुरुष सभी उनके अनुसार ''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।'' चारों वर्ण के लोगों को शिक्षा का अधिकार है स्त्री व शूद्र भी शिक्षा के अधिकारी है। उन्होंने समानता के सिद्धान्त की स्थापना, समाज सुधार व समाज संगठन हेतु जन-शिक्षा का समर्थन किया स्वामी जी का कहना था सभी माता-पिता अपने बच्चों को स्कूल अवश्य भेजे।

(ब) स्त्री शिक्षा - स्वामी जी स्त्री शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते थे और मातृशक्ति को सम्मान की दृष्टि से देखते थे उनके अनुसार पुरुषों के समान ही स्त्री शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिये क्योंकि मातृशक्ति के सहयोग से ही राज्य व समाज आगे बढ़ सकता है स्वामी जी ने कन्या गुरूकुलों व कन्या वैदिक पाठशालाओं की स्थापना भी की। स्वामी जी ने स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, गणित, शिल्पविद्या को सीखने की व्यवस्था की ताकि आगे की पीढ़ी भी चरित्रवान व संयमित तैयार हो सके।

(स) व्यावसायिक शिक्षा - स्वामी दयानन्द जी ने वर्ण व धर्म के अनुसार समाज को चार वर्णो में बांटकर कार्य का विभाजन भी किया है जिसका आधार व्यावसायिक शिक्षा है। वेद वेदांगों का अध्ययन-अध्यापन ब्राह्मणों का व्यवसाय था क्षत्रिय, वैश्य व शूद्रों के लियें उपवेदों की शिक्षा का संकेत मिलता है। क्षत्रिय के लिये राजविद्या। वैश्यों के लिये कृषि एवं व्यवसाय तथा शूद्रों के लिये शिल्प विद्या व्यवस्था का उल्लेख किया है।

(द) धर्म शिक्षा - स्वामी दयानन्द जी के अनुसार धार्मिक शिक्षा के अभाव में शिक्षा अधूरी हैं धर्म के बारे में उनका विचार था कि प्रत्येक परिस्थिति में पक्षपात रहित, न्याय, मन, वचन कर्म से सत्या चरण और ईश्वर आज्ञा अर्थात वेद विदित गुणों को ग्रहण करना धर्म है वेद समस्त ज्ञान का मूल है अतः उसे ही धर्म शिक्षा के रूप में पढ़ना पढ़ाना चाहिये उन्होंने आर्य समाज व गुरूकुल शिक्षा संस्थाओं को धार्मिक शिक्षा का साधन बतलाया।

स्वामी दयानन्द जी ने सह-शिक्षा का निषेध किया है उन्होंने लड़को के गुरूकुल में पुरुष शिक्षक व लड़कियों के गुरूकुल में स्त्री शिक्षिका की बात स्वीकार की और छात्रावास में कठोर अनुशासन व नियंत्रण की बात स्वीकार की।

www.thearyasamaj.org

इस तरह से स्वामी दयानन्द जी ने शैक्षिक सामाजिक आन्दोलन के माध्यम से शिक्षा व समाज को अविस्मरणीय योगदान दिया है सम्पूर्ण देश विशेष रूप से उत्तरी भारत में आर्य-समाज व गुरूकुलों की स्थापना की आर्य समाज एक व्यवस्थापक संस्था है। जो वैदिक विद्यालयों की देखरेख करता है सन् १८८६ में लाहौर में दयानन्द ऐंग्लोवैदिक कालेज तथा सन् १९०२ में कांगड़ी में गुरूकुल की स्थापना की जो आज स्वतंत्र विश्वविद्यालय है। इसके अतिरिक्त ज्वालापुर, वृन्दावन, देहरादून, बड़ौदा तथा सासनी के गुरूकुल महत्वपूर्ण है। अधिकतर बड़ें-बड़े नगरों में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज व आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना कर स्त्री शिक्षा को आगे बढ़ाया। स्वामी दयानन्द जी ने ईसाई व मुस्लिम संस्कृति के प्रभाव से हिन्दू संस्कृति की रक्षा की और प्राचीन भारतीय मूल्यों विचारों और व्यवस्थाओं को बनाये रखने के लिये महान परिश्रम किया। भारतीय शिक्षा दर्शन में उनके विचारों का शाश्वत महत्व है।

साहित्य निर्माण में भी स्वामी दयानन्द जी का योगदान अविस्मरणीय है उन्होंने प्राचीन वैदिक साहित्य को भी अपनी सरल व तर्कयुक्त शैली में प्रस्तुत करके जनसाधारण को सुलभ कराया व हिन्दू धर्म का एक नया व शोधित रूप जनता के सामने रखकर महान योगदान दिया यदि स्वामी जी के आदर्शो को आज का समाज अपना ले तो समाज का उत्थान निश्चित रूप से सम्भव है। महात्मा गांधी जी ने सत्य ही लिखा है कि ''महर्षि दयानन्द हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों, सुधारकों में और श्रेष्ठ पुरुषों में एक थे उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत अधिक पड़ा।

भगवानदीन आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
लखीमपुर-खीरी

मूर्ति पूजन के लिए वेद में कोई आज्ञा नही है। और ईश्वर सर्वत्र है, उसे कोई वश में नहीं कर सकता। तुम मूर्तियों को ईश्वर मानते हो। और फिर अपने हाथ से ताला लगा कर उन्हें मन्दिर में बन्द कर देते हो। तुम ही सोचो इनमें ईश्वरीय शक्ति कहां है ?वे न वर दे सकता है और न शाप। जड़रूप है। यदि कल्याण चाहते हो तो हृदय में परमात्मा का पूजन करो।

वैदिक धर्म प्रचार का कार्य बहुत अच्छा है। हम जानते है कि हमारे इस सारे जीवन में पूर्ण न हो सकेगा। परन्तु चाहे दूसरा जन्म धारण करना पड़े मैं इस महत कार्य को अवश्य ही पूर्ण करूंगा।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

पारसमणि था वो तो ....

(ऋषि दयानन्द)

-आचार्य संजीव रूप

दुनिया में सबसे न्यारा, सबसे जुदा दयानंद।
हम आर्यो के दिल के अंदर बसा दयानंद।।
अमृत पिलाया उसको, जिसने ज़हर पिलाया।
हमको बता कहाँ से, लाया दया दयानंद।।
क्यों खाए ज़हर तूने, क्यों खाए ईट पत्थर।
क्यों छोड़ा दुश्मनों को, हमको बता दयानंद।।
इन उँगलियों को बेशक चाहे जला दे कोई।
छोडूँगा न कभी सच, तूने कहा दयानंद।।
हमने कभी भी उसको, एक पल नहीं भुलाया।
अपने ख़याल में तो, रहता सदा दयानंद।।
पारसमणि था वो तो, अब ''रूप'' मान लो तुम।
वो बन गया है सोना, जिसने छुआ दयानंद।।

-गुधनी, बदायूँ

परोपकार और परहित करते समय अपना मान–अपमान और पराई निन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है। इसके बिना सुधार नहीं हो सकता।

मैंने आर्य समाज का उद्यान लगाया है। इससे मेरी अवस्था एक माली की सी है। पौधों में खाद डालते समय, राख और मिट्टी माली के सिर पर पड़ ही जाया करती है। मुझ पर राख और धूल चाहे जितना पड़े, मुझे इसका कुछ भी ध्यान नहीं परन्तु वाटिका हरी–भरी बनी रहे और निर्विघ्न फूले फले।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द और स्त्री शिक्षा

(श्रीमती ओमकली सिंह प्रधान स्त्री आर्य समाज सीतापुर)

किसी भी राष्ट्र को सशक्त बलवान, बुद्धिमान, चरित्रवान व संस्कारवान तलवार बन्दूक, तोप या परमाणु बम नहीं बना सकते। तलवार संग्राम में विजय तो दिला सकती है परन्तु आत्मबल नहीं दे सकती, संस्कार नहीं दे सकती। यह कार्य तो केवल स्त्री ही कर सकती है। स्त्री भी शिक्षित स्त्री। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी भी समाज या राष्ट्र कोसंस्कारवान व सर्वगुण संपन्न बनाना है तो उस राष्ट्र की स्त्रियों को शिक्षित होना अनिवार्य है। किसी राष्ट्र की स्त्रियां जितनी विदूषी होंगी वह राष्ट्र उतना ही संपन्न होगा। प्राचीन भारत में जब स्त्रियां पुरूषों के समान विद्या संपन्न हुआ करती थी तब भारत सारी दुनिया का गुरू कहलाता था। गार्गी, मैत्रयी अपाला, घोष, भारती आदि विदुषी महिलाओं के उदाहरण आज भी आदर्श है, जिनकी विद्वता के सामने बड़े–बड़े ऋषि भी नहीं टिक पाये। समय बदला, स्त्रियों को शिक्षा से वंचित कर दिया गया उन्हें केवल बच्चे पैदा करने तथा गृह कार्य करने तक सीमित कर दिया गया। वे मात्र पुरूषों के मनोरंजन का साधन बना दी गई उनके सामाजिक अधिकार समाप्त कर दिये गये। परिणाम सामने आया। राष्ट्र निर्बल हो गया, निर्बल ही नहीं हुआ गुलाम हो गया और लंबे समय तक गुलामी की यातना झेलता रहा शंकराचार्य जैसे धार्मिक विद्वानों ने भी स्त्रियों को वेद के पठन--पाठनके अधिकार से वंचित रखा तथा उन्हें नरक का द्वार तक कह डाला। तुलसीदास से ढ़ोल, शूद्र, पशु, गंवार और नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी कहकर नारी के सम्मान को बहुत बड़ा आघात पहुंचाया। सामान्य समाज में नारी को पैर की जूती के समान समझा जाने लगा। फिर समय बदला। ऋषि दयानन्द जैसे महान समाज सुधारक का उद्भव हुआ, उस समय नारी की दशा अत्यन्त दयनीय एवं सोचनीय थी। स्त्रियों की इस स्थिति को देखकर दयानन्द को गहरा आघात लगा उन्होंने यह अनुभव किया कि स्त्री का उत्थान हुये बिना समाज अथवा राष्ट्र का उत्थान संभव नहीं है क्योंकि स्त्री भी पुरूषों की भांति समाजरूपी गाड़ी की एक पहिया है। स्वामी दयानन्द पहले समाज सुधारक हुये जिन्होंने नारी उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया है। ऋषि दयानन्द ने समाज सुधार के कार्यो में स्त्री को शिक्षित करने के लिये माता–पिता को प्रेरित किया। इसके लिये उन्हें पुरूष समाज के कड़े विरोध का सामना भी करना पड़ा परन्तु उन्होंने अकाट्य प्रमाणों और युक्तियों के आधार पर सिद्ध कर दिया कि स्त्री शिक्षा आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। स्त्रियों के चाहरदीवारी में बन्द रहने के कारण तथा उनकी शिक्षा का कोई प्रबन्ध न होने के कारण वे लगातार अज्ञानता के अंधकार में डूबती जा रही है। जिससे समाज लगातार पतन की ओर बढ़ रहा है। गृहस्थ की दुर्दशा का कारण आज नारियों की अशिक्षा है। ज्ञान के भाव में उनका न तो बौद्धिक विकास हो पाता है न नैतिक। इसका प्रभाव संपूर्ण गृहस्थी पर पड़ता है। पुरूष का संपूर्ण जीवन नारी पर आधारित रहता है। नारी पुरूष का निर्माण करती है।

बालक की प्राथमिक पाठशाला प्राथमिक शिक्षक माँ होती है। यदि मां का बौद्धिक स्तर ऊंचा नहीं है, उसके संस्कार ऊंचे नहीं हैं तो वह बच्चों को ऊंचे संस्कार कैसे दे सकती है।

स्वामी दयानन्द का कहना है कि बिना शिक्षा के व्यक्ति अधूरा है। नारी भी जब तक शिक्षित नहीं होगी तब जागरूक नहीं हो सकती, वह अपने अस्तित्व को अपने महत्व को नहीं समझ सकती। अतः स्वामी जी ने शिक्षा के क्षेत्र में वह सब अधिकार स्त्रियों को दिये जो पुरूषों के थे। वेद–मंत्रों का प्रमाण देकर सिद्ध किया कि परमात्मा ने वेदों का प्रकाश मानव मात्र के लिए किया है तब स्त्रियों को वेद के पठन–पाठन से वंचित क्यों किया गया?स्वामी जी ने सबके लिए शिक्षा की अनिवार्यता सिद्ध करते हुये सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखा ''इसमें राजनियम और जाति नियम होना चाहिये कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियों को घर मे न रख सके, पाठशाला अवश्य भेज देंवे जो न भेंजे वह दण्डनीय हों।'' स्त्रियों को सभी प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता पर बल देते हुये स्वामी जी लिखते है। ''जैसे पुरूषों को व्याकरण, धर्म और व्यवहार की विद्या न्यून स न्यून अवश्य पढ़नी चाहिये, वैसी स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्प विद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिये।'' धर्म के संबन्ध में स्त्रियों को पुरूषों के समान अधिकार होने चाहिये। उन्हें धर्म शास्त्रों का अध्ययन करने की पूरी आजादी होनी चाहिये। स्वामी जी ने बिना पत्नी के किसी भी धार्मिक अनुष्ठान को अधूरा माना है। महिलायें पुरूषों की भांति सभी धार्मिक कार्य करायें। स्वामी जी की ही देन है को आज आर्य जगत में बहुत सी महिलायें पौरोहित्य का कार्य

www.thearyasamaj.org

करती देखी जा सकती हैं यज्ञ आदि में स्त्रियों को ब्रहमा के पद पर आसीन होने का अधिकार भी स्वामी जी ने उन्हें दिलवाया। ऋषि दयानन्द एक समाज सुधारक थे, जिन्होंने स्त्रियों को पुरूषों के बराबर अधिकार दिलाने के लिए उनकी शिक्षा पर धार्मिक समानता पर, पुनर्विवाह पर, पर्दा प्रथा समाप्त करने पर, सती प्रथा समाप्त करने पर वैश्या वृत्ति समाप्त करने पर पूरा जोर लगाया तथा विवश होकर सरकार को कानून बनाकर इन सभी सुधारों को लागू करना पड़ा।

स्वामी जी की पैनी दृष्टि यही तक सीमित नहीं रही बल्कि नारी के उज्ज्वल भविष्य को ध्यान में रखते हुये उन्होंने आर्य समाज की स्थापना के साथ–साथ लड़कियों की शिक्षा के लिये कन्या पाठशालाओं की भी व्यवस्था की तथा अपने अनुयायियों को भी उन्होंने इस कार्य को प्राथमिकता से करने का आदेश दिया। जिसका परिणाम आज यह है कि स्त्री समाज पुरूषों से कहीं अधिक बुद्धिमत्ता, बहादुरी एव श्रम का परिचय देते हुये तेजी से आगे बढ़ रही है। यदि दयानन्द न आते तो शायद यह संभव ही न होता। नारी जाति पर दयानन्द का यह उपकार हमेशा अविस्मरणीय रहेगा तथा यह जाति हमेशा उनकी ऋणी रहेगी।

हमारा शरीर बहुत देर तक नहीं रहेगी। आप आजीवन हमारी पुस्तकों से सन्देश लेते रहना। जहां तक बन पड़े अपने भूले भटके भाइयों को सन्मार्ग दिखलाते रहना।

मैं वेद को ही सर्वोपरि मानता हूँ वेद ही ऐसी पुस्तक है कि जिसके झण्डे तले सब आर्य आ सकते हैं। इस लिए जो मनुष्य कह दे कि मैं वेदों को मानता हूं और आर्य हूं, उसे आर्य समाज में सम्मिलित कर लो। ऐसे विश्वासी को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वामी दयानन्द एक अद्वितीय महापुरुष

स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती

महर्षि के कार्यो का प्रचार-प्रसार वर्तमान समय में अति आवश्यक है। वे साधारण व्यक्ति न थे। बचपन से ही उनके आत्मा में सत्य को जानने की प्रबल इच्छा थी। परिवार में मूर्ति पूजन की प्रथा होते हुये भी उन्होंने उस प्रथा में कभी विश्वास नही किया। शिवरात्रि को भी पिता के अति आग्रह पर मन्दिर चले तो गये परन्तु वहाँ भी उनकी आत्मा में सत्य को जानने की इच्छा बलवती रही। इसी उद्देश्य से सभी भक्तों के गाढ़ निद्रा में जाने पर स्वयं को जाग्रत अवस्था में रखने का प्रयास करते रहे और अन्ततः सत्य की अनुभूति हुई कि पाषाण की मूर्ति में शिव की शक्ति नहीं है। वास्तविक शिव कोई और ही है।

इस घटना ने महर्षि के बाल हृदय में सच्चे शिव को जानने की इच्छा शक्ति को बल प्रदान किया। तदुपरान्त बहन और चाचा की असामयिक मृत्यु ने मृत्यु के कारण को जानने की इच्छा प्रबल हुई। ऐसा जान पड़ता है कि परमात्मा ने मूलशंकर के शरीर में किसी पवित्र जीवात्मा को भारत देश की दुर्दशा को सुधारने हेतु ही भेजा था।

उसी काल अवधि में परमात्मा ने मूलशंकर को सत्य का ज्ञान कराने हेतु गुरू विरजानन्द दण्डी को ज्ञान का भण्डार भर दिया था। गुरू की ही कृपा थी जिससे दयानन्द आध्यात्मिक क्षेत्र में अजेय योद्धा के रूप में जीवन भर कार्य करते रहे। गुरू विरजानन्द और शिष्य दयानन्द दोनों की जीवात्माओं का मिलन ईश्वर की कृपा से ही हुआ था।

गुरू विरजानन्द भारत वर्ष को दुर्दशा सुन-सुन कर आत्म पीड़ित थे परन्तु शारीरिक रूप से असमर्थ थे। ईश्वर ने उन्हें दयानन्द रूपी शरीर प्राप्त कराया जिसने भारत में व्याप्त अज्ञान के अन्धकार को हटाकर सत्य ज्ञान की बैसाखी भारतीय जनता के साथ-साथ विदेशी धर्मालम्बियों को भी प्रदान की।

महर्षि दयानन्द ने अपनी बुद्धि से तर्को और प्रमाणों से सिद्ध कर दिया कि सत्य का ईश्वरीय ज्ञान वेदों में ही है लेकिन उसे जानने के लिए तत्कालीन किसी भी विद्वान में सामर्थ न थी। यह अद्वितीय सामर्थ्य ईश्वर ने महर्षि दयानन्द जी को ही प्रदान की जिसके उपयोग से ईश्वर से साक्षात्कार वेदों का आर्य भाषा हिन्दी में भाष्य किया और अन्य पूर्व काल के ऋषियों द्वारा रचित ग्रन्थों का अध्ययन कर जन मानस के कल्याण हेतु तीन काल जयी ग्रन्थों-ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, सत्यार्थ-प्रकाश और संस्कार विधि, की रचना की।ये तीन ग्रन्थ अनुपम हैं। इनको रचकर महर्षि ने गागर में सागर भर दिया है।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में महर्षि ने सिद्ध कर दिया-कि सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने-जाते हैं उनका आदिमूल परमेश्वर है सुई से लेकर हवाई जहाज और उपग्रह बनाने का मूल ज्ञान वेद में है और चींटी से लेकर डायनासोर के शरीरों की रचना करने वाला परमेश्वर ही है।

सत्यार्थ प्रकाश की रचना कर महर्षि ने सिद्धकर दिया-कि सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। इस ग्रन्थ में यह बतला दिया कि -

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयँ सह।

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।। यजु. ४०-१४।।

भावार्थ - जो मनुष्य विद्या और अविद्या को उनके स्वरूप से जानकर इनके जड़-चेतन साधक हैं ऐसा निश्चय कर सब शरीरादि जड़ पदार्थ और चेतन आत्मा को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि के लिए साथ ही प्रयोग करते हैं वे लौकिक दुःख को छोड़ परमार्थ के सुख को प्राप्त होते हैं। जो जड़ प्रकृति आदि कारण व शरीरादि कार्य न हो तो परमेश्वर जगत् की उत्पत्ति और जीव कर्म उपासना और ज्ञान के करने को कैसे समर्थ हो। इससे न केवल जड़ न केवल चेतन से अथवा न केवल कर्म से तथा न केवल ज्ञान से कोई धर्मादि पदार्थो को सिद्धि करने में समर्थ होता है।

संस्कार विधि में महर्षि जी ने मानव निर्माण और जीवन काल में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्ति के साधन बतलाये हैं। संस्कारों से मनुष्य का सुधार होता है। और यज्ञ से धर्म, अर्थ और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

अतः ये तीनों ग्रन्थ प्रत्येक मानव परिवार के लिए अत्यन्त आवश्यक और उपयोगी हैं। इनके अभाव में जीवन जीने का

www.thearyasamaj.org

वास्तविक ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता।

वेद मानव जाति का धार्मिक मूल ग्रन्थ है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है। अतः विद्या प्राप्त करने में कभी भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। जो मनुष्य स्वाध्यायशील होते हैं वे ही जीवन को सफल बनाने में समर्थ होते है।

महर्षि ने यह सर्वप्रथम अनुभव किया कि मानव जाति के कल्याण के लिए देश का स्वतन्त्र होना अति आवश्यक है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु महर्षि ने चाणक्य नीति अनुसार उत्तर भारतीय राजाओं को एक सूत्र में बाँधने का कार्य आरम्भ किया और सफल भी हुये परन्तु कुछ स्वार्थी गद्दार लोग विधर्मियों से मिल गये जिसके परिणाम स्वरूप १८५७ का स्वतन्त्रता संग्राम विफल हो गया। तदोपरान्त स्वामी जी ने जनता के मध्य से ही स्वतन्त्रता सेनानी तैयार किये जिनमें गोविन्दराम राना डे, बाल कृष्ण गोखले, वीर सावरकर, श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, गुरूदत्त विद्यार्थी आदि प्रमुख थे।

महर्षि जी ने मानव समाज के उद्धार के लिए सर्वप्रथम नारी शिक्षा, छूआ-छूत निवारण, पाषाण पूजा का अन्धविश्वाश को क्षीण करने और विद्वान श्रेष्ठ पुरुषों को एकता में बाँधने हेतु आर्य समाज की स्थापना की थी।

अतः हम देखते हैं कि महर्षि जी ने अपने लघु जीवन काल में ही अभूतपूर्व कार्य किये जो सभी निःस्वार्थ, निष्काम और परोपकार भावना से ही किये थे। उनसे पूर्व और उनके उपरान्त वर्तमान तक उन के समान कोई महापुरुष उत्पन्न नहीं हुआ। वास्तव में महर्षि दयानन्द सरस्वती ही वर्तमान युग के आदि और अन्तिम महापुरुष थे। अतः महर्षि अद्वितीय महापुरुष थे।

महर्षि का जीवन युगों-युगों तक मानव जाति के लिए प्रेरणा दायक रहेगा।

आश्रम
११६, गाँधी नगर, मथुरा (उ.प्र.)
पिन-२८१००४

यादि लोग हमारी उंगलियों को बत्तियां बनाकर जला डाले तो भी कोई चिन्ता नहीं। मैं वहां जाकर अवश्य सत्योपदेश करूंगा।

जो केवल भाण्ड के समान परमेश्वर के गुण कीतन करता है और अपने चरित्र को नहीं सुधारता, उसकी स्तुति करना व्यर्थ है।

मैं तो अपना तन, मन धन सब कुछ सत्य के ही प्रकाशनार्थ समर्पण कर चुका। मुझ से खुशामद करके अब स्वार्थ का व्यवहार नहीं चल सकता, किन्तु संसार को लाभ पहुंचाना ही मुझे चकवर्ती राज्य के तुल्य है।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

www.thearyasamaj.org

आर्य इण्टर कालेज

बहादराबाद (हरिद्वार)

संस्था का संक्षिप्त परिचय -

इस विद्यालय की स्थापना महर्षि दयानन्द जी के आवाहन पर वर्ष 1941-42 में आर्य विद्यालय के रूप में हुई। यह संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा 5, मीराबाई मार्ग लखनऊ उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित है। यह विद्यालय जनपद हरिद्वार में पवित्र पावन भागीरथी से निसृत गंगनहर के बाम कूल पर बहादराबाद ग्रामीण आंचल में क्षेत्रीय शिक्षा प्रेमियों के सार्थक प्रयासों से सम्भव हुई। दिनांक 20-01-1960 तक यह संस्था जूनियर हाईस्कूल के रूप में संचालित हुई। यह विद्यालय 1961 में हाईस्कूल विज्ञान वर्ग, वर्ष 1962 में हाईस्कूल साहित्यिक वर्ग में शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश इलाहाबाद द्वारा मान्यता प्राप्त कर प्रगति के सोपनों पर निरन्तर चढ़ता चला गया। इस विद्यालय ने स्थापना के बाद से ही शिक्षा प्रसार व प्रचार के कार्य में संगन्न हो सम्पूर्ण ग्रामीण क्षेत्र को शिक्षा रूपी दीपक प्रज्जवलित कर आलोकित किया हैं। जिसका श्रेय यहां की प्रबंधिका, युवा प्रबंधक, प्रधानाचार्य, शिक्षक वर्ग एवं छात्र/छात्राओं को जाता है। यहां पर हाईस्कूल साहित्यिक वैज्ञानिक एवं कृषि तथा एक हजार से उपर छात्र-छात्राऐं विभिन्न विषयों में अध्ययनरत् है।

उत्तम शिक्षा के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से तथा नैतिक शिक्षा के कार्यक्रम के अर्न्तगत व विभिन्न क्रीड़ा एवं खेलकूद, क्रिया कलाप आयोजित किया जाता हैं।

विजेन्द्र सिंह
प्रधानाचार्य
आर्य इण्टर कालेज
बहादराबाद (हरिद्वार)

राज कुमार चौहान
एड0
प्रबन्धक
आर्य इण्टर कालेज, बहादराबाद
जिला-हरिद्वार

आर्य कन्या इण्टर कालेज बहादराबाद (हरिद्वार)

संस्था का संक्षिप्त परिचय -

इस विद्यालय की स्थापना महर्षि दयानन्द जी के आवाहन पर वर्ष 1941-42 में आर्य विद्यालय के रूप में हुई। यह संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा 5, मीराबाई मार्ग लखनऊ उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित है। यह विद्यालय जनपद हरिद्वार में पवित्र पावन भागीरथी से निसृत गंगनहर के बाम कूल पर बहादराबाद ग्रामीण आंचल में क्षेत्रीय शिक्षा प्रेमियों के सार्थक प्रयासों से सम्भव हुई। दिनांक 30-04-1965 तक यह संस्था प्राईमरी कक्षाओं के रूप में एवं वर्ष 1967 में जूनियर हाईस्कूल की कक्षाओं के रूप में मान्यता शिक्षा परिषद् उत्तरप्रदेश इलाहाबाद द्वारा प्राप्त हुई। यह विद्यालय 2001 में हाईस्कूल विज्ञान वर्ग, साहियक वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग में वित्तविहीन तथा वर्ष 2003 में इण्टरकालेज साहित्यिक वर्ग तथा वर्ष 2007 में वैज्ञानिक वर्ग में उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद् रामनगर नैनीताल द्वारा मान्यता प्राप्त कर प्रगति के सोपनों पर निरन्तर चढ़ता चला गया। इस विद्यालय ने स्थापना के बाद से ही शिक्षा प्रसार व प्रचार के कार्य में संगन्न हो सम्पूर्ण ग्रामीण क्षेत्र को शिक्षा रूपी दीपक प्रज्जवलित कर आलोकित किया हैं। जिसका श्रेय यहां की प्रबंधिका, युवा प्रबंधक, प्रधानाचार्य, शिक्षक वर्ग एवं छात्र/छात्राओं को जाता है। यहां पर हाईस्कूल साहित्यिक वैज्ञानिक एवं कृषि तथा एक हजार से उपर छात्र-छात्राऐं विभिन्न विषयों में अध्ययनरत् है।

उत्तम शिक्षा के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से तथा नैतिक शिक्षा के कार्यक्रम के अर्न्तगत व विभिन्न क्रीड़ा एवं खेलकूद, क्रिया कलाप आयोजित किया जाता हैं।

प्रधानाचार्य
कान्ता रावत
आर्य कन्या इण्टर कालेज
बहादराबाद (हरिद्वार)

प्रबन्धक
राज कुमार चौहान
आर्य इण्टर कालेज
बहादराबाद (हरिद्वार)

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

जिला सभा (जिला आर्य प्रतिनिधि सभा) आजमगढ़

कार्यालय : आर्य समाज, मु0–मताबरगंज, आजमगढ़–276001

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज मु0 मातबरगंज, जनपद–आजमगढ़ के पदाधिकारी गण

संतोष जिज्ञासु
अन्तरंग सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0
5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

दिनेश कुमार श्रीवास्तव
(एडवोकेट)
प्रधान-जिला सभा (जिला आर्य प्रतिनिधि सभा आजमगढ़)
प्रेसीडेन्ट-दि आर्य विद्या सभा, आजमगढ़
मो0 : 9450736383

रामनगीना यादव
मंत्री
जिला सभा
(जिला आर्य प्रतिनिधि सभा आजमगढ़)
मो0 : 09451511750

मंगल चन्द्र आर्य
सेक्रेटरी
दि आर्य विद्या सभा, आजमगढ़
मो0 : 09532048646

श्रीमती सुमन वर्मा
मैनेजर - डी0ए0वी0पी0जी0 कालेज, आजमगढ़
मैनेजर - डी0ए0वी0 इण्टर कालेज, आजमगढ़
मो0 : 08381870080

मुन्नू यादव
प्रधान
आर्य समाज मु0 मताबरगंज, आजमगढ़
मो0 : 09454582159

मनोहर प्रसाद
मंत्री
आर्य समाज मु0 मातबरगंज, आजमगढ़
मो0 : 09450119796

अम्बरीष कुमार श्रीवास्तव-एडवोकेट
अध्यक्ष
श्री रामकृष्ण गो सेवा समिति
ग्रा. व पो. कोठवा जलालपुर, आजमगढ़
मो0 : 09451749820

राजीव कुमार आर्य-एडवोकेट
मंत्री
श्री रामकृष्ण गो सेवा समिति
ग्रा. व पो. कोठवा जलालपुर, आजमगढ़
मो0 : 09415831017

रासबिहारी सिंह
प्रबन्धक
श्री रामकृष्ण गो सेवा समिति
ग्रा. व पो. कोठवा जलालपुर, आजमगढ़
मो0 : 07524072522

आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज हरदोई

संस्था का संक्षिप्त परिचय -

आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज, हरदोई की स्थापना सन् 1918 ई0 में शिव रत्रि के पावन पर्व पर श्रद्धेय 'स्व0 प0 सरस्वती नारायण' द्वारा प्रदत्त भूमि पर 'रानी कुंवर महराज सिंह' के कर कमलों द्वारा की गयी थी। विद्यालय का शुभारभ सन् 1919 ई0 में जालन्धर विश्व विद्यालय की प्रचार्या कु0 लज्जावती के द्वारा किया गया था। 2800 छत्राओं कला, विज्ञान तथा वाणिज्य वर्ग में शिक्षा ग्रहण कर रही है। यहाँ की प्रधानाचार्या श्रीमती मधु अस्थाना जी है। प्रत्येक शुक्रवार को हवन किया जाता है। इस विद्यालय की शुरूआत एक नीम के पेड़ के नीचे मात्र पाँच छात्राओं द्वारा की गयी थी। आज यह विद्यालय इतना बड़ा हो गया है कि इसकी नवीन शाखा पिहानी चुंगी पर शाँहजहापुर रोड, एस0पी0 बगले के पास विद्यालय के अध्यक्ष श्री मुकेश अग्रवाल जी तथा प्रबन्ध समिति के प्रयास से सन् 2007 में आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज की गयी थी। वर्तमान समय में कला, विज्ञान तथा वाणिज्य वर्ग में कक्षा 1 से कक्षा 12 तक छात्रायें शिद्वा ग्रहण कर रही है। प्रभारी प्रधानाचार्या प्रतिदिन शशि कनौजिया की देख-रेख में दिन प्रतिदिन उन्नति हो रही है।

यहाँ पर प्रत्येक बुधवार को हवन किया जाता हैं तथा दयानन्द सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता कई वर्षों से करायी जा रही है।

प्रभारी प्रधानाचार्या
श्रीमती शशि कनौजिया
आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज,
पिहानी चुंगी, हरदोई

प्रबन्धक
श्री बाल कृष्ण गुप्ता
आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज,
पिहानी चुंगी, हरदोई

प्रधानाचार्या
श्रीमती मधु अस्थाना
आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज,
पिहानी चुंगी, हरदोई

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य कन्या इण्टर कॉलेज

गंगोह (सहारनपुर)

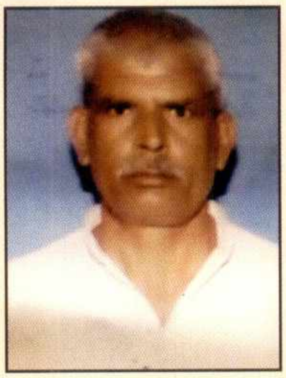

संचालित- आर्य समाज गंगोह, सहारनपुर

बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ
वृक्ष धरा का भूषण है।।

प्रबन्धक
श्री रमेश चन्द्र

अध्यक्ष
श्री जगपाल सिंह

प्रधानाचार्या
डा0 श्रीमती पुष्पा पँवार

शिक्षार्थ आइये ! !! ओ३म् !! स्थापित-1968 सेवार्थ जाइये !!

दयानन्द विद्या मन्दिर

आर्य समाज रोड, बलिया

(उ0प्र0 शासन से मान्यता प्राप्त)

प्रबन्धक
शिव शंकर वर्मा
मो0 : 9807685525

1. सुयोग्य, कमंठ, अनुभवी, निष्ठावान एवं विद्वान शिक्षक/शिक्षाकाओं द्वारा शिक्षण कार्य।
2. विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेमु पंचपदी शिक्षा प्रणाली की योजना।
3. समयानुसार क्रीड़ा - प्रतियोगिता, सांस्कृतिक प्रतियोगिता तथा विषयशः प्रश्न मंत्र प्रतियोगिता का आयोजन।
4. अंग्रेजी, विज्ञान एवं कम्प्यूटर शिक्षा प्रक्रिया पर विशेष ध्यान।
5. निर्धन एवं मेधावी छात्र/छात्राओं के शुल्क-मुक्ति की योजना।

ऋषि निर्माण दिवस पर समर्पित

ठा.धर्मसिंह आर्य

लगा हुआ था हरिद्वार में, बड़ा कुम्भ का मेला है।
साधु, संत, महंतो से, वहाँ आकर बोला चेला है।
इस मेले में कौन है, वो जन करता गड़बड़ झाला है।
गले न जनेऊ, सर नही चोटी, एक लगोटी वाला है।
ओ३म् का झण्डा कर में डंडा, लिए कमण्डल काला है।
संध्या करना बतलाता, कोई तिलक भाल नही माला है।
अपना नाम दयानन्द बोले, बृजानंद का चेला है। साधु, संत, मंहतो से .....
बोले साधु कोई मुस्लिम होगा, इसीलिए नही चोटी है।
मुस्लिम वो नही चेला बोला, बात बड़ी यह मोटी है।
कुरान शरीफ खुदा मुहम्मद की करता भारी खोटी है।
कहता है ये मांसाहारी, खाये गाय की बोटी है।
मुल्ला काजी, ये सब पाजी, खड़ा दे रहा हेला है। साधु, संत, महतो से .....
ईसाई मत का होगा कोई, ऐसे साधु बोले है।
ईसाई वो नही बाइबिल के भी पर्दा खोले है।
ईसू मरियम बाइबिल में कहता बहुत गपोले है।
पोप, पादरी सब घबराये, प्रमाण बड़े अनमोल है।
तो फिर वो जैनी होगा, जो कमाता फिरता पैसा धेला है। साधु, संत, महतो से .....
जैनी भी वो नही सब तीर्थ पाखण्ड बतावै है।
जड़ मूर्ति ईश्वर नही होती वेद प्रमाण सुनावै है।
ईश्वर जन्म नही लेता वो युक्ति से समझावै है।
सर्व विश्व रचयिता का वो ओ३म् का नाम बतावै है।
ईश्वर सब में व्यापक है और सबसे रहै अकेला है। साधु, संत, महतों से ......
तो कोई स्याना, सूना होगा, वेष बना लिया साधु का।
दुनियाँ को बहकाता होगा, लिये पिटारा जादू का।
या कोई राजा रजवाड़े का जासूसी करता होगा।
या किसी के भय से यहाँ मारा-मारा फिरता होगा।
भय तो उसके पास न स्वामी निर्भय रहे वो अकेला है। साधु, संत, महतो से .....
स्याना भी वो नही गुरू जी, कहता कोई भूत नही।
भैरो, भूमि वा भूत, मसानी, कोई कही यमदूत नहीं।
पाषाणों को खिला पिलाते, ईश्वर की कोई सूरत नहीं।
जन्मपत्र को शोकपत्र कहे, ऐसा कोई प्रमाण पत्र नही।
ब्रह्मचारी वो रहे अकेला, कोई साथ न चेली चेला है। साधु, संत, महतो से ......
पाखण्ड खण्डिनी लिए पताका बीच कुम्भ में गाड़ रहा।
पाखण्डों की गड़ी जड़ो को दे-दे प्रमाण उखाड़ रहा।
लाखों की बीच भीड़ में अकेला बबर शेर सा दहाड़ रहा।
वेदों के प्रमाण सुना-सुनाकर सबके होश बिगाड़ रहा।
विद्वानों से शास्त्र जंग में, वो ले जायेगा सेला है। साधु, संत, मंहतो से ....
वेदधर्म के आगे वो बतलाता कोई धर्म नहीं।
यज्ञ, हवन संध्या से बढ़कर कोई शुभ कर्म नही।
वेद ज्ञान के बिन नही जानो, निराकार का मर्म नही।
पुराण भागवत को छोड़ि धर्मसिंह इसमें कोई शर्म नहीं।
वेद, शास्त्र, उपनिषद पढ़ तू अब मत करे झमेला है। साधु, संत, मंहतो से ......

मो. ८००६५७३७३६

www.thearyasamaj.org

युग पुरुषः महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

-डॉ० निरुपमा अशोक
प्राचार्या

यदीयप्रकाशेन सूर्यादिलोकाः प्रकाशं लभन्ते निजालोकशून्याः।
तमीशं समाश्रित्य सौख्याब्धिमग्नं भजे तं दयानन्दमीड्यं मुनीशम्।।
(अपने प्रकाश से रहित सूर्यादिलोक जिसके प्रकाश से प्रकाशित होते हैं उस प्रसिद्ध ईश्वर का आश्रय करके जो सुख के समुद्र में मग्न हुए, ऐसे स्तुतियोग्य मुनीश दयानन्द जी का हम भजन करते हैं।)

भारतीय समाज के उद्धारक, मार्गदृष्टा, सत्यान्वेषी, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म संवत १८८१ विक्रमी में काठियावाड़ प्रॉंत के गुजरात देश धरांधरानामक राज्य की सीमा पर, मच्छ काहाटा नदी के किनारे टंकारा नामक नगर में हुआ। उनका जन्म-नाम मूलशंकर और उनके पिता अम्बाशंकर औदीच्य ब्राह्मण तथा प्रतिष्ठित जमींदार थे। १४ वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने यजुर्वेद-संहिता तथा कुछ अन्य वेदों का अध्ययन कर लिया था। शिवरात्रि के पर्व पर उन्हें सच्चे शिव का प्रबोध हुआ। उन्हें लगा ''पाशबद्धो भवेज्जीवः पाशमुक्तः सदा शिवः'' साथ ही उसी समय ईश्वर का यह आत्मादेश उनके जीवन का परम लक्ष्य बनाः ''इस आर्यावर्त देश के मनुष्य मेरे नाम की निन्दा कर रहे हैं, मेरे गुण, कर्म, स्वभाव को न जान मात्र मेरी मूर्तिपूजा कर रहे हैं। ऐ मूलशंकर तुम उठो ! मनुष्य मात्र को ज्ञान दो।'' इसके पश्चात् उन्होंने निघण्टु, निरुक्त, पूर्व मीमाँसा तथा कर्मकाण्ड की विभिन्न पुस्तकों को सयत्न पढ़ा। विरक्त होकर उन्होंने अंततः गृहत्याग किया। सम्वत् १६०६ में स्वामी योगानन्द तथा उसके पश्चात् ज्वालानन्द पुरी और शिवानन्द गिरी से उन्होंने योग की शिक्षा प्राप्त की। सं० १६११ विक्रमी वर्ष में अनेक स्थानों पर भ्रमण करते हुए विद्या और योग प्राप्त करके सं० १६१२ को ३० वर्ष की अवस्था में पहली बार हरिद्वार कुंभ मेले में सम्मिलित हुए। सं० १११७ विक्रमी में स्वामी विरजानन्द जी से मथुरा में उन्होंने पूर्ण विद्या प्राप्त की। इसके पश्चात् स्वामी जी ने सत् धर्म की स्थापना हेतु विभिन्न स्थानों-आगरा, हरिद्वार, फर्रुखाबाद, कलकत्ता में विभिन्न स्वयंभू धर्माचार्यो से शास्त्रार्थ कर नवीन विचारधारा की स्थापना आर्य समाज के रूप में की। उनके निष्कर्षो में प्रमुख थे- मूर्तिपूजा का विरोध, वेदों की स्थापना, स्त्री शिक्षा का प्रचार, भारतीय समाज की जड़ता का उन्मूलन। स्वमी जी का महत्वपूर्ण योगदान भारतीय संस्कृति और भारतीय धर्म की रक्षा के सन्दर्भ में है। आधुनिक भारत के निर्माताओं में उनका नाम शीर्ष पर है। जीवन पर्यन्त उन्होंने आर्य धर्म के प्रखर रूप को समाज के समक्ष रखने का प्रयास किया और सत्य धर्म पर अडिग रहे। स्वभाषा, स्वसंस्कृति पर गौरव करने की दृष्टि उन्होंने ही दी। अन्त में विक्रमी संवत् १६४० तद्नुसार ३० अक्टूबर सन् १६८३ ई० को स्वामी जी का भौतिक शरीर पंचतत्व मे विलीन हो गया तथापि यशः शरीर से, अपनी शिक्षाओं और जीवन-दर्शन से वे आने वाले युगों को सत्य दृष्टि प्रदान करते रहेंगे। ऐसे युग पुरुष को हमारा नमन।

स्वामी दयानन्द जी द्वारा विरचित साहित्य :- महर्षि दयानन्द जी ने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन भी किया। अपने ज्ञान को ग्रन्थों में अवतरित कर आने वाली सन्ततियों के लिए उन्होंने अद्वितीय हित का संपादन किया। भाषणों, शास्त्रार्थो और विचार चर्चाओं से अवशिष्ट समय का उपयोग उन्होंने जीवन की अंतिम दशाब्दि में किया। उन्होंने कुछ स्वयं ग्रन्थ लिखे और कुछ अपने निरीक्षण में लिखाये। संक्षेपतः उनका विवरण निम्न प्रकार है :-

दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित (मुद्रित) ग्रन्थों का विवरण--

क्र. सं.	नाम ग्रन्थ	मुद्रक-प्रकाशक	प्रकाशन संवत्
१.	संध्या	ज्वालाप्रकाश प्रेस, आगरा	१६२० वि. १८६३ ई.
२.	भागवतखण्डन अपर नाम पाखण्डखण्डन	ज्वालाप्रकाश प्रेस, आगरा	१६२३ वि.१८६६ ई.
३.	अद्वैतमतखण्डन	लाइट प्रेस, बनारस	१६२७ वि. १८७० ई.
४.	सत्यार्थप्रकाश (प्रथम संस्करण)	स्टार प्रेस, बनारस	१६३१ वि. १८७५ ई.
५.	सत्यार्थप्रकाश (द्वितीय संस्करण)	वैदिक मंत्रालय, प्रयाग	१६४१ वि. १८८४ ई.
६.	संध्योपासनादि पञ्चमहायज्ञविधिः	आर्य प्रेस, बम्बई	१६३१ वि. १७६६ शकाब्द
७.	पञ्चमहायज्ञविधिः (संशोधित)	लाजरस प्रेस, बम्बई	१६३४ वि. १८७७ ई.
८.	वेदान्तिध्वान्तनिवारण	ओरियन्टल प्रेस, बम्बई	१६३२ वि. १८७६ ई.
६.	वेदविरूद्धमतखण्डन	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई	१६३१ वि. १६७५ ई.
१०.	शिक्षापत्रीध्वान्तनिवारण	बम्बई	१६३१ वि. १८७५ ई.

www.thearyasamaj.org

११.	आर्याभिविनयः	आर्यमण्डल प्रेस, बम्बई	१९३२ वि. १८७६ ई.
१२.	संस्कारविधिः	एशियाटिक प्रेस, बम्बई	१९३३ वि. १८७७ ई.
१३.	संस्कारविधिः (द्वितीय संस्करण)	वैदिक मंत्रालय, प्रयाग	१९४१ वि. १८८४ ई.
१४.	वेदभाष्यम् (नमूने का अंक)	लाजरस प्रेस, बनारस	१९३३ वि. १८७६ ई.
१५.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	लाजरस प्रेस, बनारस	वैशाख १९३५ वि. १९३४ वि. (१-१४खण्ड)
		निर्णयसागर प्रेस, बम्बई	१९३५ वि. १८७८ ई. (१५, १६ खण्ड)
१६.	ऋग्वेद भाष्य (७।६२।२ तक)	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई	१९३५ वि. १८७७ ई. से
		वैदिक मंत्रालय, काशी, प्रयाग, अजमेर	१९५६ वि. १८९९ ई पर्यन्त
१७.	यजुर्वेद भाष्य	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई	१९३५ वि. १८७८ ई. से
		वैदिक यंत्रालय, काशी,प्रयाग	१९४६ वि. १८८९ ई. पर्यन्त
१८.	आर्योद्देश्यरत्नमाला	चश्मएनूर प्रेस, अमृतसर	१९३४ वि. १८७७ ई.
१९.	भ्रान्तिनिवारण	आर्यभूषण प्रेस, शाहजहांपुर	१९३७ वि. १८८० ई.
२०.	अष्टाध्यायी भाष्य (२ भाग)	वैदिक यंत्रालय, अजमेर	लेखन काल १९३५-३६ वि.
		प्रकाशनकाल :	प्रथम भाग १८८४ वि.१९२७ ई.
			द्वितीय भाग १९९७ वि. १९४० ई.
२१.	संस्कृतवाक्यप्रबोध	वैदिक यंत्रालय, काशी	१९३६ वि. १८७९ ई.
२२.	व्यवहारभानु	वैदिक यंत्रालय, काशी	१९३६ वि. १८७९ ई.
२३.	गोतम अहल्या की कथा	वैदिक यंत्रालय, काशी	१९३७ वि. १८७९ ई. (अनुपलब्ध)
२४.	भ्रमोच्छेदन	वैदिक यंत्रालय, काशी	१९३७ वि. १८८० ई.
२५.	गोकरुणानिधि	वैदिक यंत्रालय, काशी	१९३७ वि. १८८० ई.
२६.	वेदांगप्रकाश (१४ भाग)	वैदिक यंत्रालय, काशी, प्रयाग	१९३६ वि. १८७९ ई. से
			१९४० वि. १८८३ ई. पर्यन्त
२७.	काशीशास्त्रार्थ	वैदिक यंत्रालय, काशी	१९३७ वि. १८८० ई.
२८.	हुगलीशास्त्रार्थ (प्रतिमापूजन विचार)	लाइट प्रेस, बनारस	१९३० वि. १८७३ ई.
२९.	सत्यधर्मविचार (मेला चांदापुर)	वैदिक यंत्रालय, काशी	१९३७ वि. १८८० ई.
३०.	जालंधर शास्त्रार्थ	पंजाबी प्रेस, लाहौर	१९३४ वि. १८७७ ई.
३१.	सत्यासत्यविवेक (बरेली शास्त्रर्थ)	आर्यभूषण प्रेस, शाहजहांपुर	१९३६ वि. १८७९ ई. (उर्दू)
३२.	चतुर्वेदविषयसूची	वैदिक यंत्रालय, अजमेर	२०२८ वि. १९७१ ई.

(नोट - सौजन्य से 'नव जागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती', डॉ० भवानी लाल भारतीय)

स्वामी जी के इन स्वरचित ग्रन्थों के अतिरिक्त उनके शास्त्रार्थ भी पुस्तकों में छप गये हैं। उनके व्याख्या-ग्रन्थ और अनुवादों में 'अष्टाध्यायी भाष्य' ''वेदांग प्रकाश'' तथा वेद-भाष्यों में ''ऋग्वेद'' तथा ''यजुर्वेद'' भाष्य प्रमुख है। इन वेद भाष्यों की भूमिकाएँ अत्यन्त उपादेय हैं। महर्षि के वैदिक ग्रन्थों में 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका उत्तम मानी जाती है। इससे दयानन्द जी की असाधारण योग्यता और मौलिकता का परिचय मिलता है। हिन्दी साहित्य में वेद-भाष्य एक युगान्तकारी घटना है।

वस्तुतः ऋषि दयानन्द वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति, वैदिक सभ्यता के पुनरुद्धारक, आधुनिक भारत के युग पुरुष, आर्य समाज के संस्थापक, मानव-समाज सेवियों के प्रेरणा स्त्रोत, आदर्श महापुरुष थे। भारत के सांस्कृतिक नव जागरण में उनका स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भारतीय जनमानस सदैव उनका ऋणी रहेगा।

भगवानदीन आर्यकन्या स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, लखीमपुर-खीरी।

ऋषि निर्वाण दिवस पर संकल्प ले.....

स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज रूपी दीपक बुझने न दे

–विमल किशोर आर्य वैदिक प्रवक्ता

जलता हुआ एक दीपक हजारों लाखों दीपक जला सकता है परन्तु बुझे हुये हजारो दीपक भी मिलकर एक दीपक को नही जला सकता है स्वामी दयानन्द एक जलते हुये दीपक थे। जिन्होंने आर्य समाज रूपी दीपक स्थापित कर सारे संसार में ज्ञान का प्रचार–प्रसार किया जिससे समाज में अन्धविश्वास और पाखण्ड दूर हो रहा है। स्वामी जी अपने उपदेश में शिक्षा पर अधिक बल दिया उस समय स्त्री तो क्या पुरूष भी शिक्षा से वंचित रहा। महर्षि ने न केवल अपने जीवन भर ही वैदिक धर्म का अमर उपदेश अपने व्यख्यानों प्रवचनों शास्त्रार्थो से एवं उपदेश द्वारा अपने समय के आर्य नर–नारियों तक पहुँचाया अपितु अपनी लेखनी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश संस्कार विधि गौ करुणा निधि जैसे साहित्य को रचा कि जिससे भावी नर–नारी गण अपने अपने जीवनों को उन्नति और पवित्र बनाने में समर्थ हो सकेगे। हमारे ऊपर जो ऋण है उसको चुकाना यदि सम्भव नही तो अत्यन्त कठिन अवश्य प्रतीत होता है।

महर्षि ने आर्य जीवन निर्माण के लिये जो–जो व्यवहारिक धर्मानुष्ठान के कर्त्तव्य कार्ये का प्रतिपादन अपने उपदेश और ग्रन्थों में किया है उन को यदि साधरण कर्मण्य मनुष्य भी नियमपूर्वक करने का अभ्यासी बना रहे तो जीवन पर्यन्त कार्य करने की शक्ति बनी रहना कोई आश्चर्य की बात नही हैं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के उपदेशों से मनुष्यों को बहुत बड़ी शिक्षा प्राप्त होती थी जिससे संयम के साथ नियमपूर्वक यदि व्यवहारिक जीवन मे उतरें शारीकि, आत्मिक और सामाजिक तीनों प्रकार की उन्नति करने में कोई विशेष कठिनाई नही हो सकती स्वामी दयानन्द ने शिक्षा और ब्रह्मचर्य जीवन की महिमा हमारे सम्मुख प्रस्तुत की है। सर्वप्रथम उन्होने स्वंय ब्रह्मचर्य के प्रताप से शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति के उस आदर्श को प्रस्तुत किया जिसकी रचना के लिए अन्य उदाहरण मिलना कठिन है। इसके उपरान्त अपने सदृश पूर्ण ब्रह्मचर्य तेजस्वी वर्चस्वी और विचार शील पथ प्रदर्शक विद्वान तैयार करने के लिये महर्षि ने आचार्य कूल अथवा गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का सविस्तार प्रतिपादन किया इस गुरूकुल शिक्षा प्रणाली की उत्तमता और उपयोगिता के सभी लोग हदय से प्रशंसा करते है अब तो स्वतंत्र भारत राष्ट्र के लिये ब्रह्मचर्य का ब्राहण महारथी क्षत्रिय पुरन्धी देवीयाँ सभेय युवा यजमान के वीर पुत्र कला कौशल विशेषज्ञ वेश्य और कर्मण्य सेवक शूद्रगण सभी को यथोचित शिक्षा का सर्वश्रेष्ट शिक्षा केन्द्र यदि हो सकता है तो वहीं ब्रह्मचर्य आश्रम में जीवनमय गुरूकुल शिक्षा प्रणाली ही है स्वामी दयानन्द के निर्वाण दिवस पर हम सभी आर्य नर नारी ऋषि पद्धति गुरूकुलों में अपने बालक बालिकाओं को शिक्षा देकर ऋषि ऋण से उऋण हो सकतें है और इस प्रकार दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज रूपी दीपक में तन मन धन रूपी तेल देते हुये दीपक जलाये रखें बुझने न दे।

गोमती नगर, लखनऊ
मो0 7565920958

एक बिन्दु श्वेत मढ़ न सकेगा।
एक दीप आँधियों से लड़ न सकेगा।
कोटि कोटि कंठ की पुकार चाहिये,
आज देश को नये विचार चाहिये।।

संकलनकर्ता–**विमल किशोर आर्य**

www.thearyasamaj.org

ऋषि दयानन्द की स्मृति में

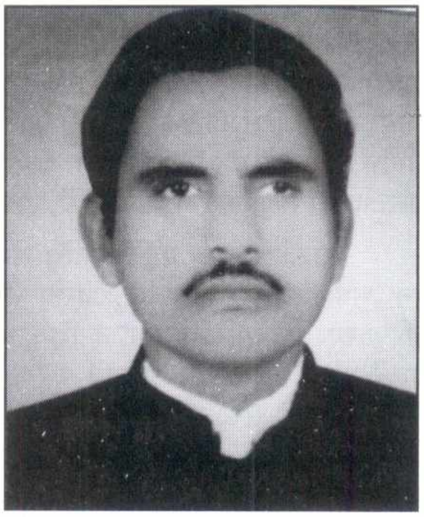

स्व.राधेश्याम आर्य

तिमिराच्छादित इस भूतल पर, ज्ञान प्रदीप कराया।
अज्ञानान्धकारपहारिणी, प्रभा प्रदीप्त कराया।
वेदों की पावन गरिमा से, जन मन किया सहस सम्पृक्त।
वेदामृत का श्रोत बहाकर, किया दग्ध भूतल अभिषिक्त।
आर्य राष्ट्र की तरुणाई में, फूंका जागृति का नव मंत्र।
किया प्रशस्त तुम्हीं ने ऋषिवर! भारत में यह प्रजातंत्र।
स्वतंत्रता की अलख जगाकर, जाग्रत किया जवानों को।
बिखरा करके प्रखर रश्मियाँ- नष्ट किया अज्ञानों को।
देख तुम्हारी ज्ञान प्रभा को, काँप उठा था भूतल तम।
अतर्क्य तर्क शक्ति अजेय सी, कभी नहीं हो पायी कम।
पाखण्डों के सभी गढ़ों के, आगे बढ़कर था जीता।
धर्माडम्बर को ललकार, दानवता पर लगा पलीता।

सत्य सनातन संस्कृति पावन, वेदों को फिर लाए भू पर।
राम-कृष्ण की परम्परा का, हुआ विकास सहज सत्वर।
भारत भू ने ली अंगड़ाई, हुई समाप्त सुषुप्तावस्था।
स्वतंत्रता के लिए लगी फिर, बनने व्यापक बिपुल व्यवस्था।
सदियों से सोया स्वदेश यह, शक्ति संचयन कर जागा।
बढ़ क्रान्ति के पथ पर दृढ़ हो, आर्य सुतों का देश अभागा।
भरा शक्ति दुर्धर्ष तुम्हीं ने, मातृभूमि कें कण-कण में।
जगी त्याग-बलिदान भावना, प्राणों से प्रियतर पण में।
सिंह निनाद तुम्हारा सुनकर, लंदन तक था थर्राया।
बने क्रान्तिदर्शी तुम ऋषिवर, क्रान्ति मार्ग हमको दिखलाया।
सत्य धर्म की जयी पताका, लहरी फिर अवनी-अम्बर में।
प्रत्यावर्तित हुए शाप सब, जन गण मंगलकारी बर में।
नया प्राण, नव जीवन तुमने, दिया धरा को निर्भय होकर।
पिला दिया पीयूष वेद का, विष का सारा कल्मष धोकर।
आज तुम्हारे पद्चिहनों पर, अर्पित है शत-शत वन्दन।
ऋषिवर दयानन्द की स्मृति में युग का है कोटि नमन।

प्रस्तुति-अरूण कुमार आर्य
मुसाफिरखाना, अमेठी

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द का संस्कार-चिन्तन

डॉ० पुष्पा मलिक

भारतीय संस्कृति में मनुष्य को वैयक्तिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर उपयोगी बनाने तथा इहलौकिक व पारलौकिक दृष्टि से उसे सफलता की ओर उन्मुख करने के लिए संस्कारों का विधान किया गया है। संस्कार व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शुद्धि के साधन हैं। ये मनुष्य के जीवन चक्र को व्यवस्थित करने, शरीर तथा मन के स्वस्थ निवास, जीवन में सद्गुणों के आधान एवं अन्तःकरण तथा सर्वांगीण उन्नति, अभ्युदय व निःश्रेष्यस के विधायक के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

संस्कार शब्द की निष्पत्ति सम् उपसर्गपूर्वक कृ धातु से करण या भाव में घत्र् प्रत्यय लगाकर पुनः भूषण अर्थ में सुट् के आगम से होती है। इस प्रकार संस्कार शब्द का व्युत्पत्तिलम्य अर्थ है परिष्किरण एवं परिशोधन। काशिकावृत्ति के अनुसार उत्कर्ष के आधान को संस्कार कहते है।-'' उत्कर्षाधानं संस्कारः। आचार्य चरक ने संस्कार का लक्षण करते हुए कहा है - 'संस्कारों हि नाम गुणान्तराधानामुच्यते। तन्त्रवार्तिक में संस्कार को योग्यता का आधान करने वाला तत्व माना गया है- 'योग्यतां चादधानाः क्रियाः संस्कारा इत्युच्यन्ते।

संस्कारों की जीवन में परम उपयोगिता समझकर युगद्रष्टा एवं भारतीय नवजागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी पुस्तक संस्कार विधि में संस्कारों की महत्ता का निरूपण करते हुए कहा है- जिसके करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते है। इसलिए संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है।

संस्कारों की संख्या के विषय में ग्रन्थों में ऐकमत्य नहीं है। कौशिक गृहसूत्र में १० संस्कार जैमिनि में ११, कौषीतकि, आपस्तम्ब और गोभिल गृह्यसूत्रों में १२, आश्वलायन और मानव गृहसूत्रों में १३ संस्कार स्वीकार किये गये हैं। गौतम ने ४८(४० संस्कार+०८ गुण) संस्कारो की परिगणना की है। व्यास स्मृति एवं मनुस्मृति में संस्कारों की संख्या १६ मानी गई है -

गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तो जातकर्म च।
नामक्रिया निष्क्रमणेऽन्नप्रशनं वपन क्रियाः।।
कर्णवेधो व्रतादेशो वेदारम्भ क्रिया विधिः।
केशान्तः स्नानमुद्वाहो विवाहाग्नि परिग्रहः।। - व्यास स्मृति १.१३.१५

महर्षि दयानन्द ने भी षोडश संस्कार ही स्वीकार किये है। संस्कार विधि के प्रारम्भ में उन्होंने कहा है-

गर्भाद्या मृत्युपर्यन्ताः संस्काराः षोडशैव हि।

उनके अनुसार इन सोलह संस्कारों के नाम निम्नवत् हैं -

१-गर्भाधान २-पुंसवन ३- सीमन्तोन्नयन ४- जातकर्म ५- नामकरण ६. निष्क्रमण ७-चूड़ाकर्म ८- अन्नप्राशन ६- कर्णवेध १०- उपनयन ११- वेदारम्भ १२- समावर्त्तन १३- विवाह १४- वानप्रस्थाश्रम १५- संन्यासाश्रम १६- अन्त्येष्टि।

१- **गर्भाधान - गर्भाधान शब्द का अर्थ है -** गर्भधारण अर्थात् गर्भाशय में वीर्य की स्थापनाः- गर्भस्याऽधानं वीर्यस्थापनं स्थिरीकरणं यस्मिन् येन वा कर्मणा, तद् गर्भाधानम्। (संस्कार विधि) जैसे बीज और क्षेत्र के उत्तम होने से अन्नादि पदार्थ भी उत्तम होते हैं, उसी प्रकार उत्तम, स्त्री-पुरुषों से सन्तान भी उत्तम होती है। वस्तुतः बालक के निर्माण की प्रक्रिया गर्भाधान से ही प्रारम्भ हो जाती है। जिस प्रकार से मकान बनाने के लिए उसकी योजना बनाकर उसके लिए आवश्यक उत्तम प्रकार की सामग्री का होना अनिवार्य है, उसी प्रकार उत्तम, सुयोग्य सन्तान की प्राप्ति के लिए उसके उपादान रज-वीर्य का उत्तम कोटि का होना अनिवार्य है। विवाह के समय कन्या की अवस्था न्यूनतम सोलह वर्ष तथा वर की पच्चीस वर्ष होनी चाहिए। १६ वर्ष से पूर्व स्त्री के गर्भाशय में बालक के शरीर को समुचित रूप से बढ़ने का अवकाश नहीं होता तथा २५ वर्ष की आयु से पहले पुरुष का वीर्य उत्तम नहीं होता। दयानन्द जी ने अपने मत की पुष्टि में सुश्रुत संहिता का प्रमाण दिया है। उन्होंने ऋतुदान के लिए श्रेष्ठ रात्रियों का वर्णन भी संस्कार विधि में किया है।

२- **पुंसवन- पुत्र की प्राप्ति के लिए शास्त्रों में पुंसवन संस्कार का विधान किया गया है -**

गर्भाद् भवेच्च पुंसूते पुंस्त्वरूप प्रतिपादनम् (स्मृति संग्रह) इस संस्कार का समय स्त्री की गर्भस्थिति का ज्ञान होने के दो-तीन माह पश्चात् है। इसमें स्वामी दयानन्द जी ने पारस्कर गृह्यसूत्र का प्रमाण दिया है-

www.thearyasamaj.org

अथ पुंसवनं पुरा स्पन्दत इति मासे द्वितीये तृतीये वा।।

इस संस्कार के अन्तर्गत स्त्री सुनियम, युक्ताहार विहार करे, यह आशा की जाती है। वह गिलोय, ब्राह्मी औषधि तथा सुंठी को दूध के साथ थोड़ा-थोड़ा नित्य खाये।

३- सीमन्तोन्नयन - सीमन्तोन्नयन संस्कार गर्भधारण के उपरान्त चतुर्थ मास में शुक्ल पक्ष में किया जाता था। आश्वलायन गृहयसूत्र में इसे निर्देशित करते हुए कहा गया है- चतुर्थे गर्भमासे सीमन्तोन्नयनम्।। पारस्कर गृहसूत्र में गर्भमास से छठे या आठवें मास में इस संस्कार को सम्पन्न किये जाने का उल्लेख है- पुंसवनवत् प्रथमे गर्भे मासे षष्ठेऽष्ट में वा ।। इस संस्कार का उद्देश्य गर्भवती स्त्री को सन्तुष्ट, प्रसन्न तथा स्वस्थ रखना था, जिससे गर्भ में प्रतिदिन पुष्टता आती जाए। इस अवसर पर उसे खिचड़ी में घृत मिलाकर पति द्वारा खिलाया जाता था।

४- जातकर्म - सन्तानोत्पत्ति के पश्चात् किये जाने वाले कर्म को जातकर्म संस्कार कहा जाता है। बच्चे के जन्म के साथ ही उसमें मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़े, ऐसा प्रयास किया जाता है। इस अवसर पर पिता बालक का स्पर्श करता था और उसे घी व शहद चटाता था। इससे पूर्व पिता सोने की शलाका पर घी व शहद लगाकर बालक की जीभ पर 'ओ३म्' लिखकर उसके दाहिने कान में 'वेदोऽसीति' अर्थात् तेरा गुप्त नाम वेद है, कहता था।

५- नामकरण - जन्म लेने के पश्चात् शिशु का नामकरण एक आवश्यक संस्कार है, क्योंकि लौकिक व्यवहार में उसका सारा उपक्रम उसके नाम के द्वारा ही सम्पन्न होता है। बालक के जन्म के ११वें, १०१ वें दिन अथवा दूसरे वर्ष के आरम्भ में, जिस दिन जन्म हुआ हो इस संस्कार को किये जाने का विधान है। इस संस्कार को सम्पादित करने की धर्मशास्त्रों की व्यवस्था के अनुसार माता बच्चे को स्वच्छ वस्त्र से आच्छादित कर उसके सिर को जल से पवित्र करके पिता की गोद में रख देती है। तत्पश्चात ईश्वर की उपासना, स्वस्ति वाचन, यज्ञ और शान्तिपाठ करके बालक का नामकरण किया जाता है।

६- निष्क्रमण - निष्क्रमण शब्द का अर्थ है घर से बाहर निकलना, जिससे बालक बाह्य जगत् से भी परिचित हो सके, वह बाह्य शीत, उष्ण को सहन करने में समर्थ हो जाये, उन्मुक्त वातावरण में क्रीड़ा कर सके। इस संस्कार का फल आयु की वृद्धि है। यह संस्कार बालक के जन्म के चौथे मास में किया जाता था-

चतुर्थे मासि निष्क्रमणिका सूर्यमुदीक्षयति- तच्चक्षुरिति।। (आश्वलायन गृहयसूत्र)

७- अन्नप्राशन - जब बालक की शक्ति अन्न पचाने योग्य हो जाये, तब यह संस्कार करना चाहिए। यह प्रायः जन्म के छठे मास में किया जाता है। आश्वलायन गृहयसूत्र में कहा गया है- षष्ठे मास्यन्नप्राशनम्। इस अवसर पर घी के साथ चावल अथवा दही और शहद मिश्रित अन्न बालक को खिलाये जाने का विधान है।

८- चूड़ाकर्म - चूड़ाकर्म को केशच्छेदन अथवा मुण्डन संस्कार भी कहा जाता है। गर्भावस्था में केश जरायु के मलिन जल के सम्पर्क में रहने के कारण अशुद्ध रहते हैं। अतः इस संस्कार में इन केशों को मुण्डित करा दिया जाता है। आश्वलायन के अनुसार यह संस्कार शिशु जन्म के तीसरे वर्ष में किया जाना चाहिए- तृतीय वर्षे चौलम्। आचार्य मनु के अनुसार इसे प्रथम अथवा तृतीय वर्ष में करना चाहिए।

९- कर्णवेध - कर्णवेध का अर्थ है कानों में छेद करना। इस संस्कार के अन्तर्गत दोनों कानों तथा नाक में छेद करने का विधान है। यह संस्कार बालक के जन्म से तीसरे या पाँचवे वर्ष करना उचित माना जाता था-

कर्णवेधो वर्षे तृतीये पञ्चमे वा। (आशलालयन गृहयसूत्र)

ऋषि दयानन्द का स्पष्ट मत है कि सद्वैद्य के द्वारा ही कर्ण तथा नासिका वेध करायें जो नाड़ी आदि को बचा के वेध कर सके व कर्णछेद के पश्चात् उस पर ऐसी औषधि लगाये जिससे कान पकें नहीं।

१०- उपनयन - उपनयन का अर्थ है समीप ले जाना अर्थात् शिष्य को गुरू के पास ले जाना। इस संस्कार के उपरान्त अध्ययन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती थी। इस संस्कार के सम्बन्ध में विधान था कि ब्राह्मण का जन्म से आठवें वर्ष, क्षत्रिय का ग्याहरवें वर्ष तथा वैश्य का बारहवें वर्ष में यह संस्कार हो जाना चाहिए। इस संस्कार से परिष्कृत शिष्य को 'द्विज' की संज्ञा दी जाती थी।

११- वेदारम्भ - उपनयन संस्कार के तुरन्त बाद ही अथवा उसके कुछ दिनों बाद वेदारम्भ संस्कार किया जा सकता था। वेदारम्भ में गायत्रीमन्त्र से लेकर सांगोपांग चारों वेदों के अध्ययन की व्यवस्था थी। इस संस्कार में आचार्य सर्वप्रथम शिष्य को गायत्री मन्त्र की दीक्षा देता था। बालक का पिता बालक को ब्रह्मचर्य आश्रम के कर्त्तव्यों से अवगत कराता था। यथा-नित्य सन्ध्योपासन, भोजन के पूर्व शुद्ध जल का आचमन, दुष्कर्मों का परित्याग, दिन में शयन का त्याग, निष्ठापूर्वक वेदाध्ययन, सन्तुलित आहार-विहार इत्यादि।

www.thearyasamaj.org

स्वामी दयानन्द की सम्मति है कि बालक को कम-से-कम २५ वर्ष तक तथा कन्या को १६ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

१२- समावर्तन - स्वामी दयानन्द के अनुसार 'ब्रह्मचर्य व्रत, सांगोपांग वेदविद्या, उत्तम शिक्षा और पदार्थ विज्ञान को पूर्णरीति से प्राप्त होकर विवाह विधानपूर्वक गृहस्थाश्रम को ग्रहण करने के लिए विद्यालय को छोड़कर घर की ओर आना समावर्तन संस्कार है। इस संस्कार के अवसर पर ब्रह्मचारी अपनी मेखला और दण्ड छोड़ देता था और स्नान तथा पूजन के पश्चात् गृहस्थ जैसे वस्त्राभूषण धारण करता था। शिष्य आचार्य के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता था तथा कहता था कि मैं भी आपके समान ही अन्य विद्यार्थियों को कृतकृत्य करूँगा।

१३- विवाह - स्वामी दयानन्द के अनुसार विवाह का प्रयोजन सन्तानोत्पत्ति तथा अपने-अपने वर्णाश्रम के अनुकूल उत्तम कर्म करना था। विवाह से पूर्व वर एवं कन्या की आयु, कुल, शरीर और स्वभाव की परीक्षा अवश्य करनी चाहिए। हिन्दू शास्त्रों में वर्णित आठ प्रकार के विवाहों (ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर गान्धर्व, राक्षस तथा पैशाच) में से प्रथम चार विवाहों को ऋषि दयानन्द ने उत्तम तथा अन्य चार विवाहों को निन्दनीय माना है। विवाह संस्कार की एक महत्वपूर्ण कड़ी 'सप्तपदी' है, जिसमें वर और वधू द्वारा मन्त्रोच्चार के साथ सात बार अग्नि की परिक्रमा की जाती है। वर और वधू दोनों आजीवन एक-दूसरे के प्रति निष्ठावान् रहने की शपथ लेते हैं।

१४- गृहस्थाश्रम (गृहाश्रम)- ऐहिक और पारलौकिक सुख की प्राप्ति के लिए विवाह करके अपनी सामर्थ्य के अनुसार परोपकार करना और नियत काल में यथाविधि ईश्वरोपासना और गृहकृत्य करना, सत्य धर्म में ही अपना तन-मन-धन लगाना तथा धर्मानुसार सन्तानों की उत्पत्ति करना गृहाश्रम संस्कार है। दयानन्द जी ने मनुस्मृति के आधार पर कहा है कि जिस कुल में पति एवं पत्नी परस्पर प्रसन्न रहते हैं, उस कुल का निश्चित रूप से कल्याण होता है। उन्होंने इस आश्रम को सर्वश्रेष्ठ आश्रम माना है क्योंकि यही आश्रम अन्य तीनों आश्रमों का पालन करता है। उन्होंने गृहस्थों के लिए नैत्यिक कर्मो, सन्ध्योपासन, अग्निहोत्र, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेव एवं अतिथि यज्ञ का निरूपण किया है तथा चारों वर्णो के कर्त्तव्यों का भी परिगणन किया है।

१५- वानप्रस्थ - वानप्रस्थ संस्कार का अभिप्राय है वन के लिए प्रस्थान किये जाने से सम्बन्धित संस्कार। जब गृहस्थ के पुत्र का भी विवाह हो जाए तथा उसकी भी एक सन्तान हो जाए तब वह वानप्रस्थ आश्रम स्वीकार करके वन में निवास करे। वानप्रस्थी अपना समय स्वाध्याय तथा आत्म-चिन्तन में व्यतीत करे। व्यावहारिक दृष्टि से भी युवा पुत्र एवं पुत्रवधू के लिए स्वतः कर्मभूमि को रिक्त कर उन्हें जीवन पथ पर अग्रसर करने की दृष्टि से यह संस्कार श्रेष्ठ है।

१६- संन्यास - संन्यास शब्द का अर्थ है सम् अर्थात् सम्यक् रूप से न्यास (त्याग)। अभिप्राय यह है कि मोह, माया, लोभ आदि के आवरण को पक्षपात रहित होकर वीतराग भाव से त्यक्त जीवन बिताना ही सन्यास है। संन्यासी से अपेक्षा की गई है कि वह जीने में आनन्द और मृत्यु में दुःख न माने। वह सदैव ईश्वर का स्मरण करता रहे तथा सत्यविद्या के प्रचार से लोगों को सुख पहुँचाए। संन्यासी जगत् के सम्मान को विष समझे तथा अपमान को अमृत।

१७- अन्त्येष्टि - जीवन का यह अन्तिम संस्कार है, जिसके द्वारा मनुष्य ऐहिक जीवन का अन्तिम अध्याय पूर्ण करता है। दयानन्द जी का कथन है कि जब किसी की मृत्यु हो जाए, तब यदि पुरुष हो तो पुरुष और स्त्री हो तो स्त्री शव को स्नान कराएँ। शव का चन्दन से लेप कर उसे नवीन वस्त्र धारण कराएँ। शव को श्मशान में ले जाकर वेदी पर रखकर वेदमन्त्रों के साथ उसका अग्नि संस्कार कर दें। शवदाह के तीसरे दिन मृतक का कोई सम्बन्धी श्मशान में जाकर चिता से अस्थियाँ उठाकर श्मशान में कहीं रख दे। इसके आगे मृतक के लिए कुछ भी कर्त्तव्य कर्म नहीं है।

उपर्युक्त विवरण से यह निष्कर्ष प्रतिपादित किया जा सकता है कि 'संस्कार विधि' में निरुपित षोडश संस्कार वैज्ञानिक, तर्कसम्मत, कल्याणकारी तथा मानव जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त कराने वाले हैं।

एसो० प्रो०/अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
आर्य कन्या स्ना० महाविद्यालय
लखीमपुर-खीरी

मैं संन्यासी हूं, तुम्हारे किसी भी अत्याचार से चिढ़ तुम्हारा अनिष्ट चिन्तन नहीं करूँगा। जाओ, ईश्वर तुम्हें सुमति प्रदान करे।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

दूरभाष-0532-2413069

आर्य कन्या डिग्री कॉलेज

संघटक - इलाहाबाद विश्वविद्यालय

मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के यशस्वी प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी के नेतृत्व में आर्य समाज चौक, प्रयाग द्वारा संचालित **आर्य कन्या परास्नातक कालेज, आर्य कन्या इण्टर कालेज, आर्य कन्या इण्टर कालेज अंग्रेजी माध्यम** तीनों विद्यालय लगातार स्वामी दयानंद जी के आदर्शों एवं विशाल प्रांगण एवं सिद्धान्तों के अनुसार चल रहा है, 1905 में आर्य कन्या इण्टर कॉलेज खपडैल से शुरू होकर आज कर्मचारियों द्वारा संचालित हो रहा हैं, यहां का परीक्षाफल शतप्रतिशत रहता हैं वर्ष 2015-2016 में भी हाईस्कूल परीक्षाफल भी शतप्रतिशत रहा है एवं चालीस बच्चे विशेष योग्यता से उत्तीर्ण हुए एवं इण्टर कालेज का परीक्षा फल भी शतप्रतिशत रहा हैं एवं पैंतीस बच्चे विशेष योग्यता से उत्तीर्ण हुए आर्य कन्या इण्टर कालेज में हर शनिवार को शिक्षिकायें एवं बच्चे यज्ञशाला में हवन करते है साथ ही साथ विद्यालय में अन्य सामाजिक, संस्कृतिक, साहित्य एवं वैज्ञानिक क्रिया कलाप प्रत्येक वर्ष होता रहता है। जिसमें जिला या मण्डल ही नहीं अपितु राज्य स्तर पर भी बच्चें भाग लेकर पुरस्कार ग्रहण कर विद्यालय का नाम रोशन करते है।

सन् 1973 मं छात्राओं के उच्च शिक्षा हेतु डिग्री कालेज की स्थापना हुई आज डिग्री कालेज अपने विशाल प्रांगण के साथ ही साथ छात्राओं की उच्च शिक्षा हेतु परास्नातक विद्यालय का रूप ले चुका है जिसमें हजारों की संख्या में छात्रा विभिन्न विषयों में शिक्षा ग्रहण कर रही हैं।

पंकज जायसवाल
प्रबन्धक / चेयरपर्सन
आर्य कन्या इण्टर कालेज / पी.जी.कालेज
उप मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ
मो. 9415365576

तारा चन्द वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज

वैदिक पुत्री पाठशाला इण्टर कॉलेज, मुजफ्फर नगर

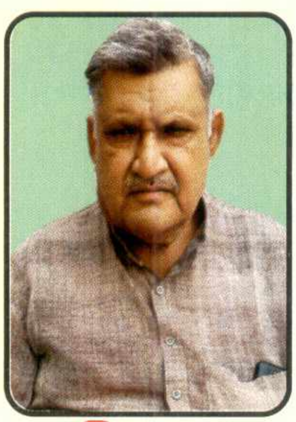

अरविन्द कुमार
प्रबन्धक

डी०ए०वी० पी०जी० कालेज-बुढ़ाना, प्रधानाचार्य- **डॉ. प्रदीप कुमार**

डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल-बुढ़ाना, प्रधानाचार्या-**श्रीमती रेखा त्यागी**

डी० ए० वी० इण्टर कालेज- बुढ़ाना-मुजफ्फर नगर, प्रधानाचार्य-**धर्मवीर सिंह**

आर्य कन्या पाठशाला-बुढ़ाना, प्रधानाचार्या-**श्रीमती अरुणा आर्या**

(उपरोक्त सभी विद्यालय मान्यता प्राप्त)

बेटी पढ़ाओं-बेटी बचाओं

www.thearyasamaj.org

॥ स्वस्ति पन्थामनुचरेम ॥

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा

जनपद–पीलीभीत, उ.प्र.

कार्यालय आर्य समाज–वीसलपुर

ज्ञानेन्द्र सिंह 'ज्ञानी'	**राजेन्द्र प्रसाद मिश्रा**	**ओम प्रकाश आर्य**
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

स्टेशन रोड, आर्य समाज पीलीभीत, जनपद पीलीभीत

तेज नरायण	**करुणा शंकर सक्सेना**	**इं. धर्मवीर आर्य**
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

आर्य समाज, पूरनपुर,

पीलीभीत

जनपद–पीलीभीत, उ. प्र.

आर्य समाज पूरनपुर की तरफ

दीपावली विशेषांक की हार्दिक शुभ कामनाएँ

शिवपाल सिंह	**महेन्द्र अग्रवाल**	**रामनिवास सिंह**
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदानी गीत

-कड़क देव आर्य
भजनोपदेशक

टेक - राजऋषि जी गये जोधपुर रूके ना रोके से।
उनको हलाहल दे दिया विष हाय रे धोखे से।
माना कि हमे ज्ञान दे गया वो तर्क प्रमाण दे गया वो।। टे०

१-कली-दूध कटोरा दे दिया, जगन्नाथ ने रात में।
ऋषिवर ने वो पी लिया फैल गया विषगात में।
धीरे से बोले ऋषि समझ गया हूँ बात में।
आज हमें क्या दे दिया पीड़ा हो रही माथ में।
अपने पास बुलाया था। सकल भेद खुलवाया था।
मुरझाया था गात ऋषि के फफड़ गये फोड़े से। उनको हलाहल दे १

२क- ऋषि राज प्रसन्न थे जो दुःख हुआ फरेब से।
रू० पाँच सौ दे दिया उस पापी को जेब से।
मन में कुछ सोचा नहीं भाव कुछ बदले बसे।
भगा दिया उसको जभी दया करी स्वमेव से।
यहाँ से चला अलग जा तू। सीधे मार्ग लगजा तू।
भगजा तू नेपाल देश को अपने मोखे से।। उनको हलाहल दे दिया.........२

३क- ऋषिराज सोचन लगे लगा ध्यान भगवान से।
ओम् शब्द बोला जभी अपनी मधुर जुबान से।
काम अधूरा रह गया वैदिक धर्म प्रचार।
स्वतन्त्र भारत ना हुआ स्वप्न मेरा साकार।
मुखमण्डल सब चहक रहा। अंगारा सा दहक रहा।
देख रहा गुरुदत्त नास्तिक एक झरोके से। उनको हलाहल दे दिया ३

४क.- उसी काल गुरुदत्त की श्रद्धा बढ़ी अपार।
चरणों में सिर धर दिया ऋषि के मरती बार।
जड़ चेतन जो दीखता नाशवान संसार।
ऋषि मुनि धर्मात्मा बचा ना कोई नरनार।
मुझे प्रभु प्रत्यक्ष जचा। पक्ष नहीं निर्पक्ष जचा।
कड़क देव ना बचा कोई भी मौत के, झोके से।। उनको हलाहल दे ४

-गिनौरा नगली, बुलन्दशहर
मो. ६६१७१०४६६७

www.thearyasamaj.org

सत्यतावादी दयानन्द

-रूपचन्द्र दीपक

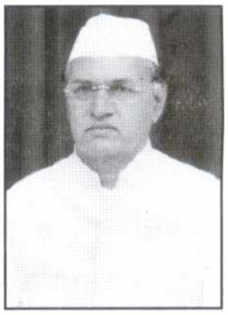

''ऋषति गच्छति प्राप्नोति जानाति वा स ऋषिः, मन्त्रार्थद्रष्टा वा।'' (उणादिकोषः, पाद-४, सूत्र-१२१)। इस परिभाषा से दयानन्द को ऋषि और आदरार्थ महर्षि कहा गया है। महर्षि दयानन्द एक वेदवित्, धर्मवित, दर्शनवित्, शिक्षावित्, ईश्वरभक्त, राष्ट्रभक्त, मानवप्रेमी, समाज-सुधारक और सर्वांग-सुन्दर योगी के रूप में हमारा सर्वांगीण मार्गदर्शन करते हैं। आइए, हम उनके मूल्यांकन का विनम्र प्रयास करें।

ईश्वर का स्वरूप

महर्षि दयानन्द से पहली सहस्राब्दियों में ईश्वर के स्वरूप पर अस्पष्टता थी। किसी ने कहा ईश्वर नहीं है, किसी ने कहा कंकड़ भी ईश्वर है, किसी ने कहा ब्रह्म और ईश्वर में भेद है, किसी ने कहा ईश्वर को आँखों से देखा जा सकता है, किसी ने कहा ईश्वर दुर्गन्धयुक्त पदार्थो में नहीं है, किसी ने कहा भगवान् भक्तों के वश में है, इत्यादि। महर्षि दयानन्द की शिक्षायें पढ़कर स्पष्ट हो जाता है कि ईश्वर न किसी पर रीझता है, न किसी से खीझता है। वे आर्य समाज का दूसरा नियम बनाते हुए कहते हैं कि ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान् न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

वेद धर्मोपदेष्टा

वैदिक धर्म ईश्वर-प्रोक्त है। ईश्वर ने सब मनुष्यों के पढ़ने-पढ़ाने जानने और पालने के लिए वेद दिये हैं। वेद-धर्म ही आदि काल से मानव-धर्म के रूप में चलता आया है। महर्षि दयानन्द अपनी पुस्तक 'वेदविरूद्धमतखण्डनम् में कहते हैं कि ''मतमस्माकं खलु वेदा नान्यत्'' अर्थात् हमारा मत 'वेद' है, कोई अन्य नहीं। वैदिक धर्म से ही बाद में सम्प्रदाय-पर सम्प्रदाय बनते चले गये। सन्दर्भित पुस्तक में महर्षि आगे कहते हैं कि ''सम्यक् प्रकृष्टतया हि दग्ध-धर्मज्ञान जना भवन्ति येषु ते सम्प्रदायः'' अर्थात् सम्प्रदाय वस्तुतः सम्प्रदाय है, वे लोगों के धर्म और ज्ञान को अच्छे प्रकार नष्ट कर देते हैं। इस कारण महर्षि ने समस्त सम्प्रदायों का खण्डन किया है। उन्होंने लोकप्रिय भक्त जनों की भी आलोचना की क्योंकि जाने- अनजाने उनके सम्प्रदायों ने भारतीयों को वेद से कुछ और दूर कर दिया है। वैदिक धर्म में सर्वोपयोगी उभय-सिद्धान्तों का समावेश है और सार्वभौम सार्वकालिक नियमों का प्रतिपादन है।

सत्यतावादी दर्शन

दर्शन के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द का योगदान अन्यतम है। 'दृश्यतेऽनेनेति दर्शनम्' परिभाषा से सम्यक् दिखाने वाली दृष्टि ही दर्शन है। परन्तु २-३ हजार वर्षो में दर्शन ने हमें सम्यक् नहीं दिखाया, भ्रमपूर्ण दिखाया। इसके फलस्वरूप दर्जनों वाद बन गये, जैसे-बहुदेवतावाद, एकैकाधिदेववाद, उच्छेदवाद, विज्ञानवाद, अनात्मवाद, शून्यवाद, विवर्तवाद, अद्वैतवाद, विशिष्टताद्वैतवाद, भेदाभेदवाद, द्वैतवाद, इत्यादि। इन सबमें सत्य का अंश १ से ६६ प्रतिशत के बीच है। दर्शन में तो १०० प्रतिशत सत्य होना चाहिए। यह कार्य महर्षि दयानन्द ने किया है। उन्होंने ईश्वर, जीव और जगत् नामक तीन तत्वों को शून्य, एक अथवा दो न बताकर तीन बताया है, अर्थात् इसे त्रैतवाद कह सकते हैं। इसी प्रकार मोक्ष होने पर जीव का ईश्वर में लय नहीं बताया अपितु मुण्डक उपनिषद् के आधार पर पुनरागमन बताया है। इसका हेतु यह है कि जीव के सान्त कर्मो का अनन्त फल नहीं हो सकता। यह पुनरागमन परान्त काल के पश्चात् होता है। परान्त काल की गणना इस प्रकार है -

१. दिव्य दिवस - सृष्टि की सम्पूर्ण अवधि = ४३२ करोड़ वर्ष
१. दिव्य रात्रि - प्रलय की सम्पूर्ण अवधि = ४३२ करोड़ वर्ष
१. दिव्य दिन - सृष्टि प्रलय का एक चक्र = ८६४ करोड़ वर्ष
१. दिव्य वर्ष - ३६० चक्र = ३६० X ८६४ करोड़ वर्ष
१०० दिव्य वर्ष - परान्त काल = ३६०००x८६४ करोड़ वर्ष

जो वस्तु जैसी है, जितनी है, महर्षि दयानन्द ने उसे वैसी और उतनी बताया है। जैसी-जितनी नहीं है, उसे कहा कि वैसी-उतनी नहीं है। सत्य को सत्य कहना सीमित वाद नहीं है। तथापि इसे शब्दों में बाँधने के लिए सत्यतावाद कह सकते हैं।

शिक्षा का पाठ्यक्रम

बालक को विद्वान् धार्मिक और परिपक्व बनाना शिक्षा एवं शिक्षक का दायित्व है। महर्षि दयानन्द ने अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में व्यवस्था दी है कि शिक्षा गुरूकुलीय पद्धति से होनी चाहिए, प्रत्येक बालक-बालिका के लिए शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए, यह शिक्षा धनी-निर्धन सबकी समान होनी चाहिए। और सबके लिए निःशुल्क भी होनी चाहिए। यदि शिक्षा का शुल्क एक रूपया हो तो भी सब बालक नहीं पढ़ सकते। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश की पठन पाठन विधिः में २१ वर्ष का पाठ्यक्रम भी विस्तार से दिया है। उन्होंने हिन्दी भाषा की पुस्तकें और पुराण आदि ग्रन्थ पढ़ने को मना किया है। यह विद्यार्थियों के लिए कहा है। वेद के विद्वान और राष्ट्र के नीति-निर्धारक तो सभी कुछ पढ़कर उत्तम व्यवस्था कर सकते हैं। महर्षि ने संसार को विशाल साहित्य भी दिया है। जो वेदभाष्य, व्याकरण-ग्रन्थ, संस्कारविधिः सम्यार्थप्रकाशः आदि के रूप में है और सबके लिए पठनीय है।

वर्ण और आश्रम

मानव की सर्वांगीण उन्नति और सुख-समृद्धि हेतु भारत के प्राचीन ऋषियों ने ४ वर्णो और ४ आश्रमों की व्यवस्था की थी। वर्ण-व्यवस्था 'समाज' को पूर्ण बनाने के लिए थी और एक परिवार में अनेक वर्ण हो सकते थे। आश्रम-व्यवस्था 'व्यक्ति' को पूर्ण बनाने के लिए थी और वह क्रमशः चारों आश्रमों में रहता था। आज कोई शब्द-व्यापार तो कितना ही कर ले किन्तु धर्मार्थ काममोक्ष का अर्जन वर्णाश्रम-व्यवस्था के बिना नहीं हो सकता।

आजकाल वर्ण-व्यवस्था का स्थान जन्मगत जाति-व्यवस्था ने ले लिया है, जो ऋषि-मुनियों को अभीष्ट न था। भला जन्मगत व्यवस्था कैसे बुद्धिसम्मत हो सकती है? आश्रम-व्यवस्था सिकुड़ गई है, तथापि सैकड़ों व्यक्ति श्रेष्ठ संन्यासी के रूप में दर्शनीय हैं। महर्षि दयानन्द विद्यामार्गी होने से ब्राह्मण थे। उन्होंने किसी वर्ण को छोटा न समझा, सबको वेद पढ़ने का अधिकारी बताया और राजा प्रजा को उचित मार्गदर्शन दिया। वे ब्रह्मचारी-सन्यासी थे। उन्होंने ब्रह्मचर्य पर तो बल दिया ही, गृहस्थों को भी प्रेमपूर्वक रहने और उत्तम सन्तान पाने का वैज्ञानिक उपदेश किया। वर्णाश्रम-व्यवस्था को पूर्ण प्रतिष्ठापित करने के लिए आर्ष मेघा की आवश्यकता है।

राष्ट्र में राजनीति

राष्ट्र को उन्नत बनाने और बनाए रखने की नीति ही राजनीति कहलाती है। अच्छी राजनीति के लिए विरोधी गुणों का समन्वय आवश्यक होता है, यथा-बुद्धि और श्रम, अध्यात्म और विज्ञान, शक्ति और शान्ति, विद्या और धन, दया और दण्ड, शास्त्र और शास्त्र, संगीत और युद्ध, साधुगण और सेना, इत्यादि। यदि एक की अतिशय वृद्धि और दूसरे की उपेक्षा हो जाए तो राष्ट्र की एकता एवं समाज की समरसता खण्डित हो जाती है। मध्यकालीन भारतवर्ष में ऐसा हो चुका है।

परन्तु महर्षि दयानन्द समाधिमान् सन्यासी होने के साथ प्रखर राष्ट्रचिन्तक भी थे। उन्होंने क्षत्रिय-वर्ण अर्थात् भारत राष्ट्र के नेतृत्व-वर्ग को वीरता और विजय की राजनीति सिखायी। अपने प्राचीन गौरव की याद दिलाते हुए शिल्प-कला की आवश्यकता बतायी और विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने के लिए प्रबल प्रेरणा दी। उनके ग्रन्थों आर्याभिविनयः और सत्यार्थ प्रकाश में भारत के चक्रवर्ति-राज्य एवं स्वराज की पुनर्स्थापना की कर्म-शिक्षायें दी गई हैं। वर्तमान भारत के निर्माण में उनका प्रमुख स्थान है।

यज्ञयोगमय जीवन

यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु परिभाषा से यज्ञ के मुख्य अर्थ हैं- देवपूजा, संगतिकरण और दान। महर्षि दयानन्द ने प्रतिक्षण ईश्वर को सर्वोपरि रखा, पवित्र मन से ऋषियों का अनुसरण और जन सामान्य का मार्गदर्शन किया, वे अहर्निश अविद्या के नाश और विद्या की वृद्धि में लगे रहे। निस्सन्देह उनका जीवन यज्ञमय था।

गीता के अनुसार- ''निर्द्वन्द्वो नित्यसच्चस्थः'' (२.४५) वे मान-अपमान, शीत-उष्ण और योग-क्षेम में निर्द्वन्द्वथे, सदैव ईश्वर में स्थित रहे, ''समत्वं योग उच्यते'' (२.४८) हानि-लाभ, जय-पराजय और जीवन-मरण की विपरीत स्थितियों में समवस्था को प्राप्त थे, सन्तुष्टः सततं योगी'' (१२.१४) प्रत्येक काल मे आत्म-सन्तुष्ट रहे। वे योगः समाधिः और योगः कर्मसु कौशलम्, दोनों दृष्टियों से योगमय जीवन के स्वामी थे।

महर्षि दयानन्द स्वार्थ से मुक्त थे, तथापि भारत के उत्थान के लिए जीवन-भर संघर्ष करते रहे। किसी ने व्यक्तिगत पीड़ा पहुँचायी तो क्षमा कर दिया, परन्तु भारतीय संस्कृति पर आक्षेप किया तो सिंहवत् धराशायी कर दिया। निज हितार्थ सम्भवतः एक श्वास ने लिया और जनहितार्थ प्राण उत्सर्ग कर दिये। ऐसे सत्यजीवी वेदाचारी योगी को हम सूक्ष्मता से समझें, निष्ठापूर्वक अनुसरण करें और भारतीय राष्ट्र एवं समाज को पुनः उन्नत बनाएँ।

६१०५, पतंजलि योगपीठ फेज-२,
हरिद्वार-२४६४०५ (उत्तराखण्ड)

www.thearyasamaj.org

बैनीसिंह विद्यावती इण्टर कॉलेज, बालूगंज आगरा

मान्यता प्राप्त अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालय, फोन नं0 : 0562-2463538

- शिक्षा, योग्य, अनुभवी प्रबंध समिति एवं अध्यापकों की टीम
- सभी अध्ययन कक्ष बड़े, हवादार पंखो से परिपूर्ण
- पीने के लिए आर.ओ. का फिल्टर्ड पानी
- प्रार्थना व खेलने के लिए दो मैदान
- जनरेटर की व्यवस्था
- पुस्तकालय की उचित व्यवस्था
- वाहनों के स्टैण्ड की उचित व्यवस्था
- कम्प्यूटर लैब की व्यवस्था
- प्रयोगात्मक क्रिया हेतु दो लैबों की व्यवस्था
- सभी कर्मचारियों का सचेत व कर्मठ होना
- माइक सिस्टम
- अग्निशमन यंत्र
- शिक्षकों के लिए स्टाफ कक्ष्ज्ञ
- साफ सुथरा वातारण

अध्यक्ष- श्री प्रमोद कुमार गुप्ता प्रबन्धक - श्री महेन्द्र कुमार आर्य प्रधानाचार्य - श्री विजेन्द्र सिंह

भगवानदीन आर्य कन्या इण्टर कालेज

महर्षि दयानन्द मार्ग, लखीमपुर-खीरी

महोदय,

इस विद्यालय का शुभारम्भ 05 फरवरी 1919 में संस्थापक पं0 श्री भगवानदीन मिश्र जी के द्वारा 12 छात्राओं के साथ प्रारम्भ किया गया और स्व0 श्रीमती गोदावरी देवी जी (स्वतंत्रता संग्राम सेनानी) को विद्यालय की प्रथम प्रधानाचार्या होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 12 कलियों का यह पौधा अनवरत रूप से शाखाओं तथा उपशाखाओं के साथ पुष्पित-पल्लवित होता हुआ विशाल वटवृक्ष के रूप में इण्टर कालेज एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

आज जिस रूप से यह विद्यालय शोभित है इसके पीछे स्व0 श्रीमती सुशीला देवी जौहरी, भूतपूर्व प्राचार्या तथा अनेक शिक्षिकाओं व आर्य समाज लखीमपुर के कर्मठ कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम का इतिहास नींव के पत्थर के रूप में जुड़ा है। इस विद्यालय को सन् 1937 में एंग्लोवर्नाक्यूलर, सन् 1945 में हाईस्कूल तथा सन् 1948 में इण्टरमीडिएट की मान्यता प्राप्त हुई।

शिक्षण व्यवस्था उच्चकोटि की होने के कारण यह विद्यालय छात्राओं एवं अभिभावकों के आकर्षण का बिन्दु बना हुआ है। विद्यालय में माध्यमिक शिक्षा परिषद् के मानकों के अनुसार सभी शिक्षण साधन उपलब्ध हैं। सन 1990 से शासन की योजना के अन्तर्गत विद्यालय में सचिवीय पद्धति व नर्सरी ट्रेड की कक्षायें भी सफलतापूर्वक चलायी जा रही हैं।

समय-समय पर छात्राओं के चहुमुखी विकास के लिए तरह-तरह के शैक्षिक कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन विद्यालय की प्रधानाचार्या एवं शिक्षिकाओं तथा कर्मचारियों के सहयोग से किया जाता है। छात्राओं के शैक्षिक विकास हेतु विद्यालय वचनबद्ध है।

(प्रज्ञान्शु बरनवाल)
प्रबन्धक
भगवानदीन आर्यकन्या इण्टर कालेज,
लखीमपुर-खीरी।

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती का महाप्रयाण

–वेदारीलाल आर्य

अपने सद्गुरु स्वामी बिरजानन्द सरस्वती से दीक्षा लेकर महर्षि ने भारत की दुर्दशा ग्रस्त हिन्दू समाज के उत्थान हेतु प्रस्थान किया। महर्षि दयानन्द ने पुण्य पुरातन संस्कृति और ज्ञान के भण्डार वेदों का आश्रय लिया। क्योंकि गुरूवर की आशा थी कि केवल आर्ष ग्रन्थों का ही आश्रय अनार्ष ग्रन्थों की तरफ भूलकर भी नही जाना वेद ही स्वतः प्रमाण है। भारत की तत्कालीन अधोगति का कारण उन्होंने स्पष्टतः अपने उन्नत अतीत के प्रति अश्रद्धा को ही माना। उन्होंने देखा कि लोग व्यर्थ की बातों में उलझे हुए हैं। मतमतान्तरों की कलुषित छाया समाज को खा रही हैं जाति प्रथा, छुआछूत, अनमेल विवाह, बाल विवाह, अशिक्षा, नारी का अपमान दूसरे धर्मावलम्बियों द्वारा निरन्तर हिन्दु धर्म रूपी रस्सी को काटकर छोटा किया जा रहा है। महर्षि दयानन्द हिन्दु समाज की इस दुर्दशा पर अनेक बार रोये भी। अतः उन्होंने लोगों का आहवान किया कि वेद की ओर लौटो क्योंकि इस देश जाति का ही नही अपितु समस्त विश्व का कल्याण वदे मार्ग पर ही चल कर ही किया जा सकता है। ऋषि की इस गम्भीर गर्जना से संसार की आँखे खुल गयी। मानव मात्र के लिये उनके प्रेम, अदम्य उत्साह, प्रबल पुकार और ब्रह्मचर्य के तेज ने लाखों लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया। आश्चर्य होता है कि आज से एक सौ पचास वर्ष पूर्व सहायकों का अभाव था,अखबारों की सहायता न थी, पर विरोध अपार था ऐसी विषम परिस्थिति में भी महर्षि दयानन्द थोड़े समय में ही इतना अधिक काम कर गये कि उन्होंने संसार में क्रान्ति मचा दी। अल्पकाल में ही उन्होंने वेद भाष्य किया और अपने अमरग्रन्थों सत्यार्थ प्रकाश की रचनाकर संसार की सभी अवैदिक मतों की पोल खोलकर उनकी वास्तविकता से सभी को परिचित कर दिया। इसके अतिरिक्त संस्कार विधि गोकरूणानिधि आदि अनेक समाजोंपयोगी ग्रन्थों की भी रचना की। विधर्मियों से सैकड़ों शास्तार्थ किये, हजारों मीलो की यात्रा की। चौदह बार विषपान किया। पर संसार को आर्य समाज रूपी अमृतबल्लरी दे गये। सारा विश्व ऋषि के इस महान उपकार के लिये कृतज्ञ है। कार्तिक मास के कृष्णपक्ष के अन्त और शुक्लपक्ष का आदि अमावस्या मंगलवार संवत् तीस अक्टूबर 1883 में सांयकाल छःबजें अजमेर नगर में ऋषि दयानन्द ने हे दयामय, हे सर्वशक्तिमान तेरी यही इच्छा हैं तो तेरी इच्छा पूर्ण हो, यह कहते हुए महाप्रयाण किया। संयोग से उस दिन दीपावली का त्योहार भी था संयोग ही है किं इस वर्ष भी 30 अक्टूबर को दिपावली का त्योहार है।

58 प्यारे लाल नगर झाँसी 28403
मो0: 09473937138

अपनी भाषा में वार्त्तालाप करना ही उत्तम है। स्वदेशियों में बैठकर विदेशी भाषा बोलने में लग जाना, भला प्रतीत नहीं होता, प्रत्युत ऐसा करना भद्दा लगता है और इसमें घमण्ड भी प्रकट होता हैं।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

133वाँ महर्षि निर्वाण एवं देवता परिज्ञान

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

लोक में ३३ करोड़ देव = देवता प्रसिद्ध हैं। इनका अतिशय महत्त्व है इनके मनन, भजन, पूजन के अनेकों विधि विधान भी निर्दिष्ट है। पर लोक की यह ३३ करोड़ देवता की मान्यता न बुद्धि में जमती है न प्रत्यक्ष दीखती है। लोक प्रसिद्ध ३३ करोड़ देवताओं का परिगणन न वेद में प्रतिपादित है, न उनका वैदिक शास्त्रों में प्रतिपादन है। वेद व वेदादि शास्त्रों में तो देवताओं की संख्या ३३ व ३४ निर्दिष्ट है। महर्षि दयानन्द ने इन वेदोक्त ३३+१=३४ देवों का ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदविषयविचारः प्रकरण में विस्तार से व्याख्यान किया है। यथा -

वेदों में ३३+१=३४ देव

वेदों में ३३+१=३४ देवों का प्रतिपादन है। एतद् द्योतक मन्त्र है -

त्रयस्त्रिंशद्देवा अंगे सर्वे समाहिताः।

स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।। ऋ.भा.भू.वेदविषय., पृ.६८।।

अर्थात् यस्य अंगे= जिस ईश्वर के जगत् रूप अंग में, सर्वे=सब, त्रयस्त्रिंशद्देवाः=३३ देव, समाहितः= इकट्ठे स्थित हैं, तम्= उस, स्कम्भम्= धारक ३४ वें देव को, ब्रूहि=कहो, सः=वह, कतमः स्वित् एव=अतिशय सुखस्वरूप वाला ही है।

इस मन्त्र में सुस्पष्टरूपेण १ परमात्मदेव व अन्य ३३=३४ देवों का प्रतिपादन है। वेदों में अन्य भी अनेकों मन्त्र हैं, जिनमें ३३+१=३४ देवों का सुस्पष्ट वर्णन है।

ब्राह्मणग्रन्थों में ३३+१=३४ देव

महर्षि दयानन्द ने ब्राह्मणग्रन्थों में निर्दिष्ट ३३ देवों का उद्धरण देते हुए ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदविषयविचार प्रकरण में लिखा है -

त्रयस्त्रिंशत्त्वेव देवा इति, कतमे ते त्रयस्त्रिंशदित्यष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्यास्त एकत्रिंशदिन्द्रश्चैव त्रयस्त्रिंशाविति।।

.... अग्निश्च पृथिवी च वायुश्चान्तरिक्षं चादित्यश्च द्यौश्च चन्द्रमाश्च नक्षत्राणि चैते वसवः।।

.........दशमे पुरुषे प्राणा आत्मैकादशः..........रुद्राः।

.... द्वादश मासाः संवत्सरस्यैत आदित्याः।

.... स्तनयित्नुरेवेन्द्रो, यज्ञः प्रजापतिरिति।

.... यदयमेक एवं पवनेऽथ कथमध्यर्ध इति? यस्मिन्निदं सर्वमध्याध्नोत्तेनाध्यर्ध इति। कतम एको देव इति?स ब्रह्म त्यदित्याचक्षते।।

शत.ब्रा.१४/६/६/३-७,१०।।

ऋ.भा.भू.वेद विषय.पृ.६८-६६।।

अर्थात् देव तो ३३ ही हैं। वे ३३ देव कौन है?८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य ये ३१ हुए, इन्द्र और प्रजापति ये ३३ हुए। अग्नि, पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्यौ, चन्द्रमा और नक्षत्र ये ८ वसु देव हैं। पुरुष के शरीर में १० प्राण, ११ वाँ आत्मा ये ११ रुद्र देव हैं, संवत्सर के १२ मास आदित्य देव हैं, इन्द्र = रतनयित्नु = बिजली देव है, यज्ञ = प्रजापति या पशु देव कहाता है।

यह जो एक ही है, जो गति करता है, वह अध्यर्ध = डेढ़ क्यों है? क्योंकि इसी से सबकी समृद्धि होती है। अतः डेढ़ है = बड़ा है। एक देव कौन है?वह एक देव ब्रह्म है, जिसे त्यद् कहते हैं।

३४ वाँ देव ब्रह्म = ईश्वर

शतपथ ब्राह्मण के स ब्रह्म त्यद् शत. ब्रा.१४/६/६/१०, स्थल की व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं -

स ब्रह्म०= यत् सर्वजगत्कर्तृ सर्वशक्तिमत्सर्वस्येष्टं सर्वोपास्यं सर्वव्यापकं सर्वाधारं सर्वकारणमनादि सच्चिदानन्दस्वरूपमजं न्यायकारीत्यादिविशेषणयुक्तं ब्रह्मस्ति। स एवैको देवस्चतुस्त्रिंशो वेदोक्तसिद्धान्तप्रकाशितः परमेश्वरो देवः सर्वमनुष्यैरुपास्योऽस्तीति मन्यध्वम्। ये वेदोक्तमार्गपरायणा आर्यास्ते सर्वदैतयैवोपासनं चक्रुः, कुर्वन्ति, करिष्यन्ति च। अस्माद्भिन्नस्येष्टकरणेनोपासनेन चानार्यत्वमेव मनुष्येषु सिध्यतीति निश्चयः।।

ऋ.भा.भू.वेदविषय. पृ. ७०।।

अर्थात् जो सम्पूर्ण जगत् का कर्त्ता है, सर्वशक्तिमान है, सबका इष्ट है, सबका उपास्य है, सर्वव्यापक है, सर्वाधार है, सबका कारण है, अनादि है, सत् चित् आनन्द स्वरूप वाला है, अज न्यायकारी आदि विशेषणयुक्त ब्रह्म है।

वह ही एक ३४ वाँ देव है। वेदोक्त सिद्धान्त से प्रकाशित परमेश्वर देव सभी मनुष्यों के द्वारा उपासना के योग्य है, ऐसा मानना

---

१. (१) चिंशति त्रयस्परो देवासो बर्हिरासहन। विदन्न द्वितासन।। ऋ./२८/१।।
(२) त्रयस्त्रि शंताऽस्तुवत भूतान्मशाम्यन् प्रजापतिः परमेश्ठयधिपतिरासीत्।। यजु. १४/३१।।

१. (१) अग्निदेवता वातो देवता सूर्यो देवता चंद्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वदेवा देवता बृहस्पतिदेवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।। यजु.१४/२०।।

www.thearyasamaj.org

चाहिए। जो वेदोक्त मार्ग पर चलने वाले आर्य हैं, उन्होंने सदा ऐसे देव की ही उपासना की है, करते हैं, और करेंगे। इससे भिन्न का इष्ट रूप से उपासना करना मनुष्यों में अनार्यत्त्व = अनाड़ीपन सिद्ध होता है, यह जानना चाहिए।

देव, जड़ चेतन

महर्षि दयानन्द ने शतपथ ब्राह्मण के देवविषयक प्रकरण को उद्धृत कर यह सुस्पष्ट किया है कि १ देव ईश्वर है और ईश्वर से भिन्न ३३ अन्य देव हैं। इस प्रकार कुल ३४ देव हैं। इन देवों में जीवात्मा तथा परमात्मा २ चेतन देव हैं, ३२ जड़ देव हैं।

यास्कीय देव, देवता परिज्ञान

ये ३४ देव अन्यत्र मरुत, लोक, स्थान आदि नाम भेद से भी वर्णित हैं। शतपथ ब्राह्मणोक्त ये ३४ देव ही वेदार्थ एवं यज्ञ में गृहीत होते हैं। इस दृष्टि से ही निरुक्तकार यास्क ने वेदों के प्रतिपाद्य विषय को देवता बताया है। यथा -

यत्काम ऋषिर्यस्यां देवतायामार्थपत्यमिच्छन्
स्तुतिं प्रयुङ्क्ते तद्दैवतः स मन्त्रो भवति।। निरु.७/१/१।।

अर्थात् ऋषिः = परमेश्वर या मन्त्रद्रष्टा, यत्कामः= जिस अर्थ के प्रकाश की इच्छा से, यस्यां देवतायाम्= जिस देवता सम्बन्धी, अर्थापत्यमिच्छन्= अर्थ के स्वामित्व को चाहते हुए, स्तुति प्रयुङ्क्ते= जिस देवता का वर्णन करता है, स मन्त्र= वह मन्त्र, तद् दैवतः भवति= उस देवता वाला होता है।

यास्कवचन का तात्पर्य है वेदों के शब्द यौगिक हैं, यौगिक होने से अनेक अर्थों वाले हैं। अनेकार्थक होने से द्रष्टा के अनुसार मन्त्र का प्रतिपाद्य= विषय उस देवता वाला होता है।

महर्षि यास्क ने मन्त्र के प्रतिपाद्य को तास्त्रिविधा ऋचः- परोक्षकृताः, प्रत्यक्षकृताः आध्यात्मिक्यश्च। निरु.७/१/१, परोक्षकृत, प्रत्यक्षकृत, आध्यात्मिक ऋचाओं के माध्यम से ३ विभागों में बांटा है।

परोक्षकृत विषयवाले वे मन्त्र हैं, जिनमें इन्द्र आदि पद होते हैं वे ७ विभक्ति से युक्त होते हैं एवं प्रथम पुरुष की क्रिया होती है। प्रत्यक्षकृत प्रतिपाद्य विषय वाले वे मन्त्र हैं, जिनमें इन्द्र आदि पदों के साथ त्वम् आदि पद होते हैं, मध्यम पुरुष की क्रिया होती है। आध्यात्मिक विषय वाले वे मन्त्र हैं, जिनमें इन्द्र आदि पदों के साथ अहम् सर्वनाम का प्रयोग होता है एवं उत्तम पुरुष की क्रिया होती है।

महर्षि यास्क ने मन्त्रों के परोक्षकृत आदि तीन भेद दर्शाकर अनिर्दिष्ट देवता वाले मन्त्रों का प्रतिपाद्य बताते हुए कहा है -

तद्येऽनादिष्टदेवता मन्त्रास्तेषु देवतोपपरीक्षा। यद्देवताः सः यज्ञो वा यज्ञाङ्गं वा तद्देवता भवन्ति। अथान्यत्र यज्ञात्प्राजापत्या इति याज्ञिकाः। नाराशंसा इति नैरुक्ताः। अपि वा कामदेवता स्यात्। प्रायो देवता वा, अस्ति ह्याचारो बहुलं लोके देवदेवत्यमतिथिदेवत्यम् पितृदेवत्यम्। याज्ञदैवतो मन्त्र इति।। निरु.७/१/४।।

अर्थात् वे जो अनादिष्ट= अनिर्दिष्ट देवता वाले मन्त्र हैं, उनमें देवता का ज्ञान इस प्रकार होता है, १. यज्ञ एवं यज्ञ के अवयव उस मन्त्र के देवता होते हैं अर्थात् यज्ञ= देवपूजा= ईश्वर की उपासना विद्वानों का सत्कार, माता-पिता, अतिथि का सत्कार यह मन्त्र का प्रतिपाद्य विषय होता है। संगतिकरण=सृष्टि उत्पत्ति, शिल्पविद्या, राज्य प्रबन्धन, ज्ञान आदि मन्त्र के प्रतिपाद्य होते हैं। दान=अग्निहोत्र, बलिवैश्यदेव यज्ञ, परोपकार आदि कार्य मन्त्र के प्रतिपाद्य= विषय हैं।
२. यज्ञांग= यज्ञ के साधन, पात्र, घृत, सामग्री आदि तथा अग्नि, विद्वान आदि को दिये जाने वाले हव्य, वस्त्र दक्षिणा आदि मन्त्र के प्रतिपाद्य होते हैं। ३. याज्ञिकां की दृष्टि में प्राजापत्य=ईश्वर, ४. नैरुक्तों की दृष्टि में नाराशंस= मनुष्य आदि मन्त्र के देवता होते हैं। नैरुक्तों की दृष्टि में ५. काम=इच्छा, प्रार्थना मन्त्रों के देवता होते हैं। ६. प्रायः=विद्वान् गुरु, आचार्य, अतिथि, माता, पिता मन्त्रों के देवता होते हैं। परन्तु कर्मकाण्ड में मुख्य देवता मन्त्र एवं परमेश्वर हैं।

महर्षि दयानन्द ने निरुक्त निर्दिष्ट देवताओं का परिगणन करते हुए लिखा है-

अत्र परिगणनम्। गायत्र्यादिच्छन्दोन्विता मन्त्रा, ईश्वराज्ञा, यज्ञः यज्ञांगं, प्रजापतिः परमेश्वरः, नराः, कामः, विद्वान, अतिथि, माता, पिता, आचार्यश्चेति कर्मकाण्डादीन्प्रत्येता देवताः सन्ति। परन्तु मन्त्रश्वेरावेव याज्ञदैवते भवत इति निश्चय।। ऋ.भा.भू. वेदविषय., पृ.६४।।

अर्थात् देवताओं का परिगणन इस प्रकार है- गायत्री आदि छन्द युक्त मन्त्र, ईश्वर की आज्ञा, यज्ञ, यज्ञ के अंग = साधन, प्रजापति परमेश्वर, नर = मनुष्य, काम, विद्वान, अतिथि, माता-पिता एवं आचार्य ये कर्मकाण्ड आदि कर्मो के प्रति देवता होते हैं। परन्तु यज्ञ में तो वेदों के मन्त्र एवं ईश्वर ही देवता होते हैं यह निश्चय से जानना चाहिए।

देवता परिज्ञान विभाग

यास्क निर्दिष्ट देवता परिज्ञान से स्पष्ट है कि ३४ देवों की संगति ४ विभागों द्वारा की जाती है। वे ४ विभाग हैं - १. अधियज्ञ २. अधिदैवत ३. अध्यात्म ४. आख्यान= अधिभूत, ऐतिहासिक।

अधियज्ञ विभाग में मन्त्रों का देवता जड़, चेतन यज्ञ एवं यज्ञ के विभिन्न अंग, पुरोहित आदि होते हैं। अधिदैवत विभाग में

---

(२) कतमे ते त्रयो देवा इतीमऽएव त्रयो लोकाः।। शत.ब्रा.१४/६/६/६।।
(३) धामानि त्रयाणि भवन्ति, स्थानानि नामानि जन्मानीति।। निरु. ६/३/२६।।
२. इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे पृथिव्याः।।ऋ.१०/८६/१०।।
३. त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः।।१०/१५३/२।।
४. अह रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः।। ऋ.१०/१२५/१

www.thearyasamaj.org

अग्नि, वायु, सूर्य एवं इनके सहचारी त्रिलोकस्थ विभिन्न जड़ पदार्थ देवता होते हैं। अध्यात्म विभाग के देवता चेतन अचेतन जीवात्मा परमात्मा इन्द्रिय आदि होते हैं। आख्यान अधिभूत= ऐतिहासिक विभाग में विद्युत मेघ, सूर्य, जल, नदी आदि जड़ भूत नित्य पदार्थों का इन्द्र, वृत्र, आपः, विपाट्, शुतुद्री आदि पदों द्वारा जो प्रतिपादन हैं, वह प्रतिपादन मन्त्रों का देवता कहा जाता है। अन्यच्च इन्द्र, वृत्र आदि से उपमा द्वारा राजा, प्रजा आदि का सम्बन्ध लगाया जाता है। इस प्रकार देवता विषयक समस्त परिज्ञान इन ४ विभागों द्वारा ही जाना जाता है।

देव, देवता संज्ञा

ये मन्त्र, ईश्वर, ईश्वराज्ञा आदि देवता क्यों होते हैं?इसका स्पष्टीकरण करते हुए महर्षि आगे लिखते हैं -

देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा द्युस्थानो भवतीति वा।
यो देवः सा देवता।। निरु.७/४/१५।। ऋ.भा.भू.वेदविषय., पृ.६४।।

अर्थात् दान देने से देव कहाते हैं, प्रकाश करने से देव कहे जाते हैं, प्रकाशित होने से देव कहलाते हैं एवं प्रकाश के स्थान में रहने से देव कहाते हैं। जो देव है वह ही देवता है।

तात्पर्य हुआ दान देने से ईश्वर, विद्वान, मनुष्य देवता संज्ञक होते हैं। दीपन=प्रकाश करने से सूर्यादि देव कहे जाते हैं। द्योतनः= दीप्ति युक्त होने से माता-पिता, आचार्य अतिथि देव कहाते हैं। द्युस्थान= आदित्य रश्मि आदि का द्यौलोक में स्थान है अतः वे देव कहे जाते हैं।

मुख्य देव या देवता ईश्वर

महर्षि दयानन्द ने यास्क निर्दिष्ट देव शब्द की व्युत्पत्ति के अनुसार पूर्वोक्त अर्थ करने के पश्चात् महत्वपूर्ण २ वाक्य लिखे हैं, जो देवताओं में ईश्वर को मुख्य देवता सिद्ध करते हैं। वे वाक्य हैं -

प्रकाशकानामपि प्रकाशकत्त्वात् परमेश्वर एवात्र देवोऽस्तीति विज्ञेयम्।
.... अतो मुख्यो देव एकः परमेश्वर एवोपास्योऽस्तीति मन्यध्वम्। ऋ.भा.भू.वेदविषय.,पृ.६५।।

अर्थात् प्रकाशकों का भी प्रकाशक होने से परमेश्वर को ही इन देवों में मुख्य देव जानना चाहिए। इसीलिए वह मुख्य देव १ परमेश्वर ही सबके लिए उपासना योग्य है, यह मानना चाहिए।

निष्कर्ष

इस उपर्युक्त विश्लेषण से सुज्ञात है कि लोक प्रसिद्ध ३३ करोड़ देवता नहीं होते, देवता तो ३३+१=३४ होते हैं। नाम, गुण आदि के भेद से यद्यपि उनका यत्र तत्र भिन्नता से भी प्रतिपादन है, तथापि वे ३४ ही हैं। वेदादि शास्त्रों में जहाँ वसु आदि ३३ देवताओं का कथन हैं उनका भाष्यकारों ने ३३ कोटि देवता शब्द द्वारा निर्देश किया है। सम्भवतः लोक में इस कोटि शब्द के कारण ही ३३ करोड़ की मान्यता फैली। कोटि शब्द के २ अर्थ हैं प्रकार और करोड़। वेदादि शास्त्रों में ईश्वरातिरिक्त ३३ देव ही निर्दिष्ट हैं, अतः देवों के प्रसंग में कोटि शब्द का अर्थ प्रकार ही लेंगे, करोड़ नहीं।

देव, देवता निष्पत्ति व्युत्पत्ति

देव शब्द दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु धातु से अच् प्रत्यय द्वारा सिद्ध होता है। देवता शब्द देव शब्द से देवात्तल् अष्टा.५/४/२७ से तल् व टाप् प्रत्यय द्वारा सिद्ध हुआ है। जिनकी व्युत्पत्ति हैं -

दीव्यतीति देवः, दीव्यतीति देवता अर्थात् जो दीप्त होते हैं वे देव या देवता कहे जाते हैं।

निर्वाण दिवस सन्देश

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों में जिस विहरण, विजिगीषा आदि धर्म वाले देव की ही उपासना का निर्देश किया है, उस सर्वोपास्य, निराकार आदि धर्मयुक्त १ देव के सत्यस्वरूप का ज्ञान कार्तिक, अमावस्या ३० अक्टूबर १८८३ को ईश्वर पर आस्था न रखने वाले पं. गुरुदत्त विद्यार्थी को कराया था। पं. गुरुदत्त ने भी अनेकों को उस देवत्य का उपदेश देकर उनके जीवन को ईशभक्त बनाया।

यह महर्षि का १३३ वाँ निर्वाण दिवस है। यह १३३वाँ निर्वाण दिवस भी घट घट व्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, निराकार, महान् अनादि, अनन्त गुणों से भूषित, मन्त्र निर्दिष्ट उपास्य परमेश्वर देव की ही उपासना का सन्देश ज्ञापित करता है।

प्राचार्या-पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी-१०
सम्पर्क-आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज सिरोही-३०७०२७(राज.)

---

१. मातृदेवो भव। प्रितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। तैत्ति.उ.१/११/२।।

२. अत्र दानशब्देनेश्वरो विद्वांसो मनुष्याश्च देवतासंज्ञाः सन्ति। दीपनात्सूर्यादयो द्योतनान्मातृपित्रचार्यातिथयश्च। (द्युस्थनो) तथा द्यौः किरणा आदित्यरश्मयः प्राणसूर्यादयो वा स्थानं स्थित्यर्थ यस्व्य स द्युस्थनः। ऋ.भ.भू.वेदविषय.पृ.६५।।

www.thearyasamaj.org

महर्षि स्वामी दयानन्द द्वारा किये गये यजुर्वेद भावार्थ के कतिपय प्रेरक अंश

-डॉ.भानु प्रकाश आर्य

- जैसे परमेश्वर अविद्या आदि रोगों को दूर करने वाला है, वैसे मनुष्यों को भी उचित है कि आप भी अविद्या आदि रोगों को निरन्तर दूर करें। जैसे वह वस्तुओं को यथावत् जानता है वैसे मनुष्यों को भी उचित है कि अपने सामर्थ्य के अनुसार सब पदार्थ विद्याओं को यथावत जानो, जैसे वह अच्छे अच्छे कार्यो को बनाने में शीघ्रता करता है, वैसे मनुष्य भी उत्तम उत्तम कार्यो को त्वरा से करें। ३/२६

- मनुष्यों को योग्य है कि सर्वथा आलस्य को छोड़कर पुरुषार्थ ही में निरन्तर रहके मूर्ख पन को छोड़कर वेद विद्या से शुद्ध की हुई वाणी के साथ सदा वर्ते और परस्पर प्रीति करके एक दूसरे का सहाय करें। जो इस प्रकार के मनुष्य है वे ही अच्छे अच्छे सुख युक्त मोक्ष वा इस लोक के सुखों को प्राप्त होकर आनन्दित होते हैं, अन्य अर्थात् आलसी पुरुष आनन्द को कभी नहीं प्राप्त होते। ३/४७

- जब मनुष्य लोग सुगन्धादि पदार्थ अग्नि में हवन करते हैं तब वे ऊपर जाकर वायु, वृष्टि जल को शुद्ध करते हुए पृथिवी को आते हैं, जिससे यव आदि औषधि शुद्ध होकर सुख और पराक्रम के देने वाली होती है। जैसे कोई वैश्य लोग रूपया आदि को दे लेकर अनेक प्रकार के अन्नादि पदार्थो को खरीदते व बेचते हैं, वैसे हम सब लोग भी अग्नि में शुद्ध द्रव्यों को छोड़कर अनेक सुखों को खरीदते हैं, खरीद कर फिर वृष्टि और सुखों के लिये अग्नि में हवन करते हैं। ३/४६

- मनुष्यों को सब जगत के हित करने वाले जगदीश्वर ही की स्तुति करनी और किसी की न करनी चाहिए, क्योंकि जैसे सूर्य लोक सब मूर्तिमान् द्रव्यों का प्रकाश करता है, वैसे उपासना किया हुआ ईश्वर भी भक्तजनों की आत्माओं में विज्ञान को उत्पन्न करने से सब सत्य व्यवहारों को प्रकाशित करता है इससे ईश्वर को छोड़कर और किसी की उपासना कभी न करनी चाहिए। ३/५२

- विद्वान माता-पिता आचार्यो की शिक्षा के बिना मनुष्यों का जन्म सफल नहीं होता और मनुष्य भी उस शिक्षा के बिना पूर्ण जीवन व कर्म के संयुक्त करने को समर्थ नहीं हो सकते। इससे सब काल में विद्वान् माता-पिता और आचार्यो को उचित है कि अपने पुत्र आदि को अच्छे प्रकार उपदेश से शरीर और आत्मा के बल वाले करें। ३/५५

- मनुष्य लोग ईश्वर को छोड़कर किसी का पूजन न करें क्योंकि वेद से अविहित और दुःख रूप फल होने से परमात्मा से भिन्न दूसरे किसी की उपासना न करनी चाहिये। जैसे खर्बूजा फल लता में लगा हुआ अपने आप पक कर समय के अनुसार लता से छूटकर सुन्दर स्वादिष्ट हो जाता है, वैसे ही हम लोग पूर्ण आयु को भोग कर शरीर को छोड़ के मुक्ति को प्राप्त होवें, कभी मोक्ष की प्राप्ति के लिये अनुष्ठान व परलोक की इच्छा से अलग न होवें और न कभी नास्तिक पक्ष को लेकर ईश्वर का अनादर करें। जैसे व्यवहार के सुखों के लिये अन्न जल आदि की इच्छा करते हैं, वैसे ही हम लोग ईश्वर, वेद, वेदोक्त-धर्म और मुक्ति होने के लिये निरन्तर श्रद्धा करें। ३/६०

- कोई भी मनुष्य मंगलमय सब की पालना करने वाले परमेश्वर की आज्ञा पालन के बिना संसार व परलोक के सुखों को प्राप्त होने को समर्थ नहीं होता। न कदापि किसी मनुष्य को नास्तिक पक्ष को लेकर ईश्वर का अनादर करना चाहिए। जो नास्तिक होकर ईश्वर का अनादर करता है उसका सर्वत्र अनादर होता है। इससे सब मनुष्यों को आस्तिक बुद्धि से ईश्वर की उपासना करनी योग्य है। ३/६३

- मनुष्यों को योग्य है कि उत्तम विद्वानों के प्रसंग से उत्तम उत्तम विद्याओं का संपादन कर अपनी इच्छाओं को पूर्ण करके इन विद्वानों का संग और सेवा सदा करना चाहिये। ४/५

- 'यज्ञ' के अनुष्ठान को बिना उत्साह बुद्धि, सत्य वाणी, धर्माचरण की रीति, तप,, धर्म का अनुष्ठान और विद्या की पुष्टि का सम्भव नहीं होता और इनके बिना कोई भी मनुष्य परमेश्वर की आराधना करने को समर्थ नहीं हो सकता। इससे सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान करके सबके लिये सब प्रकार आनन्द प्राप्त करना चाहिये। ४/७

- मनुष्यों को चाहिये कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करके विज्ञानयुक्त मनसे शरीर वा आत्मा के आरोग्यपन को बढ़ाकर यज्ञ का अनुष्ठान करके सुखी रहे। ४/११

- मनुष्यों को योग्य है कि अधर्म के छोड़ने और धर्म के गृहण करने के लिये सत्य प्रेम से प्रार्थना करे, क्योंकि प्रार्थना किया हुआ परमात्मा शीघ्र अधर्मो से छुड़ाकर धर्म ही में प्रवृत्त कर देता है, परन्तु हम मनुष्यों को यह करना आवश्यक है कि

www.thearyasamaj.org

जब तक जीवन है तब तक धर्माचरण ही में रहकर संसार वा मोक्ष रूपी सुखों को सब प्रकार से सेवन करें। ४/२८

- मनुष्य को योग्य है कि द्वेषादि त्याग विद्यादि धन की प्राप्ति और धर्म मार्ग के प्रकाश के लिये ईश्वर की प्रार्थना, धर्म और धार्मिक विद्वानों की सेवा निरन्तर करें। ४/२६

- कोई परमेश्वर के बिना सब जगत के रचने वा धारण, पालन और जानने को समर्थ नहीं हो सकता और कोई सूर्य के बिना भूमि आदि जगत के प्रकाश और धारण करने को भी समर्थ नहीं हो सकता इससे सब मनुष्यों को ईश्वर की उपासना और सूर्य का उपयोग करना चाहिये। ४/३६

- जैसे विद्वान लोग ईश्वर में प्रीति व संसार में यज्ञ के अनुष्ठान को करते हैं, वैसा ही सब मनुष्यों को करना उचित है। ४/३७

- मनुष्यों को चाहिये कि परमेश्वर की उपासना, विद्वान की सेवा और विद्युत विद्या का प्रचार करके शरीर और आत्मा को पुष्ट करने वाली औषधियों और अनेक प्रकार के धनों का ग्रहण करके चिकित्सा शास्त्र के अनसार सब आनन्दों को भोगें। ५/६

- मनुष्यों को ईश्वर की इस सृष्टि में विद्वानों का अनुकरण सदा करना और मूर्खो का अनुकरण कभी न करना चाहिये। ५/२३

- सब मनुष्यों को उचित है ईश्वर व विद्वान का सत्कार करना कभी न छोड़ें क्योंकि अन्य किसी से विद्या और सुख का लाभ नहीं हो सकता। ५/३१

- यज्ञ के लिये घृत आदि पदार्थ चाहने वाले मनुष्य को गाय आदि पशु रखने चाहिये और घृतादि अच्छे-अच्छे पदार्थो से अग्निहोत्र से लेकर उत्तम उत्तम यज्ञों से जल और पवन की शुद्धि कर सब प्राणियों को सुख उत्पन्न करना चाहिये। ६/११

- योग जिज्ञासु पुरूष को चाहिये कि यम नियम आदि योग के अंगों से चित्त आदि अन्तःकरण की शक्तियों को रोक और अविद्यादि दोषों का निवारण करके संयम से ऋद्धि सिद्धियों को सिद्ध करें। ७/४

- मनुष्यों को कि अपने पुरुषार्थ और विद्वान के संग से परोपकार की सिद्धि और कामना को पूर्ण करने वाली वेद वाणी को प्राप्त कर आनन्द में रहें। ७/१०

- राजा और विद्वानों को योग्य है कि वे निरन्तर राज्य की उन्नति किया करें क्योंकि राज्य की उन्नति के बिना विद्वान लोग सावधानी से विद्या का प्रचार और उपदेश भी नहीं कर सकते और न विद्वानों के संग और उपदेश के बिना कोई राज्य की रक्षा करने के योग्य होता है तथा राजा प्रजा और उत्तम विद्वानों की परस्पर प्रीति के बिना ऐश्वर्य की उन्नति के बिना आनन्द भी निरन्तर नहीं हो सकता। ७/२०

- प्रजा जनों को उचित है कि सफल शास्त्र का प्रचार होने के लिये सब विधाओं में कुशल और अत्यन्त ब्रह्मचर्य के अनुष्ठान करने वाले पुरूष को सभापति करें और वह सभापति भी परम प्रीति के साथ सकल शास्त्र का प्रचार कराता रहे। ७/२३

- होता आदि विद्वान लोग अत्यन्त दृढ़ सामग्री से यज्ञ करते हुए जिन सुगन्धि आदि पदार्थो को अग्नि में छोड़ते हैं वे पवन और जलादि पदार्थो को पवित्र कर उसके साथ पृथिवी पर आ और सब प्रकार के रोगों को निवृत्त करके सब प्राणियों को आनन्द देते हैं इस कारण सब मनुष्यों को इस यज्ञ का सदा सेवन करना चाहिये। ७/२६

- .युद्ध कर्म में चार वीर अवश्य हों उनमें से एक तो वैद्यक शास्त्र की क्रियाओं में चतुर सबकी रक्षा करने हारा वैद्य, दूसरा सब वीरों को हर्ष देने वाला उपदेशक, तीसरा शत्रुओं का अपमान करने हारा और चौथा शत्रुओं का विनाश करने वाला हो, तब समस्त युद्ध की क्रिया प्रशंसनीय होती है। ७/४४

- जो विद्वानों से शिक्षा पाई हुई स्त्री हो वह अपने अपने पति और अन्य सब स्त्रियों को यथा योग्य उत्तम कार्य सिखलावें जिससे किसी तरह वे अधर्म की ओर न डिगें। वे दोनों स्त्री पुरुष विद्या की वृद्धि और बालकों तथा कन्याओं को शिक्षा दिया करें। ८/४३

प्रतिष्ठित सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.
मो. ९४१५१५८५७१

www.thearyasamaj.org

तो दीवाली है

-डॉ. अशोक रस्तोगी

सन्ध्या की बोझिल अल्कों पर,
तुम सौ-सौ दीप जलाते हो।
किसी तिमिरमय जीवन में,
प्यार का एक दीप जलाओ।
तो दीवाली है!

प्राची से उगते सूरज को,
तुम सौ-सौ शीश झुकाते हो।
जीवन की ढलती सांसों को,
श्रद्धा का एक शीश झुकाओ।
तो दीवाली है!

निर्जीव पाषाढ़ प्रतिमाओ को,
तुम छप्पन भोग लगाते हो।
क्षुधा से अकुलाती अंतड़ी को,
अन्य का एक भोग लगाओ।
तो दीवाली है!

ऊँचे-ऊँचे कूल कगारों पर,
तुम सौ-सौ कंदील जलाते हो।
निर्धन पड़ोसी की कुटिया में,
आशा का एक कंदील सजाओ।
तो दीवाली है!

जग पालक भोले शंकर को,
तुम सौ-सौ अर्ध्य चढ़ाते हो।
प्रेम पिपासु सूखे अधरों को,
स्नेह का एक अर्ध्य चढ़ाओ।
तो दीवाली है!!

-अफजलगढ़ बिजनौर
मो.६४११०१२०३६

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा धर्म का मूल स्वरूप

वैदिक धर्म व प्रचलित सनातन धर्म की मूल मान्यता (समीक्षा)

पं० उम्मेद सिंह विशारद

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ही एक मात्र ऐसे विचारक महाभारत काल के बाद हुए हैं, जिन्होंने धर्म का सत्य स्वरूप संसार के सामने प्रस्तुत किया। उन्होंने वैदिक धर्म के अनुसार सिद्ध किया कि जिस धर्म मत में निम्न पाँच मान्यताऐं पूर्ण रूप से समावेश है वहीं ईश्वरीय धर्म मानव कल्याण हेतु सत्य धर्म है, और जिसमें एक गुण का भी अभाव है वह पूरक धर्म नहीं कहा जा सकता है।

मूल पांच मान्यताऐं निम्न है

1. अहिंसा 2. न्याय 3. दया 4. सत्य 5. ईश्वर भक्ति

ये सब धर्म के पर्याय है यदि इनमें से एक गुण भी निकाल दिया जाये तो वह धर्म नहीं रह जाता। यह धर्म का वास्तविक स्वरूप हैं। जिन धर्म सम्प्रदायों में उक्त एक गुण का भी अभाव है तो वह किसी सूरत में धर्म संगठन नहीं है। आजकल जितने भी सम्प्रदाय धरती पर प्रचलित है, उनमें एक वैदिक धर्म को छोड़ कर सभी में कोई न कोई कमी है। कारण कोई हिंसक तो कोई असत्य का आश्रित कोई ईश्वर भक्ति से वंचित है। धर्म का स्वरूप महान है उसका कोई आर-पार नहीं। धर्म तो केवल वैदिक धर्म ही है जो मानव मात्र का बिना पक्षपात के कल्याण करता है। आइए विचार करते हैं।

1. अहिंसा –

अनागोहत्या वै भीमा - (अथर्व) निरपराध की हत्या बड़ी भयंकर सजा देने वाली है क्योंकि संसार में सभी प्राणियों की रचना ईश्वर ने की है, इसलिए सब प्राणी ईश्वर के पुत्र हुए। पशु भी ईश्वर की रचना है। अतः पशु हत्या करके देवी देवताओं की पूजा से ईश्वर रूष्ट होते हैं, और हत्या करने वाले को भयंकर दण्ड देते हैं। देवताओं को खुश करने व अपना भला चाहने वाले जो देवताओं की पत्थर की मूर्ति के सामने पशु हत्या करते हैं उससे उनके संस्कार भी हिंसक बन जाते हैं। यही कारण है आज मानव जगत में चारों ओर हिंसा की प्रवृत्ति वेगवती हो रही है।

समीक्षा –

वैदिक धर्म पूर्ण रूप से अहिंसक है क्योंकि वेदों में केवल जगह-जगह अहिंसा का उपदेश दिया गया है। अन्य धर्म मत जो अहिंसा का समर्थन करते हैं उनको साधुवाद है किन्तु न्याय, दया, सत्य, और सत्य ईश्वर भक्ति के अभाव में बह मत पूर्ण धार्मिक नहीं कहा जा सकता है।

केवल वैदिक धर्म (आर्यसमाज) में ही उक्त पांचों गुणों का समावेश है इसलिए सर्व श्रेष्ठ वैदिक धर्म है।

2. न्याय –

नीयते प्राप्यते विवक्षितार्थ सिद्विरनेन इति न्याय = (न्यायदर्शन) अर्थात= जिसके द्वारा किसी प्रतिपाद्य विषय की सिद्विकी जा सके जिसकी सहायता से किसी निश्चित सिद्वान्त पर पहुंचा जा सके उसी का नाम न्याय है।

न्याय दर्शन को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है।

१. सामान्य ज्ञान की समस्या को हल करना

२. जगत की पहेली को सुलझाना

३. जीवात्मा तथा मुक्ति ४. परमात्मा और उसका ज्ञान।

ज्ञान दो प्रकार का होता है-एक आर्ष ज्ञान और दूसरा अर्नाष ज्ञान

आर्ष ज्ञान की परिभाषा - ईश्वरीय व्यवस्थानुसार, वेदानुसार, सृष्टिक्रमानुसार, विज्ञान के अनुसार, और जैसी मेरी आत्मा, मन नहीं केवल आत्मा दूसरों से अपने लिये व्यवहार चाहती है वैसा ही दूसरों के साथ करना, और धर्म का सत्य स्वरूप, कर्म का सत्य स्वरूप प्रत्येक आध्यात्म सत्य मान्यताऐं राजनीतिक सत्य मान्यताऐं सामाजिक सत्य मान्यताऐं आदि-आदि आर्ष ज्ञान कहलाता है।

अनार्ष ज्ञान की परिभाषा - निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी ईश्वर को मनुष्यों की काल्पनिक, मूर्तियों में सृष्टिक्रम के विरूद्ध बातों को मानना- जड़ की पूजा का अन्ध विश्वास काल्पनिक विज्ञान व सृष्टि क्रम के विरूद्ध धार्मिक ग्रन्थों की रचना, काल्पनिक देवी देवताओं के आगे अपने स्वार्थ के लिये पशु हत्या करना। अनेक जादू टोना भूत प्रेत, फलित ज्योतिष शास्त्रों की रचना आदि अनार्ष ज्ञान है। न्याय और अन्याय का भेद न समझ कर अन्याय का समर्थन करना आदि।

समीक्षा–

वैदिक धर्म सत्य न्याय का पक्षधर है, सम्पूर्ण वेद शास्त्रों में कहीं पर भी अन्याय की शिक्षा नहीं दी गयी है। किन्तु अन्य धर्म सम्प्रदायों में न्याय को स्वार्थ की नजरों से किया गया है। इसलिये वह पूर्ण धर्म नहीं कहा जा सकता है। केवल वैदिक धर्म

www.thearyasamaj.org

में उक्त पांचों गुणों का समावेश है इसलिए सर्वश्रेष्ठ वैदिक धर्म है।

3. दया–

महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश के सातवें सम्मुलास से-

प्रश्न - परमेश्वर दयालु व न्यायकारी है वहा नहीं ?

उत्तर - है

प्रश्न - ये दोनों गुण परस्पर विरुद्वहै। जो न्याय करे तो दया और दया करे तो न्याय छूट जाए, क्योंकि न्याय उसको कहते हैं कर्ता के कर्मो के अनुसार न अधिक न न्यून सुख, दुःख पहुंचाना, और दया उसको कहते हैं जो अपराधों को बिना दण्ड दिये छोड़ देना।

उत्तर = न्याय और दया नाम मात्र का ही भेद है। दया वही है कि उस डाकू को कारागार में रखकर पाप करने से बचाना डाकू पर दया, और उस डाकू को मार सकने से अन्य सहस्रों मनुष्य पर दया प्रकाशित होती है।

समीक्षा–

वैदिक धर्म के अतिरिक्त वर्तमान में प्रचलित धार्मिक व सामाजिक व राजनैतिक संगठनों में निजी स्वार्थ की भावना चरम सीमा पर है। इसीलिए व्यवहारिक जगत में परोपकार श्रद्वा परहित के संस्कार दिनों दिन न्यून होते जा रहे हैं। अधिकांश समुदाय दया का मूल उद्देश्य न समझ कर अन्धविश्वास व रूढ़ि परम्पराओं की गति में ही वृद्विकर रहें हैं। आज दया शब्द के सही मायनों को समझने की अति आवश्यकता है।

4. सत्य –

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश की तृतीय सम्मुलास में कहा है कि जो गुण कर्म स्वभाव और वेदों के अनुकूल हो वह-वह ''सत्य'' और उससे विरूद्वअसत्य है। दूसरा जो जो सृष्टिक्रम के अनुकूल है वह सत्य और जो विरूद्ध है वह सब असत्य है। तीसरा-आप्त अर्थात जो धार्मिक, विद्वान सत्यवादी, निश्कपटियों का संग उपदेश के अनुकूल है वह सत्य और जो जो विरूद्ध है व असत्य है। चौथी अपनी आत्म की पवित्रता विद्या के अनुकूल सुख अप्रिय, दुःख प्रिय है वैसे सर्वत्र समझा लेना। पांचवी आत्म आठप्रमाणों अर्थात प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिहय अर्थापत्ति स्वभाव और अभाव है। यह सत्य की कसोटियां हे।

समीक्षा–

उपर्युक्त सत्य की कसोटियों के आधार पर केवल वैदिक धर्म व आर्य समाज ही सही उतरता है। बाकी अन्य धार्मिक संगठनों में किसी न किसी रूप में मान्यताऐं असत्य पर आधारित होती है और उनका नेतृत्व पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर उन्हीं असत्य या रूढ़ी मान्यताओं को ही प्रचलित करते हैं जिससे मानव समाज में अति धार्मिक अन्धविश्वास फैलता जाता है।

5– ईश्वर मान्यता तथा भक्ति–

ईश्वर की परिभाषा - ईश्वर सचिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, और सृष्टिकर्ता है। (आर्यसमाज का दूसरा नियम) स हि सर्ववित सर्वकर्ता- (सा० दर्शन) वह परमात्मा सर्वान्तर्यामी और सब जगत का कर्ता है।

नोट - वेदों में उपनिषदों में दर्शनों में व अन्य आर्ष ग्रन्थों में बताया गया है एक निराकार ईश्वर है और उसी की भक्ति करनी चाहिए।

समीक्षा –

महाभारत काल के बाद सबसे विवादित ईश्वर का विषय रहा है। ईश्वर का सत्य ज्ञान न होने के कारण सम्पूर्ण विश्व में आपस में लड़ाई झगड़ा, मारकाट, सामाजिक शोषण, ईश्वर के नाम से साधारण मनुष्यों को भ्रमित करके अपनी-अपनी दुकानदारियां करना रहा है, और आज ईश्वर के नाम से पाखण्ड चरम सीमा पर पहुंच गया है। कोई भी सत्य को समझने को तैयार नहीं है, अपितु अपने पूर्वाग्रहों से अपनी अपनी असत्य बात पर मरने मारने को तैयार है।

अतः धर्म के अतिरिक्त प्रचलित धर्म मतों में अहिंसा, न्याय, दया, सत्य, और ईश्वर भक्ति के इन गुणों में से कोई न कोई कमी होने के कारण पूर्ण धार्मिक संगठन नहीं माना जा सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा निर्देशित सिद्वान्तों व आर्य समाज को एक न एक दिन संसार को मानना ही पड़ेगा।

गढ़निवास मोहकमपुर
देहरादून (उत्तराखण्ड)

www.thearyasamaj.org

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालय

आर्य समाज बाराबंकी द्वारा संचालित

डी०ए०वी० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

बाराबंकी

अरविन्द कुमार
प्रबन्धक

स्थापित वर्ष–1988 (राजकीय मान्यता प्राप्त)
मो.-9450331355

पुरवार शिक्षण संस्थान

शिशु से इण्टरमीडिएट
आर्ट, साइंस, कामर्स

134, संजय गाँधी नगर
नौबस्ता, कानपुर

LORD EDUCATION INSTITUTE

P. G. To VIII[th] ENGLISH MEDIAUM

महर्षि दयानन्द सरस्वती बलिदान दिवस
पर 1 नवम्बर 2016 को प्रकाशित आर्य समाज का मुख पत्र
आर्यमित्र के विशेषांक पर हार्दिक शुभकामनायें
शुभेक्ष डा. अनिल कुमार पुरवार विशेष आमंत्रित सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. लखनऊ

सर्वतोमुखी क्रांति के अग्रदूतः महर्षि दयानन्द

–डॉ0 शिवकुमार शास्त्री

प्रसिद्ध इतिहासकार रोम्यां रोलां ने युगप्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा था।–

आर्यसमाज सब मनुष्यों एवं सब देशों के प्रति न्याय और स्त्री–पुरूषों की समानता को सिद्धान्त रूप में स्वीकार करता है। यह जन्मना जात–पांत का विरोधी है और गुण–कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्ण व्यवस्था को मानता है। इस विभाजन से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं। अस्पृश्यता से आर्य समाज का घोर विरोध है। स्वामी दयानन्द से बढ़कर हरिजनों के हितों का रक्षक दूसरा कोई कठिनाई से ही मिलेगा। स्त्रियों को दयनीय स्थिति से उबारने, समान अधिकार दिलाने और शिक्षा की उपयुक्त व्यवस्था कराने में दयानन्द जी ने बड़ी उदारता और बहादुरी से काम लिया।

भारत में जो इस समय राष्ट्रीय पुनर्जागरण दीख रहा है, उसमें भी स्वामी दयानन्द ने प्रबल शक्ति के रूप मे काम किया।.........दयानन्द राष्ट्रीय संगठन और पुनर्निर्माण का उत्साही मसीहा था। मैं समझता हूँ....... राजनीतिक जागरण के बनाए रखने और सही दिशा देने में उनका प्रमुख हाथ रहा है।''

इतिहास साक्षी है कि जिस समय देव दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ, उस समय प्राचीन वैदिक धर्मी नाना प्रकार के मत–मतान्तरों की मदिरा से मत्त होकर पथभ्रष्ट हो चुका था। एक ईश्वर के स्थान पर अनेक मनमाने ईश्वर बना लिये गये थे। श्रेष्ठतम कर्म–यज्ञ–हिंसा का शिकार हो रहा था। वेदों के भाष्य के नाम पर अनर्गल प्रचार हो रहा था। विधर्मी वेदों को गड़रियों के गीत कह कर हमारे धर्म की खिल्ली उड़ा रहे थे। अंध विश्वास और पाखण्ड चरमसीमा पर था। गुरू को ईश्वर से बड़ा समझा जाता था। स्वार्थी और पाखण्डी पण्डितों ने 'स्त्री शूद्रौ नाधीयताम्' का फतवा देकर इनके लिए वेदों का द्वार सदा के लिए बन्द कर रखा था। बाल विवाह, वृद्ध–विवाह और बहु विवाह पर जहां कोई प्रतिबन्ध न था, वहां विधवा विवाह तथा पुनर्विवाह की चर्चा करना तक अपराध माना जाता था। हरिजन देवालयों में नहीं जा सकते थे, वे सवर्णो के कुंओं से पानी नहीं भर सकते थे, सतीप्रथा एवं यज्ञों में पशुबलि जैसी बुराइयां धर्म के नाम पर पनप रही थीं। हिन्दु समाज प्याज के छिलकों की तरह सारहीन बना हुआ था। राजनीतिक दृष्टि से हम परतंत्र तो थे ही, आपस में राजा–महाराजा एक दूसरे का विरोध कर अंग्रेजी सत्ता के हाथ मजबूत कर रहे थे। अनाथों एवं विधवाओं का क्रन्दन समाज के लिए अभिशाप बना हुआ था। विदेशी शिक्षा, चिन्तकों, विचारकों एवं मनीषियों के स्थान पर केवल मात्र क्लर्क बना रही थी। सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद सभी के मन बुझे हुए थे। उस समय के शासक सुरा और सुन्दरी के पाश में जकड़े हुए थे। सम्पूर्ण भूमण्डल पर सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करने वालों की सन्तान अपने गौरव को भूलकर अंग्रेजों की चाटुकारिता में ही अपने को धन्य समझने लगी थी, राणा और शिवा की सन्तान अन्याय के खिलाफ बोल नहीं पा रही थी।

ऐसी विषम से विषमतर और विषमतर से विषमतम परिस्थितियों में देव दयानन्द ने आर्यजाति को झकझोरा। आज देश में जो शुभ लक्षण दिखाई दे रहे हैं, उनके मूल में देव दयानन्द का अथक परिश्रम विद्यमान है।

स्वराज शब्द का बोध कराने वाले महर्षि दयानन्द की कृपा से हमारे देश में नई चेतना और जागृति आई थी। स्वामी जी ने हिन्दु धर्म को–जो प्याज के छिलकों की तरह बंटा हुआ था– संगठित करने के लिए एकेश्वरवाद, त्रैतवाद एवं पंचमहायज्ञों का विधान किया।

हिन्दी भाषा के वे प्रबल समर्थक थे। महर्षि ने संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित और अहिन्दी भाषी होते हुए भी अपने ग्रन्थ आर्यभाषा (हिन्दी) में लिखे। सभी आर्यसमाजियों के लिए हिन्दी में व्यवहार करना आवश्यक बताया।

नारी–जो कि पैरों की जूती और नरक का द्वार समझी जाती थी, देव दयानन्द ने उसे पूजा और श्रद्धा के योग्य कहा ।उन्होंने राजर्षि मनु के डिण्डिम घोष का पुनरूद्‌घोष करते हुए कहा–

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।''

स्वराज्य और स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग के लिए तत्कालीन राजा–महाराजाओं को प्रेरित किया।

गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली को जन्म देकर उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में सबको समान अधिकार देने का प्रयास कर

www.thearyasamaj.org

ऊँच–नीच की भावना को समाप्त किया। गौ को भारत की समृद्धि का कारण बताते हुए उनकी हत्या पर रोक लगाने की ब्रिटिश सरकार से मांग की।

मज़हबी जुनून से हट कर स्वामी जी ने कहा–''मेरा कोई नवीन मत मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है, किन्तु जो सत्य है, उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है, उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त्त में प्रचलित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता।''

आपस की फूट के भयंकर परिणामों की चर्चा करते हुए स्वामी ज़ी ने चेतावनी दी–

जब भाई–भाई आपस में लड़ते है, तब तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।''

''आपस की फूट के कारण कौरवो, पाण्डवों और यादवों का सत्यानाश हो गया, सो तो हो ही गया परन्तु यह भयंकर राक्षस अब भी आर्यों के पीछे लगा है। न जाने कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ा कर दुःखसागर में डुबो मारेगा।''

जिस ऋषि ने बोध प्राप्ति से लेकर जीवन के अन्त तक अपना क्षण–क्षण संसार के उपकार में व्यतीत किया, जिसने विष पीकर अमृत प्रदान किया, उस महान् ऋषि के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हम सब प्रतिज्ञा करें कि देव दयानन्द के अधूरे कार्यों को पूरा कर कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के नारे को सार्थक सिद्ध करने का भरसक प्रयास करेंगे।

चलभाष–9810095061

जिस राज्य में मनुष्य लोग अच्छी प्रकार ईश्वर को जानते है। वही सुख युक्त होता है।

प्रार्थना करने से अभिमान का नाश आत्मा में आर्द्रता, गुण ग्रहण मे पुरूषार्थ और अत्यन्त प्रीति का होना प्रार्थना का फल है।

वे ही धर्मात्मा जन हैं जो अपने आत्मा के संदेश सम्पूर्ण प्राणियों को मानें, किसी से भी द्वेष न करें और मित्र के संदेश सब का सदा उपकार करें।

विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् के हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

www.thearyasamaj.org

स्वतंत्रता संग्राम और आर्य समाज

–डॉ. वीना रानी गुप्ता,प्रवक्ता (हिन्दी)

19 वीं शताब्दी का युग पुनर्जागरण का युग था। पश्चिमी सम्यता और संस्कृति से परिचित हो जाने के बाद भारतीयों के मन में अपनी सम्यता और संस्कृति के प्रति गर्व का जागरण हुआ सोचने लगे कि विज्ञान की आंधी में फँसकर हम अपने आपको भूल जायेंगे तो भारतीय संस्कृति नष्ट हो जाएगी। अतएव दयानन्द सरस्वती जैसे धर्म सुधारक ने नारा लगाया। ''हे भारतीय मनुष्यों, तुम्हें वेदों की ओर लौटना होगा।'' आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी ने अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया। उन्होंने हिन्दुओं की कुरीतियों को दूर करके उन्हें आजादी की लड़ाई के लिए प्रेरित किया। सन् 1857 की असफल क्रान्ति के पश्चात स्वराज्य एवं स्वाधीनता के आदि प्रवक्ता स्वामी दयानन्द ही थे। वे शायद पहले नायक थे जिन्होंने 'भारत भारतीयों के लिए है' का संदेश सुनाया। स्वामी दयानन्द को भारत में आध्यात्मिक जागृति का 'मार्टिन लूथर' कहा गया है। जिस प्रकार मार्टिन लूथर ने शाश्वत सत्य के सहारे बाइबिल के सिद्धान्तों का समर्थन किया उसी प्रकार दयानन्द ने सनातन सत्य को वेद ज्ञान के अनुसार जीवन में उतारा मार्टिन लूथर का नारा था 'बाइबिल की ओर लौटो, और दयानन्द जी ने कहा था 'वेदों की ओर लौटो!' स्वामी दयानन्द का निश्चित मत था कि वैदिक शिक्षाओं के पालन से स्वशासन एवं स्वराज्य स्वतः सुलभ हो जायेंगे राष्ट्रीय आन्दोलन की नींव डालने वाले स्वामी दयानन्द जी की सन् 1883 में मृत्यु हो गयी उनके बाद उनके शिष्यों द्वारा अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये गये। ब्रिटिश नौकरशाही आर्य समाजियों को समाज सुधारक नही, खतरनाक राजदोही मानती थी। पंजाब की राजनीतिक अशांति का उत्तरदायी मुख्य रूप से आर्य समाज को ठहराया गया। सन् 1907 में रावल पिंड़ी के दंगों के लिए लाला लाजपतराय और सरदार अजीत सिंह को जिम्मेदार ठहराया गया और देश से निर्वासित होने की सज़ा दी।

अंग्रेज सैनिक अधिकारियों द्वारा गुप्त सरकारी प्रतिवदेनों में यह आरोप दोहराया जाता रहा कि आर्य समाज ने प्रचार पुस्तकों,पत्र पत्रिकाओं आदि द्वारा सैनिकों की वफादारी को भंग करने की चेष्टा की है। सैनिकों के आर्य समाज में जाने पर रोक लगा दी गयी। कलकत्ता से प्रकाशित 'दि इंगलिश मैन' ने अपने पंजाब स्थित संवाददाता के माध्यम से लाल लाजपतराय पर देशी सेनाओं में असंतोष पैदा करने का असंगत एवं झूठा आरोप लगाया गया। 24 अप्रैल 1908 को पत्र के विरूद्ध मुकदमा दायर किया जिसमें 15,000 रूपया बतौर हरजाने पत्र मालिकों की ओर से लाला लाजपतराय जी को दिया गया।

सन् 1909 में पटियाला रियासत के वकील एडवर्ड ग्रे ने विशेष अदालत के समक्ष अभियुक्तों के विरूद्ध अपना प्रारम्भिक बयान दिया। ग्रे ने अपनी सारी योग्यता यह सिद्ध करने में लगा दी कि आर्य समाज एक राजद्रोही संस्था है क्योंकि स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रंथों में राजद्रोह का प्रचार किया है। यह भी कहा गया क्योंकि लाला लाजपतराय आर्य समाजी है और राजद्रोहीं है अतः सभी आर्य समाजी राजद्रोही समझे जा सकते है। पटियाला के इस असफल अभियोग के पश्चात जिसे रियासत ने शीघ्र ही वापिस ले लिया था, सरकारी अधिकारियों ने अनुभव किया कि आर्य समाज को राजद्रोही मानकर उस पर अत्याचार करने से समाज की शक्ति बढ़ेगी, घटेगी नहीं। परन्तु गुरूकुल कांगड़ी पर सरकार की कड़ी दृष्टि बनी रही। गुरूकुलों को राजद्रोह के अड्डे माना जाने लगा। सन् 1907 से 1913 के बीच में ऐसे देशभक्त भी गुरूकुल को अपना आश्रय स्थल समझते थे जिनके पीछे सरकार के वारंट घूम रहे थे प्रसिद्ध देशभक्त लाला हरदयाल लगभग एक मास तक पुलिस की आँखों में धूल झोंककर गुरूकुल के ब्रहमचारियों को स्वराज्य का मंत्र देते रहे। उस समय आर्य समाजी को राजद्रोही माना जाता था। गुलाब चन्द 35 वीं सिख रेजीमेंट में क्लर्क था उसे इसलिए नौकरी से पृथक कर दिया गया क्योंकि वह आर्य समाजी था। पंजाब की एक ब्रिगेड में आज्ञा दी गई कि 'सिपाही लोग आर्य समाज की सभाओं में न जाया करें।' सिपाहियों को आदेश दिया गया कि वे 'सद्धर्म प्रचारक' एवं 'आर्य मित्र' पत्रों को न खरीदें। इलाहाबाद के एक सिपाही को यह आदेश मिला कि वह आर्य समाज अथवा नौकरी में से एक को छोड़ दें।

अंग्रेज सैनिक अधिकारियों द्वारा गुप्त सरकारी प्रतिवदेनों में यह आरोप दोहराया जाता रहा कि आर्य समाज ने प्रचार–पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं आदि द्वारा सैनिकों की वफादारी को भंग करने की चेष्टा की है। सैनिकों के आर्य समाज में जाने पर रोक लगा दी गयी। कलकत्ता से प्रकाशित 'दि इंगलिश मैन' ने अपने पंजाब स्थित संवाददाता से लाल लाजपतराय पर देशी सेनाओं में असंतोष पैदा करने का असंगत एवं झूठा आरोप लगाया गया। 24 अप्रैल 1908 को पत्र के विरूद्ध मुकदमा दायर किया गया जिसमें 15,000 रूपया बतौर हरजाने पत्र मालिकों की ओर से लाला लाजपतराय जी को दिया गया।

उस समय हिन्दी पत्रकारिता ने भी आर्य समाजियों पर किये जा रहे अत्याचारों पर खुलकर लिखा। पत्रिका 'बिहारी' ने लिखा 'रावण ने हमारे नेताओं को जेल में डाल रखा है। लाखों जनता भूखी प्यासी रहने को विवश है। ऐसे रावण सदृश शासक भारत पर शासन करने के अधिकारी नही हैं।' 14 फरवरी 1908 को हिन्दुस्तान ने लिखा 'देश के लिए स्वराज्य वैसा ही है जैसा शरीर के लिए आत्मा आवश्यक है। स्वराज्य भिक्षावृत्ति नहीं अपितु पराक्रम पुरूषार्थ से ही प्राप्त हो सकेगा। सन्

www.thearyasamaj.org

1914 में लाला लाजपतराय की अध्यक्षता में आर्य कुमार परिषद की ओर से 'आर्य कुमार' नामक मासिक भी प्रकाशित किया गया।पंजाब से 'आर्य ज्योति' और आर्य मर्यादा' पत्र भी प्रकाशित हुए। ऐसे अल्पज्ञात, गुमनाम पत्रकार सम्पादक भी हैं जिन्होंने आर्य समाज से प्रेरणा लेकर राष्ट्रवाद के उन्नयन में विशेष योगदान दिया। बाद में स्वामी श्रद्धानन्द जी भी सत्याग्रह आंदोलन से सम्बद्ध हो गये। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सन् 1919 में किसानों को लगान एवं भूमिकर न चुकाने के लिए तैयार किया रौलट एक्ट के विरोध में दिल्ली में जुलूस निकाला गया जिसका नेतृत्व कर रहे स्वामी श्रद्धानन्द पर गोली चलाने की धमक दी। स्वामी जी ने अपनी नंगी छाती सामने कर दी। उस समय जुलूस पर गोलियाँ नहीं चलायी गयी। परन्तु जब जुलूस रेलवे स्टेशन पर पहुँचा तो गोलियाँ चला दी गई। इससे पांच व्यक्तियों की मृत्यु हो गई और कुछ अन्य सत्याग्रहियों को सख्त चोटें आयीं।

इसी समय आर्य समाज की कर्मस्थली पंजाब में रौलट एक्ट के विरोध में उपद्रव के समाचार सुनकर स्वामी श्रद्धानंद एवं डा. सत्यपाल ने गांधी जी को पंजाब आने का निमंत्रण दिया। परन्तु अंग्रेज सरकार ने गांधी जी को गिरफ्तार कर वापिस बम्बई भेज दिया। महात्मा गांधी की गिरफ्तारी की खबर पूरे पंजाब में फैल गयी। पंजाब में उपद्रव भड़क गये। उसी समय आर्य समाजी नेता डा. सत्यपाल एवं डा. किचलू को गिरफ्तार कर अज्ञात स्थान पर भेज दिया गया इससे अमृतसर में बहुत उत्तेजना फैल गयी। भीड़ ने अपने नेताओं की रिहाई की माँग करते हुए जिला मजिस्ट्रेट की कोठी को घेर लिया। सैनिक अधिकारियों ने भीड़ को तितर–बितर करने के लिए गोलियाँ चलायी जिससे दो व्यक्ति घटनास्थल पर ही मर गये और अनेक को चौटें आयी जनता ने उन शहीदों का जुलूस निकाला मार्ग में नैशनल बैंक को फूँक दिया गया। यूरोपियन मैनेजर को जान से मार दिया गया। इसी दिन अमृतसर नगर का शासन मार्शल ला अधिकारियों के सुपुर्द कर दिया गया।

बैशाखी के दिन अमृतसर के जलियाँ वाले बाग में भारी सभा हुई। इसमें महात्मा गांधी, डा. सत्यपाल एवं डा. किचलू की रिहाई की माँग की गई एवं रोलेट एक्ट को काला कानून बताकर भर्त्सना की गई। जनरल डायर ने लोगों को चेतावनी दिये बिना उन पर 303 नम्बर की 1650 गोलियाँ चलवाई और उसने गोली–वर्षा उसी समय बंद की जब उसका गोला बारूद समाप्त हो गया जिसमें सरकारी रिपोर्ट के अनुसार 400 लोग मारे गये, 2 हजार से अधिक घायल हुए। कांग्रेस द्वारा नियुक्त जाँच समिति की रिपोर्ट के अनुसार कम से कम एक हजार व्यक्ति मारे गए। जालियाँवाला बाग दुर्घटना का राष्ट्र के मन एवं मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ा यह स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में वैसा ही विद्रोह था जैसा सन् 1857 का विद्रोह।

अन्य आर्य समाजी नेताओं का नाम भी उल्लेखनीय है। भाई परमानन्द, लाला हंसराज, श्यामजी कृष्ण वर्मा , लाला लाजपतराय आदि।श्यामजी वर्मा ने बंगभंग का विरोध किया। वर्मा जी ने 'बम बनाने की विधि' पुस्तक लिखकर भारतीय क्रांतिकारियों तक भिजवाई। श्यामजी वर्मा ने वीर सावरकर, लाला हरदयाल भाई बालमुकुन्द आदि को प्रेरणा प्रदान की।

मदन लाल धीगरा जिन्होंने कर्नल वायली की हत्या की वे भी आर्य समाजी ही थे। भाई परामानंद को फांसी की सजा सुनायी गयी परन्तु मदन मोहन मालवीय जी के प्रयासों से फांसी को आजीवन कारावास में बदल दिया गया काकोरी कांड के क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल भी आर्य समाजी थे। शाहजहाँ खाँ ने आर्य समाज मंदिर पर हमला करने वाले उत्तेजित मुसलमानों को ललकार कर तितर–बितर हो जाने पर मजबूर कर दिया। इस प्रकार आर्य समाज ने राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में बढ़चढ़कर भाग लिया। आर्य समाज ने राष्ट्रीय आंदोलन के लिए तीन प्रकार के कार्यकर्ता दिये। प्रथम, लाला लालपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे नेता जिन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में बढ़चढ़कर भाग लिया। द्वितीय, श्याम कृष्ण जी वर्मा , भाई परमानंद, मदन लाल धीगरा जो सशस्त्र क्रांति में विश्वास रखते थे। तृतीय, लाला हंसराज नारायण स्वामी जैसे शिक्षाविद् एवं धर्म प्रचारक जिन्होंने धार्मिक सामाजिक सुधारों में अपनी आहुति दी। आर्य समाज का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों में स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान रहा है।

आर्य समाज ने भारतीय राष्ट्रवाद का शंखनाद किया, पुनर्जागरण किया। भारत को धार्मिक एवं सामाजिक सुधारक, क्रांतिकारी, राष्ट्रउन्नायक दिये। जिसके कारण आज हम स्वाधीन भारत में साँस ले रहे है। आज व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय चरित्र में गिरावट आ रही है। ऐसी स्थिति में आज पुनः आर्य समाज को वैसा ही ओजस्वी एवं तेजस्वी होने की आवश्यकता है तभी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का सपना साकार हो सकेगा।

भगवानदीन आर्य कन्या स्ना0 महाविद्यालय
लखीमपुर जि0 खीरी (उ0 प्र0)

www.thearyasamaj.org

गोपीनाथ गिरजा नन्दिनी
आदर्श कन्या इण्टर कॉलेज

कल्याणी देवी, इलाहाबाद

(आर्य समाज रानीमंडी अतरसुइया, इलाहाबाद, द्वारा संचालित)

नोट :- कक्षा 1 से कक्षा 10 तक सवित्त तथा

कक्षा 11 से 12 (इण्टर) वित्तविहीन

डा० बी.पी. सागर
अध्यक्ष

श्री सोहन जी पाण्डेय
संरक्षक

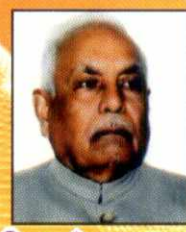

इंजी० रमेश चन्द्रगुप्त
प्रबंधक

डा० रश्मि अग्रवाल
प्रधानाचार्या

ओ३म्

दयानन्द वैदिक पूर्व माध्यमिक विद्यालय

धामपुर (बिजनौर) उ०प्र०

कक्षा-१ से ८ तक मान्यता प्राप्त विद्यालय नगर का सबसे प्राचीन विद्यालय

आर्य समाज धामपुर (बिजनौर) द्वारा संचालित द०वै०पू०मा० विद्यालय-धामपुर में प्रतिदिन प्रार्थना के पश्चात दैनिक संध्या-हवन किया जाता है, प्रत्येक शनिवार को वैदिक संस्कृति में योग्य एवं अनुभवी शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा हवन किया जाता है, जिसमें विद्यालय के सभी छात्र/छात्राएँ उपस्थिति होकर अपना पूर्ण सहयोग देते है। विद्यालय में समय-समय पर बाल-सभा, अभिभावक सभा, एवं विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता हैं।

श्री टी.पी.सिंह
प्रबन्धक

श्री पुष्पेन्द्र सक्सेना
उप-प्रबन्धक

श्रीमती बीना शर्मा
प्रधानाचार्या

www.thearyasamaj.org

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती बलिदान विशेषांक के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित

श्री दयानन्द सरस्वती साधना मन्दिर इण्टर कालेज

जाजूमई, फिरोजाबाद

संचालित-आर्य समाज, जाजूमई, फिरोजाबाद

बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ
वृक्ष धरा का भूषण हैं।।

प्रधानाचार्य

सुभाष चन्द्र गुप्ता
अध्यक्ष

दयाशंकर गुप्ता
प्रबन्धक
मो. 9927067196

स्थापित वर्ष - 1877

ओ३म्

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज (रजि०)

सम्बद्ध-आर्य प्रतिनिधि सभा, 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ, उ0प्र0

पं.राम प्रसाद बिस्मिल

पं0 राम प्रसाद बिस्मिल एवं अशफ़ाक उल्लाह की कर्मस्थली

आर्य समाज रजि0 टाउन हाल रोड,
शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश

प्रधान	उप-प्रधान	कोषाध्यक्ष	उप-मंत्री	मंत्री
ओम प्रकाश आर्य	अनिल कुमार आर्य	कृष्ण कुमार आर्य	श्रीमती लक्ष्मी देवी	राजेश कुमार आर्य
मो. 9335299289	मो. 8052877777	मो. 7785837772	मो. 9369806776	मो. 9336281293

www.thearyasamaj.org

गोपीनाथ गिरजा नन्दिनी
आदर्श कन्या इण्टर कॉलेज

कल्याणी देवी, इलाहाबाद

(आर्य समाज रानीमंडी अतरसुइया, इलाहाबाद, द्वारा संचालित)

नोट :- कक्षा 1 से कक्षा 10 तक सवित्त तथा कक्षा 11 से 12 (इण्टर) वित्तविहीन

डा0 बी.पी. सागर
अध्यक्ष

श्री सोहन जी पाण्डेय
संरक्षक

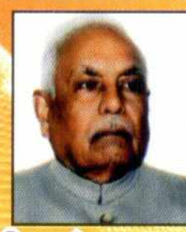

इंजी0 रमेश चन्द्रगुप्त
प्रबंधक

डा0 रश्मि अग्रवाल
प्रधानाचार्या

ओ३म्

दयानन्द वैदिक पूर्व माध्यमिक विद्यालय

धामपुर (बिजनौर) उ0प्र0

कक्षा-१ से ८ तक मान्यता प्राप्त विद्यालय नगर का सबसे प्राचीन विद्यालय

आर्य समाज धामपुर (बिजनौर) द्वारा संचालित द0वै0पू0मा0 विद्यालय-धामपुर में प्रतिदिन प्रार्थना के पश्चात दैनिक संध्या-हवन किया जाता है, प्रत्येक शनिवार को वैदिक संस्कृति में योग्य एवं अनुभवी शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा हवन किया जाता है, जिसमें विद्यालय के सभी छात्र/छात्राएँ उपस्थिति होकर अपना पूर्ण सहयोग देते है। विद्यालय में समय-समय पर बाल-सभा, अभिभावक सभा, एवं विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता हैं।

श्री टी.पी.सिंह
प्रबन्धक

श्री पुष्पेन्द्र सक्सेना
उप-प्रबन्धक

श्रीमती बीना शर्मा
प्रधानाचार्या

www.thearyasamaj.org

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती बलिदान विशेषांक के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित

श्री दयानन्द सरस्वती साधना मन्दिर इण्टर कालेज

जाजूमई, फिरोजाबाद

संचालित-आर्य समाज, जाजूमई, फिरोजाबाद

प्रधानाचार्य

बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ
वृक्ष धरा का भूषण है।।

सुभाष चन्द्र गुप्ता
अध्यक्ष

दयाशंकर गुप्ता
प्रबन्धक
मो. 9927067196

स्थापित वर्ष - 1877

ओ३म्

आर्य समाज (रजि०)

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

पं.राम प्रसाद बिस्मिल

सम्बद्ध-आर्य प्रतिनिधि सभा, 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ, उ0प्र0

पं0 राम प्रसाद बिस्मिल एवं अशफ़ाक उल्लाह की कर्मस्थली

आर्य समाज रजि0 टाउन हाल रोड, शाहजहॉपुर, उत्तर प्रदेश

प्रधान	उप-प्रधान	कोषाध्यक्ष	उप-मंत्री	मंत्री
ओम प्रकाश आर्य	**अनिल कुमार आर्य**	**कृष्ण कुमार आर्य**	**श्रीमती लक्ष्मी देवी**	**राजेश कुमार आर्य**
मो. 9335299289	मो. 8052877777	मो. 7785837772	मो. 9369806776	मो. 9336281293

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

एक ख्याति प्राप्त विश्वसनीय फर्म

राम रहीम बिल्डर्स

आलमबाग, लखनऊ

नोट- समस्त प्रकार के भवनों व अपार्टमेन्ट को ठेके आदि पर तथा लेबर रेट पर कार्य किया जाता है।

विजय शुक्ला प्रोपराइटर
मो. 9918039000

रजि. नं. 422/58-59

ओ३म्

संस्थापना-1956

विद्या दान सर्वोत्तम दान है

गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय, सिराथू

जनपद कौशाम्बी (इलाहाबाद) उत्तर प्रदेश

स्वामिनी संस्था-आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., लखनऊ

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विद्यालय वाराणसी एवं उ.प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद, लखनऊ से सम्बद्ध

राज्य सरकार द्वारा प्रथम श्रेणी (क-वर्ग) में मान्यता प्राप्त

छात्रों के रहने हेतु-छात्रावास उपलब्ध है

अजय श्रीवास्तव
प्रशासक
मो. 9793006777

आचार्य अशर्फी लाल शास्त्री
प्राचार्य
मो. 9415635554

दीपावली पर्व (ऋषि निर्वाण दिवस)

लेखक - आचार्य रामज्ञानी आर्य

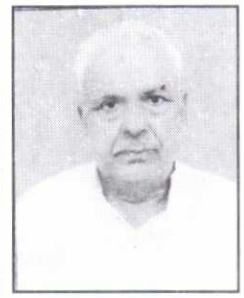

दीपावली पर्व भारत ही नहीं अपितु विश्व में भी प्रकाश पुंज यज्ञोपरान्त आर्यजन अपने घरों पर घृत का दीपक जलाकर, ज्योति-रूप में मनाते थे। भारत में राष्ट्रीय-पर्व के रूप में मनाया जाता है।

आज से ठीक १३४ वर्ष पहले ३० अक्टूबर १८८३ की सन्ध्या को समस्त आर्यावर्त देश दीपावली मना रहा था, उसी समय वेद के सार्व भौम, सनातन तथा स्वतंत्र सत्यों को संसार में पुनर्जीवित करने वाले वैदिक विद्या के अद्वितीय विद्वान, ब्रह्मचारी, निर्भीक, सत्यनिष्ठ सन्यासी और महान तत्वदर्शी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने निर्वाण-पद प्राप्त किया एवं साथ ही मृत्यु पर विजय प्राप्त की।

विश्व में जितने महापुरुष हुए हैं, उनमें से अद्वितीय समाज सुधारक ऋषिवर दयानन्द सरस्वती एक थे। उनके विचार आज भी प्रासंगिक एवं ग्राहय हैं।

आज के दौड़ में जो चतुर्दिक अन्धविश्वास, ढोग पाखण्ड अन्ध विश्वास फैला हुआ है, बुद्धिजीवीं वर्ग आज महर्षि दयानन्द सरस्वती को याद कर रहे हैं। महर्षि ने समाज में व्याप्त सती-प्रथा, बाल-विवाह, दहेज मूर्तिपूजा, श्राद्ध पिण्डदान आदि जैसी कुप्रथाओं के प्रतिकूल एक अद्वितीय आन्दोलन छेड़ा था।

अमृतसर में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पंडितों को शास्त्रार्थ का चैलेन्ज दिया तो वे बहुत अधिक संख्या में 'जय-जय' की आवाज करते हुए- उनकी सभा में आये। के सब तिलक लगाये, पुस्तकें बगल में दावे, स्वामी जी के सामने बड़ी अकड़ के साथ बैठ गये। उन्होंने शास्त्रार्थ विचार- विनिमय तो कुछ नहीं किया। एका एक उनके चेलो ने स्वामी जी पर ईट-पत्थर फेकना आरम्भ कर दिया। इससे स्वामी जी के भक्तों में बड़ा क्षोभ उत्पन्न हुआ। उसी समय जवाब में दण्ड देने को उद्यत हो गये। स्वामी जी ने कहा - ''यह ईट-पत्थर नहीं- फूलों की वर्षा है'' मत (सम्प्रदाय) रूपी मदिरा से उन्मत जनों पर कोप नहीं करना चाहिए हमारा काम एक वैद्य जैसा है, उन्मत्त मनुष्य को वैद्य, औषधि देता है, न कि उसके पागलपन के कारण मारपीट करता है। आज जो लोग मुझ पर ईट-पत्थर और धूल बरसाते हैं वे ही एक दिन फूलों की वर्षा करने लगेंगे। व्याख्यान तो समय पर ही बन्द करूंगा। स्वामी जी ने कहा कि मेरे ऊपर अनेक बार विष आदि घातक पदार्थो का प्रयोग किया गया। मैंने उसे योग क्रियाओं से बाहर निकाल दिया। शरीर में कुछ न कुछ उसका दूषित प्रभाव रही जाता है। यही कारण है कि अब मुझे अपने शरीर के अधिक ठहरने का भरोसा नही है, अन्यथा मैं एक शताब्दी तक तो पूर्ण स्वस्थ अवस्था में जीवित रह ही सकता था।

अनेक बार प्राणघातक विष देने पर भी स्वामी जी ने कहा -

''यदि मुझे तोप के मुँह से बाँध दिया जाय और तोप चलाने से पूर्व मुझसे बोलने के लिए कहा जाये, उस समय भी मैं सत्य का मण्डन करूँगा और असत्य का खण्डन करूँगा।

पं० गुरूदत्त विद्यार्थी साइन्स के उच्च कोटि के विद्वान थे इन्हें ईश्वर के सत्ता में विश्वास नहीं था। इनको नास्तिक से आस्तिक बनाया।

अन्त में, मैं यही कहना चाहता हूँ कि स्वामी जी के प्रति सच्ची श्रद्धाजंलि यही होगी कि उनके बताये और बताये गये नियमों, सिद्धान्तों एवं उद्देश्यों को अपने जीवन में लागूकर, ईर्ष्या-द्वेष मिटाकर, समाज में व्याप्त ढोंग, पाखण्ड एवं अन्धविश्वासों को दूरकर आर्य-जन ऋषि के अधूरे स्वप्नों को साकार करने में उद्यत हों।

मो०नं०- ६६५६३२६७५६, ८५७४२१८३५७

गोरक्षा सर्वोत्तम है और इसमें सबसे अधिक लाभ है गो रक्षा करना सब मनुष्यों का कर्त्तव्य है।

-महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

महर्षि महिमा

-के.के. मलिक, सभासद

अथ ऋषि दयानन्द तेरी युग युग तक अमर कहानी।
हम भूल नहीं सकते हैं की तूने जो कुर्बानी।।
तू धर्म का था दीवाना, सच्चाई का परवाना।
तू झुका सत्य के आगे, तेरे आगे झुका जमाना।
सुन तेरी अद्‌भुत वाणी दुनियाँ हो गई दीवानी। हम भूल नहीं..............।
लाखों भूले भटकों को तूने मार्ग दिखलाया।
जो श्रद्धा करके आया उसे श्रद्धानन्द बनाया।
सच तो यह है मुर्दो का बख्शी तूने जिन्दगानी। हम भूल नहीं..............।
बन सच्चा सेवक तूने की देश धर्म की सेवा।
लाखों तेरे अनुयायी सबको यह बाँटी मेवा।
मिलके जो आज हम बैठे, सब तेरी मेहरबानी। हम भूल नहीं..............।

x x x x x x x x

जिनके हाथों में सूरज है, वे नहीं अँधेरे से डरते।
जो अमर सृजन करने वाले हैं, वे कभी नहीं मरकर मरते।।
जिनकी बाहों में ताकत है, जिनके जीने में साहस है।
वे बीच समन्दर कूद पड़े, वे ढूँढा नाव नहीं करते।।
जो मंजिल के दीवाने हैं, उनको मंजिल खुद ही ढूँढे।
वे मंजिल के दीवाने क्या, जो खुद मंजिल ढूँढा करते हैं।।
उनका जीना ही जीना है, उनका मरना ही मरना है।
जो औरों की खातिर जीते, जो औरों की खातिर मरते हैं।।

-आर्य समाज मंदिर
लखीमपुर खीरी

जितने विद्याभ्यास, सुविचार ईश्वरोपासना, धर्मानुष्ठान सत्य का संग, ब्रह्मचर्य जितेन्द्रियतादि उत्तम कर्म है, वे सब तीर्थ कहाते हैं क्योकि इनको करके जीव दु:ख सागर से तर जा सकता है।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द की आत्मकथा में वर्णित भांग-सेवन का प्रसंग

–भावेश मेरजा

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सन् 1879 में लिखकर 'थियोसोफिस्ट' पत्रिका में प्रकाशन हेतु भेजे गए अपने आत्मकथन में भांग पीने के प्रसंग के बारे में लिखा है–

"तत्पश्चात् जिस वस्तु (अर्थात् सत्य विद्या और योग) की खोज में था उसके अर्थ आगे को चल दिया। और असूज (आश्विन) सुदी 2 सं0 1913 (1856) को दुर्गाकुण्ड के मन्दिर पर जो चंडालगढ़ (चुनार) मे हैं पहुंचा। वहां दिन व्यतीत किये। यहां मैंने चावल खाने सर्वथा छोड़ दियें और केवल दूध पर अपना निर्वाह करके दिन रात योगविद्या के अध्ययन और अभ्यास में तत्पर रहा। दौर्भाग्यवश वहां मुझे एक बड़ा दोष लग गया अर्थात् भांग पीने का स्वभाव हो गया। सो कई बार उसके प्रभाव से मैं सर्वथा बेसुध हो जाया करता।" (आत्मकथा, पृ0 17)

'थियोसोफिस्ट में प्रकाशित अन्ग्रेजी वाक्य इस प्रकार है–

.........unfortunately, I got this into the habit of using bhang, a strong narcotic leaf and at times felt quite intoxicated with its effect." (आत्मकथा, पृ0 43)

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भांग पीने की यह बात महर्षि जी ने स्वयं अपने आत्मकथन में प्रकट की है, जिसे नकारने का नही कोई प्रश्न होता है, और न ही ऐसा करने की कोई आवश्यकता है। अगर वे स्वयं इस बात का उल्लेख अपने आत्मकथन में नहीं करते तो सम्भवतः संसार को इसका संकेत तक नहीं मिल सकता था। मगर महान् आत्माओं का यह स्वभाव व विशेषता होती है कि वे अपने दोषों को भी छुपाते नहीं है, प्रत्युत अन्यों के कल्याण के लिए उन्हें सार्वजनिक भी करते हैं, जैसा कि महर्षि दयानन्द जी ने इस भांग–सेवन की बात को लेकर किया है। स्वामी श्रद्धानन्द जी, गांधीजी आदि कई अन्य महापुरूषों की आत्मकथाओं मे भी ऐसी विशेषता देखने को मिलती है।

यह सर्व विदित है कि भारतीय साधु–संन्यासियों में संसर्ग दोष से भांग आदि मादक द्रव्योंके सेवन का व्यसन शताब्दियों से प्रचलित है और महर्षि दयानन्द जी भी अपने साधु जीवन के प्रारम्भिक काल में इस दोष से बच नहीं सके थे। भांग पीने वाली उक्त घटना तब की है जब वे लगभग 30–31 वर्ष के थे और योगियों की खोज में लगे हुए थे। लगभग चार वर्ष पश्चात् वे मथुरा आते हैं (सन् 1860 के अन्त में) और वहां व्याकरण के महान् विद्वान 81 वर्षीय प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द जी दण्डी की पाठशाला में विद्याध्ययन करने में सर्वात्मना प्रवृत्त होते है। महर्षि ने स्वयं इस भांग पीने को "दौर्भाग्यवश " –unfortunately" लिखा है। कालान्तर मे उन्होने सर्वत्र अपने उपदेशों एवं ग्रन्थों के माध्यम से देशवासियों को ऐसे मादक द्रव्यों का सेवन न करने की ही बात कही व लिखी है।

कोई भी मनुष्य जन्म से ही बना–बनाया स्वयम्भू महापुरूष के रूप में प्रकट नहीं होता है। उसे विभिन्न प्रकार के संघर्षो से गुज़र कर स्वयं का परिष्कार–सुधार कर, अपनी दुर्बलताओं से ऊपर उठ कर निरन्तर आगे बढ़ना होता है संसर्ग दोष तथा अन्य मानवीय दुर्बलताएं कभी कभी ऐसी महान् आत्माओं के जीवन आचरण में भी– विशेष कर उनकी प्रारम्भिक या अपरिपक्व अवस्था में –देखी जाती है। फिर भी हमारा आदर्श तो यही होना चाहिए– "यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि।"(तैत्तरीयोपनिषद्) उपनिषद् के इस वाक्य का यही तात्पर्य है कि हम अपने गुरूजनों या अन्य बड़ो के जीवन में से केवल अच्छाईयां ग्रहण करें और अगर उनके जीवन में कही कोई दोष आदि प्रतीत होता हो तो उसका ग्रहण–अनुसरण न करें।

महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज के अन्ध विरोधी लोग कई वर्षो से भांग सेवन के इस प्रंसग को लेकर व्यर्थ का कोलाहल करते आये है महर्षि ने तो इस संसर्ग जन्य दोष से तत्काल ही स्वयं को मुक्त कर लिया था और वे अपने जीवन में लोगों को इस प्रकार के सभी व्यसनों का परित्याग करने का निरन्तर उपदेश भी करते रहें।उन्होंने वाणी और लेख के द्वारा नशीले पदार्थो के सेवन को निरन्तर निरूत्साहित किया। गुरू विरजानन्द जी से विद्या ग्रहण करने के पश्चात गंगा के तटवर्ती प्रदेश में धर्म प्रचारार्थ भ्रमण करते समय (सम्वत् 1924, सन् 1867) उन्होंने जनसाधारण के समक्ष जिन आठ त्याज्य गप्पों (दूषणों) की बात रखी थी, उनमें पांचवे क्रम पर उन्होंने लिखा है –"भंगादि नशाकरणं पंचमं गप्पम्" अर्थात "भांगादि नशीले पदार्थो का सेवन पांचवी गप्प है" इन आठ गप्पों को कालान्तर में महर्षि ने कानपुर में प्रकाशित किए गए अपने एक संस्कृत विज्ञापन में भी सम्मिलित किया था। फिर इस

www.thearyasamaj.org

विषय को लेकर व्यर्थ की चर्चा या विवाद करने का कोई औचित्य नहीं है।

कई हिन्दु पौराणिक मन्दिरों तथा धर्मस्थानों में साधु –सन्यासियों वैरागी तथा खाखी बाबाओं में भांग तथा चिलम तम्बाकू रूप मे गांजा आदि नशीले पदार्थो का सेवन आज भी खुले आम प्रचलित है। कुम्भ आदि मेले में नंगे साधुओं के डेरे में भांग– तम्बाकू का सेवन आम बात है। आर्य समाज के सुप्रसिद्ध लेखक डॉ0 भवानीलाल भारतीय ने ठीक ही लिखा है–

''शैव मतानुयायियों ने तो अपने आराध्य शिव के महाभंगड़ के रूप मे पेश किया जो भांग, गांजा, चरस जैसे पदार्थो का सेवन कर चौबीस घण्टे आंखे लाल किये रहते हैं। उनके अनुयायी भी अपने देवता के आचरण का अनुकरण करते है और शिवरात्रि के दिन शिव मन्दिरो मे भांग घोटी जाती है और भक्तो में प्रसाद रूप मे वितरित की जाती है। शैव मन्दिरों में एक अनोखा दृश्य तब देखने में आता है जब शिव के ये भक्त भांग से शिवलिंग का श्रृंगार करते है। मूर्ति पूजा का यह पाखण्ड इन मन्दिरों में कितना भ्रष्ट रूप धारण कर लेता है यह तब प्रत्यक्ष होता है जब शिव मन्दिर के पुजारियो को हम वहां आने वाले श्रद्धालुओं को यह सूखी भांग अथवा घोटी छनी भांग प्रसाद रूप में वितरित करते देखते है। दुर्व्यसनों को धार्मिकता का जामा पहनाना अनुचित है।'' (ऋषि दयानन्द प्रतिपादित आठ गप्प तथा आठ सत्य, पृ0 47–48)

इसलिए तथाकथित 'सनातन धर्म' के समर्थकों एवं आर्य समाज के अन्ध आलोचकों को इस भांग पीने वाले प्रसंग को लेकर महर्षि दयानन्द की निन्दा करने से बचकर अपने मन्दिरों की अवस्था को सुधारनेका कार्य करने की महती आवश्यकता है। ऐसे ही समस्त धर्मिक –सामाजिक संस्थाओं का भी यह कर्तव्य बनता है कि वे समाज को व्यसन एवं नशा मुक्त करने की दिशा में अपनी सक्रिय भूमिका निभाए।

8–17 टाउनशिप, पो0 नर्मदानगर,
जि0 भरूच, गुजरात– 392015

प्रभु भक्ति का फल

जो सत्य भाव (सच्चे हृदय) से परमेश्वर की उपासना करते और यथाशक्ति उसकी आज्ञा का पालन करते और सर्वोपरि सत्कार के योग्य परमात्मा को मानते हैं उनको दयालु ईश्वर पापाचरण के मार्ग से पृथक् कर धर्मयुक्त मार्ग में चला के विज्ञान (सत्यार्थ ज्ञान) देकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध करने के लिए समर्थ कर देता है।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

क्रान्तदर्शी महर्षि दयानन्द सरस्वती

सत्यपाल "सरल" आर्योपदेशक

भारतवर्ष देश पर जब क्रूर अन्धेरी तमिस्रा निगूढ़ कालिमा चहुँ ओर छाई थी, अभागा देश सर्वनाशी प्रगाढ़ निंद्रा में अकर्मण्य भाव से अभिभूत पतन की ओर अग्रसर था, राष्ट्रीयता की भावना छीण हो गई थी, पुरातन गौरव को भुलाकर भारतवासी अन्धेरे कूप में गिरकर अपने तेज को नष्ट कर रहे थे, वेद की विद्या का लोप हो गया था, जिस कारण अज्ञान–अविद्या पाखण्ड अपने चर्म पर था, उत्थान पथ अवरुद्ध हो गया था, प्रगति के सब मार्ग बन्द हो गये थे, उत्साह नाम मात्र को न था, अराजकता के उस वातावरण में सत्य का दम घुटने लगा था, सुधार की हर खिड़की बन्द पड़ी थी, ईमानदार उद्देश्य धरासायी हो गया था, निराशा की उस निशा ने देश और जाति को घोर अधःपतन की ओर अग्रसर कर दिया था, स्वाभिमान को भूलकर चेतना शून्य मृत शरीर की भांति जीवन से दूर–बस जिये जा रहे थे, आर्य जाति मरणासन्न थी, उस काल में पवित्र भारत वर्ष एवं तथाकथित हिन्दू समाज की शोचनीय अवस्था थी, सत्य तो यह है कि धार्मिक विप्लव के समय कहने को बुद्धिमान थे, किन्तु मूर्खता की सुदृढ़ सांकल में जकड़े हुए थे, यह अतीव दुखद निराशा पूर्ण अवस्था थी।

भारत की यह पुण्य भूमि जिसका जन–धन–शक्ति साहस सब कुछ खो गया था, ऐसी भयानक निराशा की निशा में सौभाग्य से काठियावाड़ मोरवी राज्य के टंकारा ग्राम में कर्षन जी लाल जी तिवाड़ी सामवेदी ब्राह्मण के घर सम्व्त् 1881 विक्रमी सन् 1825 ई. को दिव्य आत्मा का आगमन (जन्म)हुआ, यह सौभाग्य शाली बालक ही लोक में महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुआ, आधुनिक भारत का निर्माता वेद रूपी सूर्य प्रकाशक–क्रांति का प्रथम योद्धा–शान्ति का अग्रदूत जिसके यश की प्रशंसा बुद्धिमान साहित्य प्रेमी सत्यान्वेषी सब सुधीजन बड़े मनोयोग से करते हैं।

धन्या सा जननी धन्यो जनकोऽपि स तादृशः।
याभ्याम धर्मनाशाय दयानन्दोदयः कृतः।। दयानन्द दिग्विजयम्

उस माता तथा पिता को धन्यवाद है, कि जिन्होंने अधर्म के नाश के लिए दयानन्द को उत्पन्न किया।

महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव भारतवर्ष के सौभाग्य का दिन था जो देश अनेक कुप्रथाओं–अपकार्यो से अपनी विलक्षण आभा खो रहा था, उस देश को पुनः पुरातन गौरव प्राप्त कराया, वैचारिक क्रान्तिकारी हलचल पैदाकर चेतना का सिंहनाद किया, यह शुभ दिन सभी देशवासी राम–कृष्ण की सन्तानों के लिए हर्ष का दिन था, महर्षि दयानन्द से पूर्व समाज सुधार के अनेक आन्दोलन बड़े महापुरूषों ने चलाये, किन्तु ये जितने भी आन्दोलन चले–क्षेत्र विशेष या वर्ग विशेष तक सीमित थे, देश से या समाज से ये आन्दोलन नहीं जुड़ सके, इसलिए समाज सुधार के इन आन्दोलनों को न तो जन समर्थन मिला और न इनको सफलता ही मिल पाई, इसी कारण इन आन्दोलन को इनके नीति निर्माताओं को आज कोई जानता तक नहीं है।

किन्तु इन सबसे विपरीत महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कालजयी– भारतीय इतिहास को सूक्ष्म दृष्टि से देखा–परखा–समझा–इतिहास आर्षसाहित्य वेद–दर्शन–व्याकरण आदि सब सत्य शास्त्रों का गहराई से अध्ययन किया तब पाया कि जो देश चक्रवर्ती सार्वभौमिक राज्य करता रहा है, वह आलस्य प्रमाद के कारण दीन–हीन–पराधीन–मानसिक दासता का शिकार हो गया है, शारीरिक दासता बड़ी बात नहीं उससे कुछ प्रयत्न करने पर मुक्ति प्राप्त की जा सकती है, परन्तु मानसिक रूप पर तन्त्र व्यक्ति भूत– प्रेत–ग्रह–नक्षत्र आदि पाखण्ड से भय खाता है, कुछ स्वार्थी लोग स्वार्थवश भ्रम फैलाते रहते हैं और मानसिक दास भ्रॉतियों के शिकार होते जाते हैं, परिणाम स्वरूप भूत–प्रेत–ग्रह–नक्षत्र आदि भ्रम जाल में फंस कर वीर–साहसी भी कायर और भीरू होते जाते है, जहाँ ऐसे भ्रान्त लोग हों, वहाँ उस देश जाति को दुर्भाग्य शाली पतन से कोई नहीं बचा सकता, अनेक आक्रान्ता हमलावर बनकर आये हत्भाग उन आक्रमणकारियों के बन्दी बन कर उनके अधीन हो गये, इसी को अपना भाग्य समझ कर निष्क्रिय हो गये, वैदिक संस्कृति–वैदिक धर्म हमारी मान्यताओं हमारी परम्पराओं के शत्रु विदेशियों ने प्रबल प्रचार किया कि आर्य लोग बाहर ये आये थे, जिससे कोई उनको बाहरी न कह सके, परन्तु महर्षि दयानन्द ने तथाकथित उनके द्वारा रचित असत्य इतिहास का पर्दाफाश करके उन विदेशियों को ललकारा और घोषणा पूर्वक

www.thearyasamaj.org

कहा कि आर्य ही इस देश के मूल निवासी हैं, उन षडयन्त्रकारियों ने उन विदेशी हमलावरों के इतिहास को महान कह कर देशवासियों को पढ़ाया किन्तु जिन्होंने इन विदेशी हमलावरों को मुँह तोड़ साहस के साथ उत्तर दिया, जो अपनी संस्कृति–देश जाति–स्वाभिमान के लिए सब कुछ होम कर गये, उन वीर बहादुरों को कायर और भीरू के रूप में दर्शाया गया।

आर्यों के देश में वैदिक धर्म विक्रत रूप में अनेक मत मजहब सम्प्रदायों में बंट गया था, श्रीराम, श्रीकृष्ण हमारे इतिहास पुरूष थे, वे ईश्वर विश्वासी–वैदिक धर्मी थे, उनके आदर्श–मर्यादा–शौर्य धीरता–वीरता सब भुला दिये, पापियों ने असत्य मान्यता को प्रश्रय देकर उन्हें अवतार घोषित कर दिया, विदेशियों की कृपा से जीवित कुछ धर्म के ठेकेदारों ने उनके नाम से अपनी–अपनी दुकानें सजा ली– और हिन्दुओं में पाखण्ड आदि दुष्प्रचार प्रारम्भ कर दिया, महर्षि दयानन्द ने इन सभी समस्याओं का निदान समस्त दोषों के उन्मूलन को ही सही चिकित्सा मानकर, अवतारवाद–बहुदेवतावाद–भूतप्रेत–ग्रह–नक्षत्र–गुरूड़म–अज्ञान–अविद्या अन्धविश्वास आदि जिनसे राष्ट्रीयता की जड़े हिल जाएं, उन सभी विकृतियों का अपनी शक्ति–सामर्थ्य–आर्ष साहित्य की अथाह शक्ति एवं प्रबल तर्क शक्ति के द्वारा पुरजोर खण्डन किया। देश को जगा दिया।

लेकिन वही हुआ जो हर युग पुरूष के साथ होता है, ये दुनिया वाले क्रूर हैं, हृदय हीन हैं, जो सबका हित चाहे जो सबको वेदरूपी अमृत पिलाये, जो जीवन प्रदान करे, ऐस देवता को भी विष पिलाते हैं, शोक महाशोक महर्षि दयानन्द सरस्वती को धर्म –देश – संस्कृति –जाति के दुश्मनो ने प्राणघातक विष देकर इस देश के दुर्भाग्य को पुनर्जीवित कर दिया– सूर्य अस्ताचल की ओर अग्रसर था वेदों का सूर्य भी अस्त होना चाहता था, कृष्णपक्ष –शुक्ल पक्ष के संगम समय सायं छ:बजे थे, कार्तिक बदी अमास्या 1940 विक्रमसम्वत् दिन मंगलवार 30 अक्तूबर 1883 ई. को रोते बिलखते सभी अनुयाईयों को छोड़कर परलोक गमन किया, कविवर रामदास छबीलदास जी वर्मा ने लिखा है:–

अहो नितान्तं हृदयं विदूयते, निशम्य लोकावतरमुन्नताशयम,,
सम्प्रस्थितं वेदविदामनुन्तमं, श्रीमट्टयानन्द सरस्वतीं कविम्,,

वेदों के जानने वालों में सर्वोत्तम मेधावी उन्नताशय श्री दयानन्द सरस्वती के परलोक गमन को सुनकर हदय को अत्यन्त दुख होता हे !

किसी कवि का वचन है!

वैसी ही धरती है आसमान वही है, वैसा ही जलता है सूरज चॉद वही है,,
नहीं है केवल सुख चैन आनन्द नहीं है, हो भी कैसे धरती पर कोई दयानन्द नहीं है,,

246 नयी बस्ती पार्क रोड़ देहरादून
(उत्तराखण्ड) 248001
चलभाष: 9411394588

जिनका सहाय धर्म है उन्ही का सहाय परमेश्वर है। जब बुरे बुराई न छोडें तो भले भलाई क्यों छोड़े ?

भारत की सबसे बड़ी सम्पत्ति उसकी आध्यात्मिक निधि है। अत: सब कुछ खोकर भी उसकी रक्षा अनिवार्य है।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

बैनीसिंह विद्यावती इण्टर कॉलेज, बालूगंज आगरा

मान्यता प्राप्त अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालय, फोन नं0 : 0562-2463538

- शिक्षा, योग्य, अनुभवी प्रबंध समिति एवं अध्यापकों की टीम
- सभी अध्ययन कक्ष बड़े, हवादार पंखो से परिपूर्ण
- पीने के लिए आर.ओ. का फिल्टर्ड पानी
- प्रार्थना व खेलने के लिए दो मैदान
- जनरेटर की व्यवस्था
- पुस्तकालय की उचित व्यवस्था
- वाहनों के स्टैण्ड की उचित व्यवस्था
- कम्प्यूटर लैब की व्यवस्था
- प्रयोगात्मक क्रिया हेतु दो लैबों की व्यवस्था
- सभी कर्मचारियों का सचेत व कर्मठ होना
- माइक सिस्टम
- अग्निशमन यंत्र
- शिक्षकों के लिए स्टाफ कक्ष
- साफ सुथरा वातारण

अध्यक्ष- श्री प्रमोद कुमार गुप्ता   प्रबन्धक - श्री महेन्द्र कुमार आर्य   प्रधानाचार्य - श्री विजेन्द्र सिंह

भगवानदीन आर्य कन्या इण्टर कालेज

महर्षि दयानन्द मार्ग, लखीमपुर-खीरी

महोदय,

इस विद्यालय का शुभारम्भ 05 फरवरी 1919 में संस्थापक पं0 श्री भगवानदीन मिश्र जी के द्वारा 12 छात्राओं के साथ प्रारम्भ किया गया और स्व0 श्रीमती गोदावरी देवी जी (स्वतंत्रता संग्राम सेनानी) को विद्यालय की प्रथम प्रधानाचार्या होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 12 कलियों का यह पौधा अनवरत रूप से शाखाओं तथा उपशाखाओं के साथ पुष्पित-पल्लवित होता हुआ विशाल वटवृक्ष के रूप में इण्टर कालेज एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

आज जिस रूप से यह विद्यालय शोभित है इसके पीछे स्व0 श्रीमती सुशीला देवी जौहरी, भूतपूर्व प्राचार्या तथा अनेक शिक्षिकाओं व आर्य समाज लखीमपुर के कर्मठ कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम का इतिहास नींव के पत्थर के रूप में जुड़ा है। इस विद्यालय को सन् 1937 में एग्लोवर्नाक्यूलर, सन् 1945 में हाईस्कूल तथा सन् 1948 में इण्टरमीडिएट की मान्यता प्राप्त हुई।

शिक्षण व्यवस्था उच्चकोटि की होने के कारण यह विद्यालय छात्राओं एवं अभिभावकों के आकर्षण का बिन्दु बना हुआ है। विद्यालय में माध्यमिक शिक्षा परिषद् के मानकों के अनुसार सभी शिक्षण साधन उपलब्ध हैं। सन 1990 से शासन की योजना के अन्तर्गत विद्यालय में सचिवीय पद्धति व नर्सरी ट्रेड की कक्षायें भी सफलतापूर्वक चलायी जा रही हैं।

समय-समय पर छात्राओं के चहुमुखी विकास के लिए तरह-तरह के शैक्षिक कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन विद्यालय की प्रधानाचार्या एवं शिक्षिकाओं तथा कर्मचारियों के सहयोग से किया जाता है। छात्राओं के शैक्षिक विकास हेतु विद्यालय वचनबद्ध है।

(प्रज्ञान्शु बरनवाल)

प्रबन्धक

भगवानदीन आर्यकन्या इण्टर कालेज,

लखीमपुर-खीरी।

www.thearyasamaj.org

साभार-परोपकारी (पाक्षिक) -

मूर्तिपूजा और ऋषि दयानन्द

स्मृतिशेष-डॉ.धर्मवीर आर्य

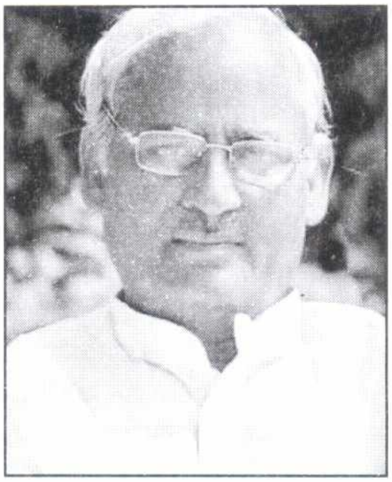

मूर्ति शब्द प्रतिमा या साकार वस्तु के अर्थ में प्रचलित है। संस्कृत में मूर्त शब्द व्यक्त होने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसका दूसरा अर्थ निराकार से साकार होना है। संसार में दो प्रकार की सत्ताएं दृष्टिगोचर होती हैं- एक चेतन और दूसरी अचेतन। ऋषि दयानन्द की मान्यता के अनुवाद दो चेतन सत्तायें स्वरूप से अनादि और पृथक-पृथक हैं। एक अचेतन सत्ता प्रवाह से अनादि और एक है। दूसरी चेतन सत्ता के रूप में जीव और ईश्वर दोनों निराकार हैं और एक अचेतन सत्ता प्रवाह से अनादि होने के कारण कभी व्यक्त और कभी अव्यक्त होती है। इसी को संसार के रचना काल में व्यक्त और प्रलय काल में अव्यक्त दशा में बताया है। इस प्रकार संसार ही कभी मूर्त व्यक्त और कभी अमूर्त अव्यक्त दशा में होता है। इसी अर्थ में उपनिषद् ग्रन्थों में मूर्तञ्च-अमूर्तञ्च इसका प्रयोग दिखाई देता है। संस्कृत साहित्य में मूर्त शब्द का अनेकार्थ प्रयोग पाया जाता है। अमरकोष तृतीय काण्ड नानार्थ वर्ग-३ श्लोक ६६ में मूर्ति शब्द का अर्थ
बताते हुए कहा गया है- मूर्तिः काठिन्यकाययोः। - अर्थात् मूर्ति शब्द का प्रयोग कठोरता और काया-शरीर के अर्थ में
पाया जाता है। मूर्ति शब्द का अर्थ है- आकार वाली वस्तु। इस प्रकार सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, मिट्टी आदि से बनी साकार वस्तु मूर्ति कहलाती है।

एक साकार वस्तु से दूसरी साकार वस्तु की तुलना प्रतिमा कही जाती है। संस्कृत में प्रतिमा शब्द का मूल अर्थ बाट है। जिससे वस्तु को तोला जाता है, उस साधन को प्रतिमा कहा जाता है। एक वस्तु की दूसरी वस्तु से तुलना अनेक प्रकार से होती है- रूप से, भार से, योग्यता से। बहुत प्रकार से किन्हीं दो वस्तुओं के बीच समानता देखी जा सकती है। यह तुलना जड़ पदार्थो में ही सम्भव है। साकार से साकार की प्रतिमा हो सकती है। निराकार से साकार प्रतिमा की रचना सम्भव नहीं है, इसलिए साकार व्यक्ति, वस्तु आदि की प्रतिमा बन सकती है। एक समान आकृति को देखकर दूसरी समान आकृति का बोध होता है, जैसे चित्र को देखकर व्यक्ति का या व्यक्ति को देख कर चित्र और व्यक्ति की समानता का ज्ञान होता है। ईश्वर के समान कोई नहीं, इसलिए वेद कहता है -

न तस्य प्रतिमा अस्ति। - यजु. ३२/३।।

आगे चलकर समानता के कारण मूर्ति के लिए भी प्रतिमा शब्द का प्रयोग होने लगा। आज प्रतिमा शब्द से मूर्ति का ही अर्थ ग्रहण किया जाता है।

संसार मूर्त है, इसलिए इसमें मूर्तियों का अभाव नहीं है। साकार पदार्थो से बहुत सारे दूसरे साकार पदार्थ बनाये जाते हैं, स्वतः भी बन सकते हैं, अतः मूर्ति कोई विवाद या विवेचना का विषय नहीं है। मूर्ति के साथ जब पूजा शब्द का उपयोग किया जाता है, तब अर्थ में सन्देह उत्पन्न होता है। पूजा शब्द सत्कार, सेवा, आदर, आज्ञा पालन, रक्षा आदि के अर्थ में प्रयुक्त होता है। पूजा शब्द का उपयोग जब-जब पदार्थो के प्रसंग में किया जाता है, तो सन्देह की स्थिति उत्पन्न होती है। यज्ञ शब्द का प्रयोग अग्निहोत्र के लिए किया जाता है, जिसका अर्थ देवपूजा भी है। वेद में जड़ पदार्थो को भी देवता कहा है। इसी क्रम में चेतन को भी देव कहा गया तथा परमेश्वर को महादेव कहा गया। इस प्रकार देव शब्द से साकार और निराकार तथा जड़ और चेतन दोनों प्रकार के पदार्थो का ग्रहण होने लगा। इनमें एक के मूर्त होने से दूसरे के मूर्त होने की सम्भावना बन जाती है। मूर्त पदार्थो में जड़ और चेतन दोनों पदार्थ देवता की श्रेणी में आते हैं- पहले अग्नि, वायु, जल आदि दूसरे माता-पिता, आचार्य, अतिथि आदि। इस प्रकार देव शब्द की समानता से पूजा की समानता जुड़ती दिखाई देती है। इस तरह साकार, निराकार, जड़, चेतन में देवत्व बन गया तो सब की पूजा में समानता मानी व की जाने लगी।

सामर्थ्य और उपयोगिता के कारण चेतन से जिस प्रकार प्रार्थना की जाती है, उसी प्रकार जड़ से उसके सामर्थ्य के सामने विवश होकर अग्नि, वायु, जल आदि से प्रार्थना की जाने लगी। चेतन को भोजन, आसन, माला, सत्कार आदि से सन्तुष्ट किया जाता है, उसी प्रकार जड़ देवता को भी सन्तुष्ट करने की परम्परा चल पड़ी। सभी देव शब्दों का मानवीकरण कर दिया, चाहे वह जड़ हो या चेतन, साकार हो या निराकार। मनुष्यों ने इन सबकी मूर्ति बना ली। उन वस्तुओं के गुण उन मूर्तियों में चिंहित कर दिये गये। ऐसा करते हुए ईश्वर का भी मानवीकरण हो गया। मानवीकरण होने में रूप और नाम के बिना उसका उपयोग नहीं हो सकता, इसलिए महापुरुषों का रूप और नाम ईश्वर की श्रेणी में आ गया। पहले दौर में शिव, विष्णु, राम, कृष्ण आदि रूप देवत्व की श्रेणी में आते दिखाई देते हैं। ईश्वर के स्थान पर समाज में इन देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ पूजी जाने लगी और इनसे ही प्रार्थना भी होने लगी। इस प्रकार इन मूर्तियों से मनुष्य के दो अभिप्राय सिद्ध हो जाते हैं- प्रथम जो उपस्थित नहीं है, वह उपस्थित हो जाता है। जिसकी मृत्यु हो चुकी है जो इस संसार से जा चुका है, उसकी स्मृति को स्थायित्व मिल जाता है तथा दूसरा अप्रत्यक्ष परमेश्वर इस मूर्ति के माध्यम से

स्थापना वर्ष-1965

भगवानदीन आर्यकन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

लखीमपुर-खीरी (उ०प्र०)

(सम्बद्ध-छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर)

महाविद्यालय में संचालित पाठ्यक्रम (कला संकाय):-

स्नातक स्तर/बी०ए०-13 विषयों में- हिन्दी भाषा, अंग्रेजी भाषा, संस्कृत, हिन्दी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, दर्शनाशास्त्र, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, संगीत गायन, सगीत वादन, चित्रकला।

- परास्नातक स्तर/एम.ए. हिन्दी एवं संस्कृत।
- विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित शोध केन्द्र-हिन्दी एवं संस्कृत।
- डिजिटल लाइब्रेरी में 26 हजार ज्ञानवर्धक पुस्तकों का विशाल संग्रह।
- महाविद्यालय के पाठ्येत्तर क्रियाकलाप-

नेशनल कैडिट कोर (एन.सी.सी.)-26 यू.पी. बटालियन की प्रभारी-कैप्टन (डा.) शशि प्रभा बाजपेयी के कुशल निर्देशन में संचालित।

रेंजर्स प्रशिक्षण व सांस्कृतिक कार्यक्रम 'मल्हार' की व्यवस्था-महाविद्यालय के कुशल निद्रेशन में संचालित।

विश्वविद्यालय परीक्षा में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाली महाविद्यालय की छात्राओं के उत्साहवर्धन हेतु जनपद के महानुभावों द्वारा प्रदत्त पदाकों से सम्मान।

(Mission & Vision)
स्त्री सशक्तीकरण
(Women Empowerment)
(Job Oriented Vision)
पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन
(Environment Conservation and Development)
मानव संसाधन का उच्चतम विकास
(Highest Evolution of Human Resource)

डॉ. निरुपमा अशोक
प्राचार्या

शिवचन्द्र सिंह
सचिव

सुशील कुमार अग्रवाल
अध्यक्ष

एन० सी० वैदिक इण्टर कॉलेज, आगरा कैण्ट

मान्यता प्राप्त अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालय

फोन- 0562-227678

इण्टरमीडिएट

विज्ञान वर्ग, कला वर्ग, वाणिज्य वर्ग, व्यवसायिक शिक्षा

हाईस्कूल

सम्पूर्ण विषय

- उत्तम शिक्षा, • उत्तम अनुशासन • उत्तम परिक्षाफल • उत्तम स्वच्छ हरा भरा वातावरण • छात्रों द्वारा प्रतिदिन यज्ञ
- क्रीड़ा स्थल एवं सभी खेलों की सुविधा • एन0सी0सी0एन0एस0एस0 व स्काउट की सुविधा
- योग, सांस्कृतिक गतिविधि एवं चिकित्सकीय परीक्षण की सुविधा

श्री प्रमोद कुमार गुप्ता
अध्यक्ष

श्री ओम प्रकाश गुप्ता
प्रबन्धक

डा0 मोहन अवस्थी
प्रधानाचार्या

www.thearyasamaj.org

प्रत्यक्ष हो जाता है। इस प्रकार निराकार ईश्वर को साकार बनाने का विचार मूर्ति-पूजा का आधार है।

जब ईश्वर को अपनी इच्छानुरूप रूप दिया जा सकता है तो बाद के लोगों ने राम-कृष्ण के स्थान पर उनके इष्ट प्रिय व्यक्तियों को ही ईश्वर के स्थान पर मन्दिर में रख दिया। इस क्रम में मत-मतान्तरों के संस्थापक मन्दिरों के पूज्य देव बन गये। कुछ महावीर, नानक आदि ईश्वर की श्रेणी में आ गये। इसके बाद के युग में मन्दिर के महन्त, महामण्डलेश्वर, गुरु आदि लोगों की भी मूर्तियाँ बनने लगीं, उनकी भी ईश्वर के स्थान पर पूजा होने लगी। कुछ लोगों ने अपने माता-पिता, प्रियजनों को ही मन्दिर के देवताओं के स्थान पर अधिष्ठित कर दिया। उनकी पूजा को ही ईश्वर की पूजा समझने लगे। आज तो शंकराचार्य के स्थान पर आसाराम, रामरहीम, रामपाल दास जैसे कुछ पीर-फकीर भी मूर्ति के रूप में या समाधि के रूप में पूजे जाने लगे और कुछ लोग स्वयं ही अपने को पुजवाने लगे। इस तरह निराकार चेतन, सर्वव्यापक ईश्वर की यात्रा साकार जड में बदल गई।

मूर्तिपूजा का समाज पर दो प्रकार से प्रभाव पड़ा। मूर्तिपूजा करने से मनुष्य कायर और भीरु बनता गया। देवता के रुष्ट होने का भय दिखाकार पुजारियों ने राजा से जनसामान्य तक को ठगा है, आज भी ठग रहे हैं। दूसरा प्रभाव समाज में मूर्तिपूजा का यह हुआ कि पुरुषार्थहीनता बढ़ी। मनुष्य के मन में इस प्रकार के विचार दृढ़ होते गये कि मनुष्य को बिना पुरुषार्थ के ही इच्छित फल की प्राप्ति हो सकती है। देवता पूजा से प्रसन्न होकर मनोवाञ्छित फल प्रदान करते हैं। इस विचार पर आर्य विचारक एवं दार्शनिक पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय ने इस प्रकार लिखा है- ''वह (मूर्तिपूजक) अन्धकार में है और उसी में रहना चाहता है। वह प्रकाश का इच्छुक नहीं है। यदि आप बातचीत करके इस सम्बन्ध में उसे बतलाना चाहें तो वह बात उसे रुचिकर न होगी और वह उससे घबरायेगा। उसे भय है कि इस प्रकार की बौद्धिक छानबीन उसे अविश्वासी न बना दे और इसीलिए वह उससे बच निकलने का प्रयत्न करता है। इसका कारण यह नहीं कि वह तर्क वितर्क की योग्यता नहीं रखता। मूर्तिपूजकों में आपको सर्वोत्तम वकील, जो चकित करने वाली तीव्र तार्किक बुद्धि रखते हैं, तर्क शास्त्र के उपाध्याय, जो सूक्ष्म हेत्वाभास को ढूँढ़ निकालने की क्षमता हैं तथा चतुर राजनीतिज्ञ, जो संसार के राजनैतिक क्षेत्र में गुह्य-से-गु ह्य कार्य करने वाली शक्तियों का सहज साक्षात् कर लेते हैं, मिलेंगे। उनमें आपको वाणिज्य कुशल व्यापारी, जिनकी दृष्टि से संसार की किसी मण्डी का कोई कोना छिपा हुआ नहीं है, अर्थशास्त्री जो शोषक-वर्ग की चालों का सफलतापूर्वक प्रतिकार कर सकते हैं, ज्योतिष-विद्याविशारद, जिनको आकाशस्थ ग्रह-उपग्रहों का अपने ग्रह से भी कहीं अधिक परिज्ञान है तथा गणिता, जिन्हें गणित के सूक्ष्म तत्त्वों पर पूर्ण अधिकार है, भी मिल जायेंगे। ये सब बुद्धि विशेषज्ञ है, परन्तु आप इन्हें मन्दिरों में अनपढ़ लोगों के साथ वैसी ही भक्ति-भावना तथा अनिश्चित बुद्धि से मूर्तिपूजा करते देखेंगे।''

ऋषि दयानन्द के जीवन में मूर्तिपूजा के प्रति अनास्था का भाव उनके बाल्यकाल से देखने में आता है। जिस समय बालक मूलशंकर की आयु मात्र तेरह वर्ष की थी, उस समय जिस घटना ने उनके जीवन में झंझावात उत्पन्न किया, वह घटना मूर्तिपूजा से ही सम्बन्ध रखती है। महर्षि दयानन्द ने इस घटना का वर्णन अपनी आत्मकथा में इस प्रकार किया है- ''जब मैं मन्दिर में इस प्रकार अकेला जाग रहा था तो घटना उपस्थित हुई। कई चूहे बाहर निकलकर महादेव के पिण्ड के ऊपर दौड़ने लगे और बीच-बीच में महादेव पर जो चावल चढ़ाये गये थे, उन्हें भक्षण करने लगे। मैं जाग्रत रहकर चूहों के इस कार्य को देखने लगा। देखते-देखते मेरे मन में आया कि ये क्या है?जिस महादेव की शान्त पवित्र मूर्ति की कथा, जिस महादेव के प्रचण्ड पाशुपतास्त्र की कथा, जिस महादेव के विशाल वृषारोहण की कथा गत दिवस व्रत के वृत्तान्त में सुनी थी, क्या वह महादेव वास्तव में यही है?इस प्रकार मैं चिन्ता से विचलित चित्त हो उठा। मैंने सोचा भी यदि यथार्थ में ये वही प्रबल, प्रतापी, दुर्दान्तदैत्यदलनकारी महादेव हैं तो अपने शरीर पर से इन थोड़े-से चूहों को क्यों विताड़ित नहीं कर सकते?इस प्रकार बहुत देर तक चिन्ता स्रोत में पड़कर मेरा मस्तिष्क घूमने लगा। मैं आप ही अपने से पूछने लगा कि जो चलते-फिरते हैं, खाते-पीते हैं, हाथ में त्रिशूल धारण करते हैं, डमरु बजाते हैं और मनुष्यों को श्राप दे सकते हैं, क्या यह वही वृषारूढ़ देवता हैं जो मेरे सामने उपस्थित हैं?इस घटना के बाद बालक मूलशंकर ने पिता को जगाकर अपनी शंकाओं का समाधान कराना चाहा, सन्तोषजनक उत्तर न मिलने पर घर आकर व्रत तोड़ दिया और भोजन करके सो गया। हम देखते हैं कि यह बालक जीवन भर मूर्तिपूजा के पाखण्ड को खण्डित करता रहा। इसकी निरर्थकता बताने में जिस योग्यता और साहस को हम देखते हैं, वह उल्लेखनीय है। महर्षि दयानन्द के सामने उदयपुर के भगवान् एकलिंग की गद्‌दी का प्रस्ताव था, शर्त केवल एक थी- मूर्तिपूजा खण्डन छोड़ना, परन्तु महर्षि दयानन्द का उत्तर था- ''मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ति करूँ अथवा ईश्वरीय आज्ञा का पालन करूँ?''

महर्षि दयानन्द ने मूर्ति पूजा के खण्डन में कभी कोई समझौता नहीं किया। इस पर पादरी के.जे. लूकस ने जो विचार दिये हैं, वे ध्यातव्य हैं। उक्त पादरी ने १८७७ में फर्रुखाबाद में मूर्ति पूजा के विषय में उनके व्याख्यान सुने थे, पादरी लूकस ने बतलाया- ''वे मूर्तिपूजा के विरूद्ध इतने बल, इतने स्पष्ट और विश्वास के साथ बोलते थे कि मुझे फर्रुखाबाद की जनता की ओर से उनका हार्दिक स्वागत किये जाने पर आश्चर्य हुआ। मुझे उनका यह कथन स्मरण है कि जब मैंने उनसे कहा कि यदि आपको तोप के मुँह पर रखकर कहा जाए कि यदि तुम मूर्ति को मस्तक न झुकाओगे तो तुम को तोप से उड़ा दिया जायेगा, तो आप क्या कहेंगे?स्वामी जी ने उत्तर दिया कि 'मैं कहूँगा कि उड़ा दो' दयानन्द इतने निर्भीक थे।''

महर्षि दयानन्द का मूर्तिपूजा खण्डन एक आग्रह मात्र नहीं था। उन्होंने मूर्तिपूजा की निरर्थकता सिद्ध करने में दार्शनिक, आर्थिक, सामाजिक- सभी पक्षों पर गहरा विचार किया है। जो लोग ईश्वर उपासना में मूर्तिपूजा को सहायक समझते हैं, उनके तर्को

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

एक ख्याति प्राप्त विश्वसनीय फर्म

राम रहीम बिल्डर्स

आलमबाग, लखनऊ

नोट- समस्त प्रकार के भवनों व अपार्टमेन्ट को ठेके आदि पर तथा लेबर रेट पर कार्य किया जाता है।

विजय शुक्ला प्रोपराइटर
मो. 9918039000

रजि. नं. 422/58-59

ओ३म्

संस्थापना-1956

विद्या दान सर्वोत्तम दान है

गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय, सिराथू

जनपद कौशाम्बी (इलाहाबाद) उत्तर प्रदेश

स्वामिनी संस्था-आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., लखनऊ

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विद्यालय वाराणसी एवं उ.प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद, लखनऊ से सम्बद्ध

राज्य सरकार द्वारा प्रथम श्रेणी (क-वर्ग) में मान्यता प्राप्त

छात्रों के रहने हेतु-छात्रावास उपलब्ध है

अजय श्रीवास्तव
प्रशासक
मो. 9793006777

आचार्य अशर्फी लाल शास्त्री
प्राचार्य
मो. 9415635554

www.thearyasamaj.org

का प्रबल तर्कों से खण्डन किया है।

''प्रश्न-साकार में मन स्थिर होना और निराकार में स्थिर होना कठिन है, इसलिए मूर्तिपूजा करनी चाहिए।

उत्तर-साकार में मन स्थिर कभी नहीं हो सकता, क्योंकि उसको मन झट ग्रहण करके उसी के एक-एक अवयव में घूमता और दूसरे में दौड़ जाता है और निराकार परमात्मा के ग्रहण में मन अत्यन्त दौड़ता है तो भी अन्त नहीं पाता। निरवयव होने से चंचल भी नहीं रहता, किन्तु उसी के गुण-कर्म-स्वभाव का विचार करता-करता आनन्द में मग्न होकर स्थिर हो जाता है और जो साकार में स्थिर होता तो सब जगत् का मन स्थिर हो जाता, क्योंकि जगत् में मनुष्य स्त्री, पुत्र, धन, मित्र आदि साकार में फँसा रहता है, परन्तु किसी का मन स्थिर नहीं होता, जब तक निराकार में न लगावें, क्योंकि निरवयव होने से उसमें मन स्थिर हो जाता है। इसलिए मूर्तिपूजा करना अधर्म है।

महर्षि दयानन्द मूर्तिपूजा को आर्थिक हानि का कारण मानते हैं। इससे सामाजिक भ्रष्टाचार को भी बढ़ावा मिलता है। (सत्यार्थप्रकाश ११वाँ समुल्लास मूर्तिपूजा से १५ हानियाँ) मूर्तिपूजा के लिये दिये जाने वाले तर्कों की समीक्षा भी उन्होंने की है। जो लोग मूर्तिपूजा को स्थूल लक्ष्य और ईश्वर तक पहुँचने की सीढ़ी बताते हैं, उनके लिए महर्षि दयानन्द कहते हैं- मूर्तिपूजा सीढ़ी नहीं, खाई है। मूर्तिपूजा गुड़ियों के खेल के समान ब्रह्म तक जाने का साधन मानने वालों को महर्षि दयानन्द अज्ञानी मानते हैं, अतः शास्त्रों का अध्ययन, विद्वानों की सेवा, सत्संग, सत्यभाषाणादि व्यवहार से ही ब्रह्म की प्राप्ति सम्भव है। परमेश्वर को मूर्ति में व्यापक होने से मूर्तिपूजा से परमेश्वर की पूजा हो जाती है- ऐसा मानने वालों के लिए महर्षि दयानन्द का उत्तर है- ''जब परमेश्वर सर्वत्र व्यापक है तो किसी एक वस्तु में परमेश्वर की भावना करना, अन्यत्र न करना- यह ऐसी बात है कि जैसे चक्रवर्ती राजा को सब राज्य की सत्ता से छुड़ा के एक छोटी-सी झोंपड़ी का स्वामी मानना।''

(सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास ११वाँ) जो लोग मूर्ति में परमेश्वर की भावना करने की बात करते हैं, उनके लिए महर्षि दयानन्द का उत्तर है- ''भाव सत्य है या झूठ ?जो कहो सत्य है तो तुम्हारे भाव के अधीन होकर परमेश्वर बद्ध हो जायेगा और तुम मृत्तिका में सुवर्ण-रजतादि, पाषाण में हीरा-पन्ना आदि, समुद्रफेन में मोती, जल में घृत, दुग्ध, दही आदि और धूलि में मैदा-शक्कर आदि की भावना करके उनको वैसा क्यों नहीं बनाते हो?

(सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास ११वाँ, पृ. ३६८)

मंत्रों के आवाहन-विसर्जन से देवता के आ जाने और चले जाने की बात पर वे कहते हैं- ''जो मन्त्र पढ़कर आवाहन करने से देवता आ जाता है तो मूर्ति चेतन क्यों नहीं हो जाती ?और विसर्जन करने से चला जाता है तो वह कहाँ से आता और कहाँ जाता है?सुनो अन्धो ! पूर्ण परमात्मा न आता और न जाता है। जो तुम मन्त्र बल से परमेश्वर को बुला लेते हो तो उन्हीं मन्त्रों से अपने मरे हुए पुत्र के शरीर में जीव को क्यों नहीं बुला लेते?और शत्रु के शरीर में जीवात्मा का विसर्जन करके क्यों नहीं मार सकते?सुनो भाई भोले लोगो ! ये पोप जी तुम को ठग कर अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं। वेदों में पाषाणादि मूर्तिपूजा और परमेश्वर का आवाहन, विसर्जन करने का एक अक्षर भी नहीं।'' (सत्यार्थप्रकाश ११वाँ समुल्लास, पृ. ३६६)

जहाँ तर्क युक्तियों से महर्षि दयानन्द ने मूर्ति पूजा का खण्डन किया, वहाँ मूर्तिपूजा वेद विरूद्ध है, इसके लिए भी वेदादिशास्त्रों से प्रमाणों को प्रस्तुत किया। स्तुति प्रार्थना उपासना, ब्रह्म विद्या आदि प्रकरणों में वेद मन्त्रों की व्याख्या करते हुए मूर्तिपूजा की व्यर्थता को सिद्ध किया है- ''जो असम्भूति अर्थात् अनुत्पन्न अनादि प्रकृति कारण की ब्रह्म के स्थान पर उपासना करते हैं, वे अन्धकार अर्थात् अज्ञान और दुःख सागर में डूबने हैं और सम्भूति जो कारण से उत्पन्न हुए कार्य रूप पृथ्वी आदि भूत, पाषाण और वृक्षादि अवयव और मनुष्यादि के शरीर भूत, पाषाण और वृक्षादि अवयव और मनुष्यादि के शरीर की उपासना ब्रह्म के स्थान में करते हैं, वे इस अन्धकार से भी अधिक अन्धकार अर्थात् महामूर्ख, चिरकाल घोर दुःख रूप नरक में गिर के महाक्लेश भोगते हैं।

जो सब जगत् में व्यापक है, उस निराकार परमात्मा की प्रतिमा, परिमाण, सादृश्य वा मूर्ति नहीं है।

जो वाणी की इदन्ता अर्थात् यह जल है लीजिए, वैसा विषय नहीं और जिसके धारण और सत्ता से वाणी की प्रवृत्ति होती है उसी को ब्रह्म जान और उपासना कर और जो उससे भिन्न है, वह उपासनीय नहीं। जो मन से 'इयत्ता' करके मनन में नहीं आता, जो मन को जानता है उसी को तू ब्रह्म जान और उसी की उपासना कर। जो उससे भिन्न जीव और अन्तःकरण है, उसकी उपासना ब्रह्म के स्थान में मत कर। जो आँख से नहीं दीख पड़ता और जिससे सब आँखें देखती हैं, उसी को तू ब्रह्म जान और उसी की उपासना कर और जो उससे भिन्न सूर्य, विद्युत् और अग्नि आदि जड़ पदार्थ हैं, उनकी उपासना मत कर। जो श्रोत्र से नहीं सुना जाता और जिससे श्रोत्र सुनता है, उसी को तू ब्रह्म जान और उसी की उपासना कर और उससे भिन्न शब्दादि की उपासना उसके स्थान में मत कर। जो प्राणों से चलायमान नहीं होता, जिससे प्राण गमन को प्राप्त होता है, उसी ब्रह्म को तू जान और उसी की उपासना कर। जो यह उससे भिन्न वायु है, उसकी उपासना मत कर।'' (सत्यार्थप्रकाश ११ वाँ समुल्लास, पृ. ३७१)

महर्षि दयानन्द ने वेद में निराकार सर्वव्यापक ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन करने वाले अनेक मंत्रों का उल्लेख अपने वेदभाष्य और अन्य ग्रन्थों में किया है, सपर्यगात्०, हसस्रशीर्षा०, विश्वतः चक्षु०, आदि मन्त्र तथा उपनिषद् वाक्यों के प्रमाण दिये हैं।

जहाँ महर्षि दयानन्द ने मूर्तिपूजा का खण्डन किया है, वहीं इस खण्डन से मूर्तिपूजा के अभाव में होने वाली रिक्तता को भी

www.thearyasamaj.org

पूर्ण किया है। पंजमहायज्ञविधि, संस्कारविधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में निराकार ब्रह्म की उपासना कैसे की जाती है- इसका भी उल्लेख किया है। मूर्तिपूजा का खण्डन करते हुए देवपूजा का प्रकार बताते हुए वास्तविक देव और उनकी पूजा के प्रकार का भी उल्लेख किया है, यथा ''प्रश्न-किसी प्रकार की मूर्तिपूजा करनी नहीं और जो अपने आर्यवर्त्त में पञ्जदेवपूजा शब्द प्राचीन परम्परा से चला आता है, उसकी यही पञ्चायतन पूजा जो कि शिव, विष्णु, अम्बिका, गणेश और सूर्य की मूर्ति बनाकर पूजते हैं, यह पञ्चायतन पूजा है या नहीं?

उत्तर - किसी प्रकार की मूर्तिपूजा न करना, किन्तु मूर्तिमान् जो नीचे कहेंगे, उनकी पूजा अर्थात् सत्कार करना चाहिए। वह पञ्चदेवपूजा, पज्चयतन पूजा शब्द बहुत अच्छा अर्थ वाला है, परन्तु विद्याविहीन मूढ़ों ने उसके उत्तम अर्थ को छोड़कर निकृष्ट अर्थ को पकड़ लिया। जो आजकल शिव आदि पाँचों की मूर्तियों बनाकर पूजते हैं, उनका खण्डन तो अभी कर चुके हैं, पर जो सच्ची पञ्चायतन वेदोक्त और वेदानुकूल देवपूजा और मूर्ति पूजा है, सुनो- प्रथम माता- मूर्तिमती पूजनीय देवता, अर्थात् सन्तानों को तन, मन, धन से सेवा करके माता को खुश रखना, हिंसा अर्थात् ताड़ना कभी न करना। दूसरा पिता - सत्कर्त्तव्य देव, उसकी भी माता के समान सेवा करनी।

तीसरा- आचार्य जो विद्या का देने वाला है, उसकी तन, मन, धन से सेवा करनी। चौथा अतिथि- जो विद्वान धार्मिक, निष्कपटी, सबकी उन्नति चाहने वाला जगत् में भ्रमण करता हुआ सत्य उपदेश से सबको सुखी करता है, उसकी सेवा करें। पाँचवाँ स्त्री के लिए पति और पुरुष के लिए स्व-पत्नी पूजनीय है।

ये पाँच मूर्तिमान् देव जिनके संग से, मनुष्य देह की उत्पत्ति पालन, सत्यशिक्षा, विद्या और सत्योपदेश की प्राप्ति होती है। ये ही परमेश्वर को प्राप्त करने की सीढ़ियाँ हैं। इनकी सेवा न करके जो पाषणादि मूर्ति पूजते हैं, वे अतीव वेदविरोधी हैं। (पृ. ३७५-३७६)

ऋषि दयानन्द के जीवन में जो क्रान्ति मूर्ति की पूजा करने से उत्पन्न हुई थी, वह उनके पूरे जीवन में बनी रही। महर्षि दयानन्द ने अपने भाषण, लेखन, वार्तालाप द्वारा मूर्तिपूजा की निस्सारता को प्रतिपादित किया है। ऐसी पद्धति जो जीवन में लाभ के स्थान पर हानि करती है, जिससे व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक लाभ की कोई संभावना नहीं, जिसके करने से मनुष्य का पतन अवश्यम्भावी है, वह कार्य इस समय में इतने बड़े रूप में कैसे चला?इसके चलने के पीछे क्या कारण है, इनका भी उन्होंने युक्ति प्रमाण पुरस्सर प्रदर्शन किया है। इस प्रकार संक्षेप में कह सकते हैं कि महर्षि दयानन्द ने मूर्तिपूजा के दार्शनिक, सामाजिक, आर्थिक सभी पक्षों का गहराई से अध्ययन किया और साहसपूर्वक समाज के सामने रखा। समाज में जिनको मूर्तिपूजा से प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ मिलता है, वे कभी भी इसका खण्डन देखना नहीं चाहेंगे, परन्तु महर्षि दयानन्द ने अपने प्राणों की परवाह किये बिना इसका प्रबल खण्डन किया और एक निराकार सर्वव्यापक ईश्वर जिसका स्वरूप आर्यसमाज के दूसरे नियम में बताया गया है, उसी की पूजा करने का विधान किया।

स्वामी दयानन्द ने जब भली प्रकार समझ लिया कि मूर्ति पूजा असत्य के साथ पाखण्ड भी है, जिसके द्वारा जनता को भ्रमित करके उनका धन लूटा जा रहा है, उन्हें अकर्मण्य बना कर भीरू परमुखापेक्षी बनाने में समाज का श्रेष्ठ कहा जाने वाला वर्ग लगा है, इससे समाज को जो दिशा और मार्गदर्शन मिलना चाहिए, वह तो नहीं मिला उसके स्थान पर समाज के रक्षक ही समाज को लूटने वाले बन गये। इसके लिए महर्षि दयानन्द ने जो मार्ग अपनाया, उनमें प्रथम यह था कि समाज में जिन वेदों की प्रतिष्ठा थी, उन वेदों में तथा वेदानुकूल वैदिक साहित्य में मूर्ति पूजा का विधान नहीं है, यह घोषणा की। इसके साथ दूसरा-युक्ति और तर्क से भी मूर्ति पूजा को निरर्थक और पाखण्ड पूर्ण कृत्य है, यह सिद्ध किया।

महर्षि दयानन्द ने प्रचार क्षेत्र में उतरने के साथ ही मूर्तिपूजा पर प्रहार करना प्रारम्भ कर दिया। पण्डित लोग शास्त्रार्थ में पराजित हो जाते थे, बुद्धिमान् श्रोता स्वामी जी की युक्ति व प्रमाणों से सहमत होकर मूर्तिपूजा छोड़ने के लिए तैयार हो जाते थे, परन्तु पण्डे, पुजारी, मन्दिर, मठ के संचालकों की आजीविका पर यह सीधी चोट थी, इसलिए पण्डित लोग भागकर काशी पहुँचते थे और काशी के पण्डितों से मूर्ति पूजा के पक्ष में व्यवस्था लिखवा लाते थे। इसी कारण मूर्तिपूजा के गढ़ काशी को ही जीतने के लिए स्वामी दयानन्द ने काशी के पण्डितों को चुनौती दे डाली और यह चुनौती भी काशी नरेश के माध्यम से दी।

काशी शास्त्रार्थ का निश्चय काशी नरेश की आज्ञा अनुसार हुआ। वे शास्त्रार्थ में मध्यस्थ बने। मूर्तिपूजा के पक्ष-विपक्ष में जो कुछ इस शास्त्रार्थ में मिलता है, वह विषय से सम्बद्ध तो न्यून ही है, शास्त्रार्थ की दिशा भटकाने वाला अधिक है। इसकी चर्चा काशी शास्त्रार्थ की छपी पुस्तक की भूमिका देखने से स्पष्ट हो जाता है -

१. पाषाणादि मूर्ति पूजनादि में वैदिक प्रमाण होता तो क्यों न कहते ?

२. स्व पक्ष को वैदिक प्रमाणों से सिद्ध किये बिना मनुस्मृति आदि को वेदानुकूल हैं या नहीं, इस प्रकरणान्तर में क्यों जा गिरते ?

३. पुराण आदि शब्द ब्रह्म वैवर्त आदि ग्रन्थों से भी अपना पक्ष सिद्ध नहीं कर सके।

४. प्रतिमा शब्द से मूर्तिपूजा को सिद्ध करना चाहा, वह भी उनसे नहीं हो सका।

५. पुराण शब्द स्वामी जी विशेषण वाची मानते हैं, काशीस्थ पण्डित विशेष्य वाची, परन्तु पण्डित लोग अपना पक्ष सिद्ध नहीं कर सके।

(स्वामी दयानन्द, काशी शास्त्रार्थ, दयानन्द, ग्रन्थमाला, भाग-३, पृ.-४५१-४५२)

स्वामी दयानन्द के मूर्ति पूजा विषयक विचारों को जानने के क्रम में काशी शास्त्रार्थ के पश्चात् स्वामी दयानन्द का एक और संस्कृत भाषा शास्त्रार्थ जो प्रतिमा पूजन विचार नाम से प्रथम बार सम्वत् १६३० में आर्य भाषा व बंगला भाषा में अनूदित होकर लाइट प्रेस बनारस से छपा था। यह कोलकाता के पास हुगली नामक स्थान में हुआ था। शास्त्रार्थ सम्वत् १६३० चैत्र शुक्ल एकादशी, मंगलवार तदनुसार ८ अप्रैल, १८७३ के दिन हुआ था।

इस शास्त्रार्थ में प्रतिमा शब्द पर, पुराण शब्द पर तथा देवालय, देवपूजा शब्द पर विचार किया गया है। स्वामी दयानन्द कहते हैं- प्रतिमा प्रतिमानम्- जिससे प्रमाण अर्थात् परिमाण किया जाय, उसको कहते हैं जैसे पाव, आधा सेर आदि। इसके अतिरिक्त यज्ञ के चमसा आदि को भी प्रतिमा कहते हैं। इसके लिए स्वामी दयानन्द ने मनु का प्रमाण उद्धृत किया है -

तुलामानं प्रतिमानं सर्व च स्यातू सुलक्षितम्।
षट्सु षट्सु च मासेषु पुनरेव परीक्षयेत्।। - मनु ८/४०३

स्वामी दयानन्द पुराणों को अमान्य करते हैं। पुराणों में मूर्ति पूजा का विस्तार से वर्णन है, जिन्हें आजकल की भाषा में शिव, ब्रह्म वैवर्त, भागवत आदि कहते हैं, परन्तु स्वामी दयानन्द पुराण को शब्दार्थ के रूप में पुराना अथवा पुस्तक के रूप में शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थों के नाम पुराण स्वीकार करते हैं।

1. पुराभवं पुराभवः च इति पुराणं पुराणी पुराणः।

2. वहाँ ब्राह्मण पुस्तक जो शतपथादिक हैं, उनका ही नाम पुराण है तथा शंकराचार्य जी ने भी शारीरक भाष्य में और उपनिषद् भाष्य ब्राह्मण और ब्रहा विद्या का ही पुराण शब्द से अर्थ ग्रहण किया हैं।

3. तीसरा देवालय और चौथा देव पूजा शब्द है। देवालय, देवायतन, देवागार तथा देव मन्दिर इत्यादिक सब नाम यज्ञशालाओं के ही हैं।

4. इससे परमेश्वर और वेदों के मन्त्र उनको ही देव और देवता मानना उचित है। अन्य कोई नहीं। (– स्वामी दयानन्द, प्रतिमा पूजन विचार, पृ. 483– 485, दयानन्द ग्रन्थमाला)

ऋषि दयानन्द के जीवन में मूर्तिपूजा की अवैदिकता और अनौचित्य पर वाद–संवाद, शास्त्रार्थ, भाषण, चर्चा, परिचर्चा तो बहुत मिलती है, परन्तु एक आश्रर्यजनक प्रसंग भी मिलता है। स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों और मान्यताओं को लेकर कोलकाता की आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा का एक अधिवेशन 22 जनवरी रविवार सन् 1881 को कोलकाता विश्रविद्यालय के सीनेट हॉल में भारत के 300 विद्वानों की उपस्थिति में हुआ, जिसमें स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों को सर्वसम्मति से अस्वीकार किया गया। इसमें आश्चर्य और महत्त्व की बात यह है कि इस सभा मे पूर्व पक्षी के रूप में स्वयं स्वामी दयानन्द या उनका कोई प्रतिनिधि उपस्थित नही था, न ही निमन्त्रित किया गया था। और न ही किये जाने वाले प्रश्नों के उनसे उत्तर माँगे गये थे। यह कार्य नितान्त एकपक्षी और सभा की ओर से ऋषि दयानन्द की मान्यता को अस्वीकार करते हुए पाँच उत्तर स्वीकृत हुए थे।

आर्य समाज के आरम्भिक काल के एक और सुयोग्य लेखक बाबा छज्जूसिंह जी द्वारा लिखित व सन् 1903 ई. में प्रकाशित life and Teachings of Swami Dayananda पुस्तक की भी एतद्विषयक कुछ पंक्तियाँ यहाँ देना उपयोगी रहेगा। विद्वान लेखक ने लिखा है–

"While Swami Dayanands was at Agra' a Sabha called the Arya Sanmarg Sandarshini Sabha, was established at calcutta, with the object of having it decided and settled, once for all, by the most distinguished representatives of orthodoxy in the land (that could be got hold of for the purpose of coures) that Dayanand's views on Shraddha, Tiraths, Idol- Worship, etc. were entirely unorhodox and unjustifiable, sanskrit scholars rising to the number of three hundred responded to the call of the Sabha and a grand meeting composed of the local men and of the outsiders, came off in the Senate hall on 22nd January, 1881. it is significant that not one of the numerous distinguished pandits present thought of suggesting or moving that the man upon whom the sabha was going to sit in judgement should be condemned or acquitted after he had been fully heard. it may be urged that the Sabha was not in humour to acquit Dayanand under and circumstances, but still he should have been permitted to have his say before he was condemned. Surely, one man could be dealt with very well by and assemblage so illustrious and so erudite. but the Pandits and their admirers were wise in their generation. Dayanand, though ine, had proves too many for still a more learned and august gathering at Benares."1 (1. Life and Teachings of Swami Dayananda, page . 39 part-II)

आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा कलकत्ता और स्वामी दयानन्द सरस्वती का सिद्धान्त– सबको ज्ञात हो कि 22 जनवरी सन् 1881 ई. को रविवार के दिन सायंकाल सीनेट हॉल कलकत्ता में वहाँ के श्रीमन्त बड़े–बड़े लोगों और प्रसिद्ध पण्डितों ने एकत्र होकर यह सभा दयानन्द सरस्वती जी की कार्यवाहियों पर विचार करने के उदेश्य से आयोजित की थी। इस सभा का

www.thearyasamaj.org

विस्तृत वृत्तान्त हम 'सार सुधा निधि' पत्रिका से नीचे अंकित करते हैं। इस सभा के व्यवस्थापक पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न कॉलेज के प्रिंसिपल थे। इस सभा में पण्डित तारानाथ तर्क वाचस्पति, जीवानन्द विद्यासागर बी.ए. और नवदीप के पण्डित भुवनचन्द्र विद्यारत्न आदि बंगाल के लगभग तीन सौ पण्डित और कानपुर के पण्डित बाँके बिहारी वाजपेयी और यमुना नारायण तिवारी और वृन्दावन के सुदर्शनाचार्य जी और तंजौर (मद्रास प्रेसीडैन्सी) के पण्डित राम सुब्रह्मण्यम शास्त्री जिनको सूबा शास्त्री भी कहते हैं, पधारे थे। इनके अंतिरिक्त श्रीमन्त लोगों मे वहाँ के सुप्रसिद्ध भूपति ऑनरेबल राजा यतीन्द्र मोहन ठाकुर सी.एस. आई महाराज कमल कृष्ण बहादुर, राजा सुरेन्द्र मोहन ठाकुर सी.एस आई राजा राजेन्द्रलाल मलिक, बाबू जयकिशन मुखोपाध्याय, कुमार देवेन्द्र मलिक, बाबू रामचन्द्र मलिक ऑनरेबल बाबू कृष्णदास पाल, लाला नारायणदास मथुरा निवासी, राय बद्रीदास लखीम बहादुर सेठ जुगलकिशोर जी, सेठ नाहरमल, सेठ हंसराज इत्यादि कलकत्ता निवासी सेठ उपस्थित थे। यद्यपि पण्डित ईश्वरचन्द विद्यासागर व बाबू राजेन्द्रलाल मित्र एल.एल डी. ये दोनों महानुभाव पधार नहीं सके थे, तथापि इन महानुभावों ने सभा की कार्यवाही को जी–जान से स्वीकार किया। जिस समय ये सब सज्जन सीनेट हॉल में एकत्र हुए, तब पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न जी ने इस सभा के आयोजन करने का विशेष प्रयोजन बता करके निम्नलिखित प्रश्न प्रस्तुत किये–

प्रश्न 1– पं. महेशचन्द्र न्यायरत्न जी ने पहला प्रश्न यह किया कि वेद का संहिता भाग जैसा प्रामाणिक है ब्राह्मण भाग भी वैसा ही प्रामाणिक है अथवा नही ?और मनुस्मृति धर्मशास्त्र के समान अन्य स्मृतियाँ मानने योग्य हैं अथवा नहीं। पृ. 639

उत्तर– इस प्रकार बहुत –सी युक्तियों से यह बात सिद्ध होती है कि संहिता के समान ब्राह्मण भाग तथा मनुस्मृति के समान विष्णु याज्ञवल्क्य आदि समस्त स्मृतियाँ मानने योग्य है। तथा यही सब पण्डितों का सर्वसम्मत मत है। पृ. 641

प्रश्न 2. पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न ने दूसरा प्रश्न यह किया कि शिव, विष्णु, दुर्गा आदि देवताओं की मूर्तियों की पूजा और मरणोपरान्त पितरों का श्राद्ध आदि और गंगा कुरूक्षेत्र आदि तीर्थो व क्षेत्रों में स्नान तथा वास, शास्त्र के अनुसार उचित है अथवा ?पृ. 641

उत्तर–.......... अतः देवताओं की मूर्ति और उनकी पूजा करना सब श्रुतियों और स्मृतियों के अनुसार उचित है। पृ. 645

........अतः यह बात सुस्पषृ होकर निर्णीत हो गई कि मृतकों का श्राद्ध श्रुति व स्मृति दोनों के अनुसार विहित है। पृ. 646

अतः गंगा आदि का स्नान और कुरूक्षेत्र आदि का वास श्रुति और स्मृति दोनों से सिद्ध है।पृ. 646

प्रश्न 3. पं. महेशचन्द्र न्यायरत्न ने तीसरा प्रश्न यह किया कि अग्निमीळे इत्यादि मन्त्र अग्नि शब्द से परमात्मा अभिप्रेत है अथवा आग?पृ. 647

उत्तर– अतः इस मन्त्र में अग्नि शब्द अर्थ जलाने वाली आग ही है।पृ. 647

प्रश्न 4– पं. महेशचन्द्र न्यायरत्न जी ने चौथा प्रश्न यह किया कि अग्निहोत्र इत्यादि यज्ञ करने का प्रयोजन (उदेश्य) जल वायु की शुद्धि है अथवा स्वर्ग की प्राप्ति?पृ. 647

उत्तर – यजुर्वेद के मन्त्रों से अग्निहोत्र आदि यज्ञ स्वर्ग साधक हैं।पृ. 647

प्रश्न 5– पं. महेशचन्द्र जी ने पाँचवाँ प्रश्न यह किया कि वेद ब्राह्मण भाग का निरादर करने से पाप होता है अथवा नही?पृ. 647

उत्तर– इसका उत्तर देते हुए पं. सुब्रह्मण्यम शास्त्री ने कहा कि यह तो प्रश्न के उत्तर मे कह चुके हैं कि ब्राह्मण भाग भी वेद ही है, फिर ब्राह्मण-भाग का अपमान करने से मानो वेद का ही अपमान हुआ।......647

उसके पश्चात् पण्डितों की सम्मति लेनी आरम्भ हुई। निम्नलिखित पण्डितों ने सर्वसम्मति से हस्ताक्षर कर दिये। पृ. 648

इन प्रश्नों में दूसरा प्रश्न मूर्तिपूजा से सम्बन्धित है। इसमें सुब्रह्मण्यम शास्त्री ने मूर्ति पूजा के समर्थन में ऋग्वेद के मन्त्र का उल्लेख करके बताया–शिवलिंग की मूर्ति की पूजा स्थापना आदि से पूजन का फल होता है, मन्त्र है– तव श्रिये मरूतो मर्जयन्त रूद्र जनिम चारू चित्रम्।। ऋग्वेद 5/3/3

उसके अतिरिक्त रामतापनी, बृहज्जाबाल उपनिषद् में शिवलिंग की पूजा करना लिखा है। मनुस्मृति में लिखा है– नित्यं स्नात्वाः कुर्याद्दवर्षिपितृतर्पणम्। देवताभ्यर्चनं चैव, समिदाधानमेव च।। मनु. 2/176

इसके अतिरिक्त देवल स्मृति, ऋग्वेद गृह्य परिशिष्टबौधायन सूत्र आदि के प्रमाण दिये हैं।

इन प्रमाणों के उत्तर में लेखक ने स्वामी दयानन्द का जो पक्ष रखा है, उसका मुख्य आधार है– वेद स्वतः प्रमाण है और शेष ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं, अतः उनकी प्रामाणिकता स्वतः सिद्ध नहीं है। फिर भी जिन प्रमाणों को दिया गया है, वह

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती बलिदान के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज तिलकद्वार
मथुरा

महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण तिथि पर श्रद्धांजलि सहित आर्य मित्र के ऋषियंक प्रकाशन पर हार्दिक बधाई।

कुं. राम प्रताप सिंह आर्य — प्रधान
ब्रजेश कुमार गुप्ता — कोषाध्यक्ष
श्याम बिहारी शास्त्री — मंत्री

एवं समस्त कार्यकारिणी–आर्य समाज तिलक द्वार मथुरा

ओ३म्

आर्य कन्या इण्टर कालेज, नजीबाबाद

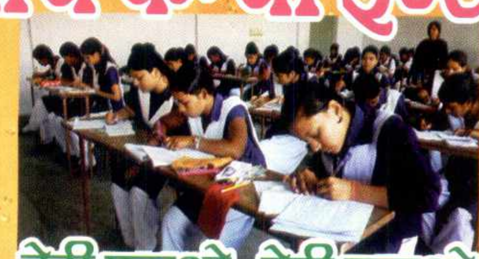

बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ।
वृक्ष धरा का भूषण है।।

संचालित–आर्य समाज
नजीबा बाद, बिजनौर

फोन : 01341-220052

नि:शुल्क शिक्षा
ड्रेस फ्री – कापी फ्री

पवन कुमार
प्रबन्धक मो. 9412489950

रीना कश्यप
(पी.टी.ए.अध्यक्ष)

नीता चौधरी
प्रधानाचार्या

प्रसंग मूर्ति पूजा पर घटित नहीं होता। स्वामी दयानन्द ने सामवेद के ब्राह्मण के पाँचवे अनुवाक के दसवें खण्ड में स्पष्ट लिखा है।– सपरन्दि0 आदि यहाँ देवताओं की मूर्ति का प्रसंग ब्रह्म लोक का है।पृ. 643

मूर्तिपूजा के पक्ष मे प्रमाण देते हुए मनु को उद्धृत किया है और कहा गया है– दो ग्रामों के मध्य मन्दिरों का निर्माण करना चाहिए तथा उसमें प्रतिमा स्थापित की जानी चाहिए–

सीमासन्धिषु कार्याणि देवतायतनानि च। –8/248

संक्रमध्वजयष्टीनां प्रतीमानां च भेदकः। प्रतिकुर्याच्च तत् सर्व पंच दद्याच्छतानि च।। –9/285

मूर्तिपूजा के समर्थन में दिये गये तर्को पर लेखक ने स्वामी दयानन्द का पक्ष निम्न प्रकार से उपस्थित किया है–

स्वामी दयानन्द जिन शास्त्रों का प्रमाण मूर्तिपूजा के खण्डन में देते है, मूर्तिपूजा का समर्थन करने वालों को उन्ही शास्त्रों से मूर्तिपूजा के समर्थन के प्रमाण देने चाहिए जो नहीं दिये गये।

ऋग्वेद के जिस मन्त्र का अर्थ शिवलिंग की स्थापना किया है, वह मर्जयन्त शब्द मृज धातु से बना है जिसका अर्थ शुद्ध करना पवित्र करना, सजाना, शब्द करना है, अतः इसका अर्थ पूजा करना कभी नहीं है, अपितु परमेश्वर की स्तुति करना है।

जो गाँव की सीमा में देवताओं के मन्दिर बनाने का विधान है, इसी प्रसंग में सीमा पर तालाब, कूप, बावड़ी आदि के वाचक शब्दों का प्रयोग किया गया है, अतः मन्दिर की बात नहीं हैं उत्तर काल में इन स्थानों पर मन्दिर बनने लगे, वह शास्त्र विरूद्ध परम्परा है।

अन्त में मूर्ति पूजा वेद विरूद्ध है, इसको बताने के लिए वेद मन्त्रों के प्रमाण दिये गये हैं।

मूर्तिपूजा के निषेध मे प्रमाण– अतः उपर्युक्त युक्तियों से यह तो भली निश्चित हो गया कि मूर्ति–पूजा उचित नहीं और अब उसके खण्डन में वेदों तथा उपनिषदों के कुछ प्रमाण देकर इस विषय को समाप्त करते है।

"न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महाद्यशः।"

" अर्थ –उस पर परमात्मा की कोई प्रतिमा नहीं उसका नाम अत्यन्त तेजस्वी है।

स पर्य्यागाच्छुक्रमकायमव्रणमन्सविरं शुद्धमपापविद्धम्।

अर्थ– वह परमात्मा सर्वव्यपक, सर्वद्रष्टा, सर्वशक्तिमान, शरीररहित, पूर्ण नस–नाड़ी के बन्धन से रहित शुद्ध है तथा पापों से पृथक् है।

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसंभूतिमुपासते। ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यां रताः।।

अर्थ – जो लोग प्रकृति आदि जड़–पदार्थो की पूजा करते हैं, वे नरक में जाते हैं तथा जो उत्पत्र की हुई वस्तुओं की पूजा करते हैं वे इससे भी अधिक अन्धकारमय नरक में जाते हैं।

तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम।

जो बुद्धिमान् उसे आत्मा में स्थित देखते हैं, उन्ही को शाश्रत सुख होता है, औरों को नही।

ततो तदुत्तरतरं तदरूपमनामयम्। य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्त्यथेतरे दुःखमेवापि यान्ति।।

जो सृष्टि व सृष्टि के उपादान कारण से उत्कृष्ट है, वह निराकार व दोषरहित है। जो उसको जानते है, उनको अमर जीवन प्राप्त होता है और दूसरे लोग केवल दुःख में फँसे रहते हैं।

तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति, नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।

अर्थ – उसी के ज्ञान से मृत्यु के पंजे से छुटकारा होता है और कोई मार्ग ध्येय धाम का नहीं है।

किसी देवता की उपासना भी उचित नहीं है। शतपथ ब्राह्मण में जहाँ देवताओं की व्याख्या की है (और उन्ही तैंतीस के आज तैंतीस करोड़ बन गये हैं और उस सूची के पूरा होने के पश्चात जो उसमे और गुगा पीर जैसे समय–समय पर सम्मिलित होते रहे हैं, वे इनसे अतिरिक्त हैं) वहाँ भी परमात्मा के अतिरिक्त किसी अन्य की पूजा विहित नहीं रखी, प्रत्युत उसका खण्डन किया है।

आत्मेत्येवोपासीत। स योऽन्यमात्मनः प्रियं ब्रुवाणं ब्रयात्प्रियं रोत्स्यतीश्वरो ह तथैव स्यात्। योऽन्यां देवतामुपास्ते न स वेद। तथा पशुरेव स देवानाम्।

परमेश्वर जो सबका आत्मा है, उसकी उपासना करनी चाहिए।जो परमेश्वर के अतिरक्ति किसी अन्य को प्यारा अर्थात् समझता है, उसे जो कहे कि तू प्रिय के विरह में दुःख में पड़ेगा, वह सत्य पर है। जो और देवता की उपासना करता है, वह वास्तविकता को नहीं जानता। वह निश्चत रूप से बुद्धिमानों में पशु सदृश है। (दयानन्द ग्रन्थमाला, पृ. 665

–आचार्य डा. धर्मवीर जी की पावन स्मृति में–

www.thearyasamaj.org

स्थापित - 1951 !! ओ३म् !! मान्यता-1963

आर्य कन्या इण्टर कॉलेज

मवाना-मेरठ

कक्षा-6 से 12 तक

संचालित - आर्य समाज-मवाना-मेरठ

बेटी बचाओं - बेटी पढ़ाओं

प्रबन्धक	अध्यक्ष	प्रधानाचार्या
अनुराग दुबलिस	**पवन कुमार रस्तोगी**	**डा० दीना त्यागी**
मो. 9412206210		

महार्षि दयानन्द अमर रहें! आर्य सामाज जिन्दाबाद!!

महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान दिवस पर

कोटि-कोटि नमन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मुख पत्र-आर्य मित्र साप्ताहिक के 120 वर्ष पूर्ण होने पर

महर्षि दयानन्द बालिका विद्यालय इण्टरमीडिएट कॉलेज, मीरजापुर

की प्रबन्ध समिति के पदाधिकारी, विद्यालय के समस्त कर्मचारी तथा छात्राओं का हार्दिक अभिनन्दन

सिद्धार्थ कपूर
प्रबन्धक

स्व. संतोष कुमारी कपूर
संस्थापिका

सीताराम गुप्ता
अध्यक्ष

श्रीमती विजय बाला श्रीवास्तव
प्रधानाचार्या

महर्षि दयानन्द बालिका विद्यालय इण्टरमीडिएट कालेज, मीरजापुर

www.thearyasamaj.org

अन्याय का सामना करते हुए वह ऐतिहासिक निर्वाण

लेखक - प्रियवीर हेमाइना

सृष्टि के आदि से ही कोई भी युग भले लोगों से कभी भी रिक्त नहीं रहा है। इस वर्तमान युग (कलियुग) में भी उन्नीसवीं शताब्दी में ऐसे महान् पुरुष हमें मिले हैं जिनका हृदय स्वार्थ-शून्य और उदार तो रहा ही है, पर इसके साथ ही साथ मान-अपमान के जंजाल से भी मुक्त रहा है। ऐसे ही लोगों के द्वारा धार्मिक और नैतिक दोनों ही प्रकार की समस्याओं का समाधान शक्य है। ऐसे ही लोगों में स्वामी दयानन्द सरस्वती भी एक थे जिनका जीवनकाल १८२४ से १८८३ तक आयु-भर अनेकानेक संघर्षों में ही व्यतीत हुआ था।

बालब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज भारत के उन सन्तों में हैं जिन्होंने सत्य के प्रचार और प्रसार में अपना जीवन ही लगा दिया था। सत्य के मामले में इस महान् आत्मा ने कभी किसी से समझौता नहीं किया। सत्य की ही राह पर चलते हुए ऋषि दयानन्द ने अपनी प्रमुख पुस्तक का नाम भी 'सत्यार्थ प्रकाश' रखा। युक्ति-तर्क और प्रमाणों से पुष्ट सिद्धान्तों के आधार पर सत्यार्थ प्रकाश जब स्वामी जी लिख चुके तो उसके अन्त में पृथक से भी कुछ पृष्ठ उन्होंने जोड़े। इन पृष्ठों का नाम उन्होंने रखा 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' अर्थात् वह कुछ बातें जिन्हें वह मानते हैं अथवा जिन्हें नहीं मानते। इनमें मनुष्य की परिभाषा करते हुए स्वामी जी ने लिखा है- जो अन्याय को मिटाने में प्राणों तक की बाजी लगा दे मैं उसे ही मनुष्य कहता हूँ। मनुष्य की यह परिभाषा और किसी पर घटती हो या न घटती हो पर स्वामी जी पर तो पूरी ही घटती है। एक देशी रियासत (जोधपुर) में इसी तरह के अन्याय का सामना करते हुए उन्हें विष दिया गया और उसी में उनका निर्वाण भी तब हुआ जब १८८३ में कार्तिक कृष्णपक्ष की कालरात्रि में दीपावली की दीपपंक्तियाँ अजमेर में ही केवल नहीं, पूरे आर्यावर्त्त - देश में जगमगा रही थी। वह अन्याय क्या था उसे भी समझना यहाँ अतीव समीचीन रहेगा ही। राजस्थान के प्रवास में स्वामी दयानन्द उन दिनों जोधपुर ठहरे हुए थे। महाराजा जोधपुर (जसवन्तसिंह) के आग्रह पर राजमहलों में स्वामी जी के भाषण हो रहे थे। राजमहल की रानियाँ भी उनके प्रवचनों का लाभ उठा रही थी। उनके प्रवचन सुनकर महाराजा जसवन्तसिंह तो उनके शिष्य ही हो चुके थे। वे उनके दर्शनों के लिए प्रायः आते थे और स्वामी जी भी उनके राजभवन में निःसंकोच ही चले जाते थे। एक दिन स्वामी जी जब जोधपुर के महाराजा के राजभवन में गये तो वहाँ उनकी वह सिर चढ़ी वेश्या ''नन्हीं जान'' भी आयी हुई थी जिसका दरबार में बड़ा ही मान था। सभी उससे दबते भी थे। महाराजा ने उस समय उसे छिपाने की बड़ी कोशिश भी की किन्तु स्वामी जी की दृष्टि उस पर पड़ ही गई। स्वामी जी ने कोई भूमिका नहीं बनाई और न ही कोई प्रतीक्षा ही की। तत्काल ही उन्होंने महाराजा को फटकारते हुए कह दिया - ''राजन! आप महाराजा है। इतनी बड़ी प्रजा के पालक तथा रक्षक आप ही तो हैं। आपका धर्म प्रजा का धर्म बन जाता है। आपका अधर्म अथवा अन्याय प्रजा पर अधर्म अथवा अन्याय बन जाता है। आपकी सोच क्रियात्मक रूप धारण कर लेती है। आपके आचरण का दूसरों पर बड़ा प्रभाव भी पड़ता है। आपका आचरण बहुत अच्छा है तो सब ही अच्छा बनने की कोशिश करेंगे ही। आप अशोभनीय काम करेंगे तो दूसरे भला क्यों पीछे रहेंगे ?

''राजन ! राजा लोग तो सिंह - समान समझे जाते हैं और ये वेश्यायें (वारांगनायें) गली-गली घूमनेवाली कुत्तिया-समान हैं। इनके पीछे लगना या इन्हें अपने हृदय में या अपने राजभवन में स्थान देना आपके राजत्व-धर्म को तो भ्रष्ट कर ही रहा है, लोगों की दृष्टि में भी आप गिरते जा रहे हैं। यही वेश्यायें आपके पतन का भी कारण बनेंगी। आपका विनाश हो जाने पर आपकी ओर ये मुड़कर भी नहीं देखेंगी। राजन ! सिंह लोग कुत्तियों का पीछा कभी नहीं करते क्योंकि इससे मान मर्यादा में बट्टा लगता ही है। इसीलिए इस अशोभनीय कर्म को छोड़ देना चाहिए।'' महाराजा जसवन्तसिंह स्वामी जी के उपदेश को सुनकर बड़े लज्जित हुए ही पर साथ ही नन्हीं जान भी बहुत बिगड़ी और उसको पक्का विश्वास भी हो गया कि मेरे रंग में भंग करने वाले यदि कोई हैं तो यह साधु ही है। वह सभी प्रकार से स्वामी जी के प्राणों को लेने के लिए उतारू ही हो गई। इतना ही नहीं, उसके इस काम में वे भी सहायता देने के लिए तैयार हो गये, जो स्वामी जी के व्याख्यानों से चिढ़े बैठे थे। बहुत ही बड़ा अन्याय (अधर्म) रूपी महापाप का षड्यन्त्र रचकर उसी नन्हीं जान ने स्वामी जी के रसोइये जगन्नाथ को लोभ-लालच देकर जगन्नाथ के हाथों से ही स्वामी जी को दूध के साथ जहर दिलवाया। जगन्नाथ ने स्वामी जी सम्मुख अपना

अपराध स्वीकार भी कर लिया था, पर स्वामी ने तो उससे बस इतना ही कहा, ''जगन्नाथ, मेरे इस प्रकार मरने से मेरा वह काम अधूरा ही रह गया जो मुझे अभी संसार में रहकर करना था। आप नहीं जानते इससे लोकहित की कितनी बड़ी हानि हुई। इसके पश्चात् उन्होंने उसे कुछ रूपये भी दिए और वहाँ से नेपाल चले जाने का आदेश भी दिया। इस प्रकार स्वामी जी ने अपने मारने वाले को अपने ही पास से रूपये भी दिए और उसकी जान भी बचाई। यही थी स्वामी जी के प्रति किये गये उस अन्याय की बात और व्यावहारिकता के धरातल पर 'मनुष्य' की परिभाषा के साकार रूप की भी बात! सत्य का प्रचार करने में कठिनाइयाँ तो आनी स्वाभाविक ही हैं। जिनके स्वार्थो पर अथवा कमजोरियों पर चोट पड़ती है उनका तिलमिलाना भी स्वाभाविक है। पर यह ही वह समय होता है जब व्यक्ति के धैर्य और साहस की परीक्षा होती है।

सत्यार्थ प्रकाश के इन्हीं पृष्ठों में महर्षि भर्तृहरि के एक श्लोक का उदाहरण भी स्वामी जी ने दिया है। प्रतीत होता है यह श्लोक उन्हें बहुत ही पसन्द था -

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

राजनीति के पण्डित प्रशंसा करें चाहे निन्दा करें, सम्पत्ति रहे चाहे चली जाय और मृत्यु भी आज आती है या युगों बाद युगान्तर में आती है, इसकी परवाह किये बिना धैर्यवान् पुरुष कभी सत्य और न्याय का मार्ग नहीं छोड़ते।

सत्य और न्याय के मार्ग पर ही आयुभर चलनेवाले दयानन्द ने अपने सूर्यसम जीवन और निर्वाण दोनों से ही दुर्दशाग्रस्त भारतीय समाज में एक नूतन ही चेतना का संचार किया। स्वामी जी एक ऐसे पारस (स्पर्शमणि) थे जिनके सम्पर्क में जो भी आया था वह खरा सोना ही बनकर गया। स्वामी जी के सम्पर्क में आने मात्र से ही तो शराबी अमीचन्द हीरा ही बन गया था। उन्हीं के अमृतमय उपदेशों से सदा ही दुर्व्यसनों में आकण्ठ निमग्न रहने वाले मुंशीराम का जीवन श्रद्धामय बन गया था। इतना ही नहीं, स्वामी जी के अन्तिम क्षणों में जब वे मृत्युशैया पर लेटे हुए थे, उनके उस समय के अन्तिम दर्शनों से जिस समय वे गायत्री मंत्र के जप के बाद कह रहे थे- हे दयामय! हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर ! तेरी यही इच्छा है ! तेरी यही इच्छा है ! तेरी इच्छा पूर्ण हो, आहा !!! तैने अच्छी लीला की - उसी समय वह गुरुदत्त विद्यार्थी जो कभी ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास ही नहीं करता था, नास्तिक से सच्चा आस्तिक बन गया था। पं० गुरुदत्त ने ईश्वर के अनन्य भक्त दयानन्द को शान्तभाव से ज्यों ही मृत्यु का स्वागत करते देखा, जादू जैसा ही प्रभाव उस पर पड़ा और वह क्षण-मात्र में ही नास्तिक से सच्चा आस्तिक बन गया था।

३१८, विपिन गार्डन, उत्तम नगर,
नई दिल्ली-११००५६
मो० : ७५०३०७०६७४

जो मनुष्य नित्य प्रातः और सायं सन्ध्योपासना को नहीं करता, उसको शुद्र कुल में रख देना चाहिए।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

सरस्वती विद्यालय कन्या इण्टर कालेज, नरही, लखनऊ

प्रबन्धक

आर्य समाज सिविल लाइंस द्वारा संचालित एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. से सम्बद्ध इस विद्यालय की स्थापना कन्या शिक्षा के महान उद्देश्य की पूर्ति हेतु सन् 1918 में प्राथमिक स्तर पर हुई। कालान्तर में 1937 में जूनियर हाईस्कूल, 1956 में हाईस्कूल, 1962 में इण्टरमीडिएट की मान्यता प्राप्त कर नरही क्षेत्र का प्रतिष्ठित विद्यालय बना।

आज सरकार द्वारा मान्यता एवं वित्तीय सहायता प्राप्त इस इण्टर कालेज में 25 अध्यापिकाओं सहित कुल 32 लोगों का स्टाफ है। लगभग 500 छात्र-छात्रायें अध्ययनरत् हैं।

विद्यालय बालिकाओं को मूल्यों पर आधारित सुशिक्षा देने आत्मनिर्भरता एवं राष्ट्रभक्ति की भावना भरने में सतत् उद्यत रहता है। इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु वर्ष भर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

वर्ष 2015-16 का हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट का परिषदीय परीक्षा फल 100 प्रतिशत रहा।

सत्र 2016-17 का आरम्भ दिनांक 1.4.2016 से हुआ। अप्रैल-मई में अध्यापन कार्य प्रवेश आदि कार्य सम्पन्न हुये।

स्वतंत्रता दिवस पर देशभक्ति के कार्यक्रमों के साथ साथ लोक गीत, नृत्य आदि कार्यक्रम हुये जिसमें छात्र-छात्राओं एवं अध्यापिकाओं ने हर्ष एवं उल्लास के साथ प्रतिभाग किया।

शिक्षक दिवस परम्परागत् तरीके के अलावा नये प्रयोगों के साथ मनाया। हिन्दी पखवारे में प्रतिदिन प्रार्थना स्थल पर हिन्दी की स्तरीय रचनाओं का पठन-पाठन किया गया।

सितम्बर में गाईड एवं स्काउट के प्रवेश, प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय सोपान का प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ।

खेल में खो-खो, कबड्डी, कुश्ती में बच्चों ने जनपदीय एवं मंडलीय स्तर की प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग किया। कबड्डी में सीनियर वर्ग में कु. शशी, कु. सुमन एवं कु. काजल का चयन मण्डल के हुआ।

कुश्ती में विद्यालय को संयोजक बनाया गया। अभी कम लोकप्रियता के कारण केवल 5 विद्यालय ही प्रतिभाग करने आये। कु. सुमन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

प्रबन्ध समिति के नेतृत्व में विद्यालय में दो नवीन कक्षाओं का निर्माण कराया गया तथा जल्द ही कुछ और कक्षों का निर्माण कराये जाने का सफल प्रयासरत हैं।

अजय कुमार श्रीवास्तव
प्रबन्धक
मो. 9793006777

सरोज दुबे
प्रधानाचार्या
मो. 9235792189

www.thearyasamaj.org

सारे संसार को आर्य बनाना हमारा लक्ष्य

www.thearyasamaj.org

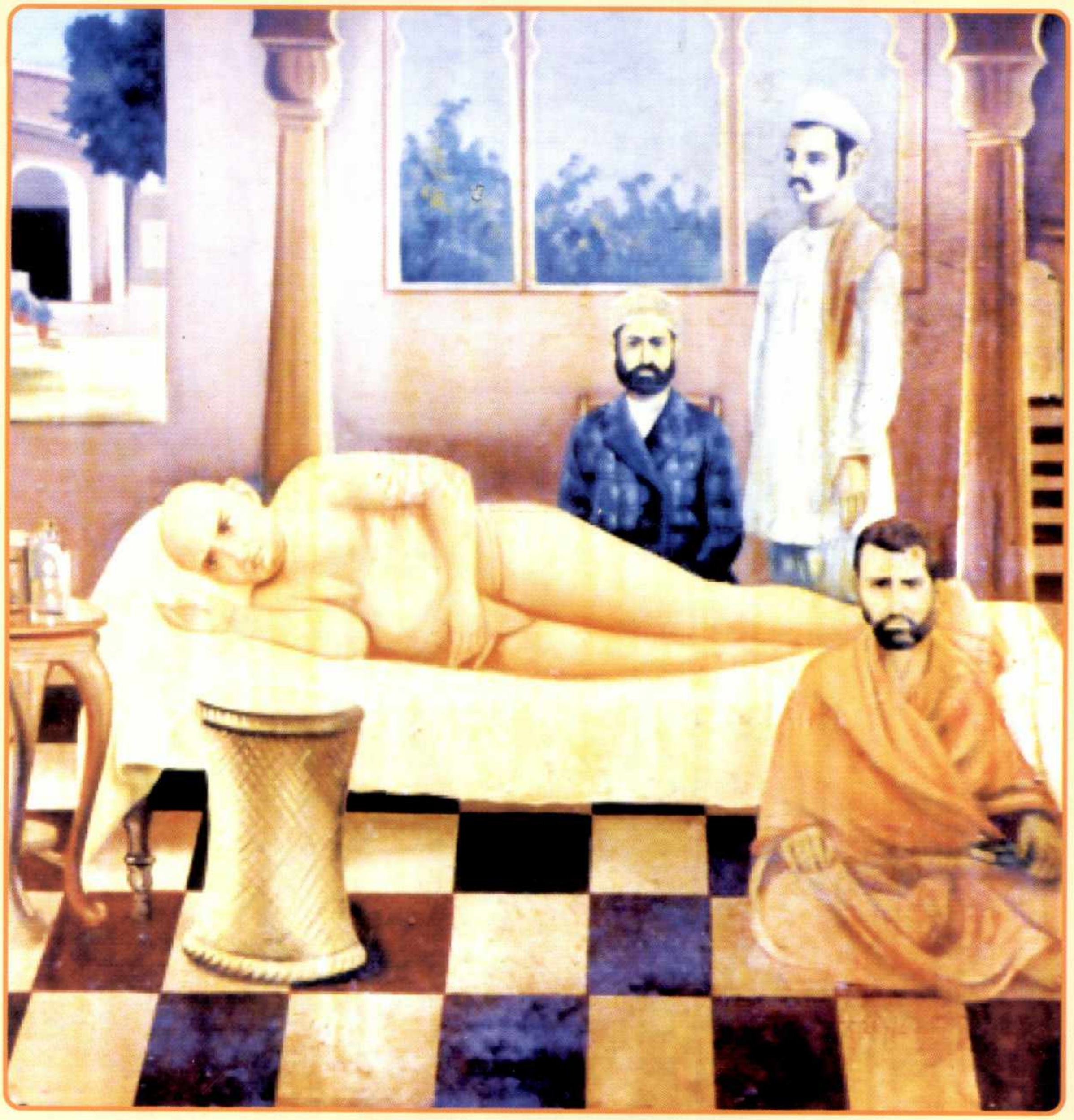

हमारा शरीर बहुत देर तक नहीं रहेगा
आप आजीवन हमारी पुस्तकों से सन्देश लेते रहना
जहाँ तक बन पड़े अपने भूले भटके
भाइयों को भी सन्मार्ग दिखलाते रहना

– महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

पंजीयन संख्या आर.एन.आई. – 2441/57
पंजीयन संख्या जी.पी.ओ./एल.डब्लू./एन.पी. 14/2016–18 रजिस्टर्ड
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूर./फैक्स : ०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२,

प्रज्ञाचक्षु गुरूवर विरजानन्द सरस्वती
एवं उनके अद्भुत शिष्य
महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

एक प्रति ₹ 50/-

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।